www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अद्भुत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 22 ■ 16-30 सितंबर, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❒ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❒ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❒ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

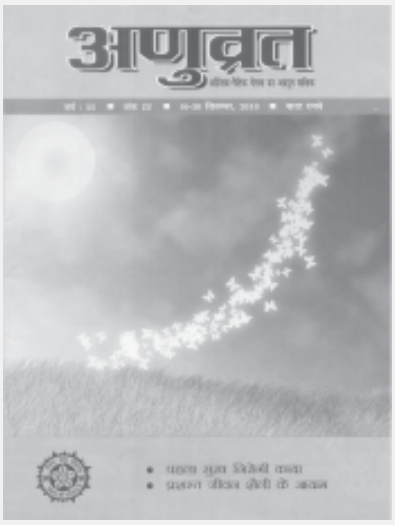

◆ पहला सुख निरोगी काया	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
◆ प्रशस्त जीवन शैली के आयाम	*आचार्य महाश्रमण*	7
◆ बनाएं सुखी घर-परिवार, बनेगा सुंदर यह संसार	*साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा*	9
◆ मौन का महत्व	*सीताराम गुप्ता*	11
◆ भारतीय महिलाएं	*प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा*	12
◆ नेता पर फेंका जूता	*जसविंदर शर्मा*	15
◆ राजनीतिक नैतिकता का सच	*सुषमा जैन*	16
◆ हे महाप्रज्ञ! शत-शत वंदन	*डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा*	18
◆ भीख मांगने के लिए ट्रेनिंग स्कूल	*स्वामी वाहिद काज़मी*	19
◆ राष्ट्रचिंतन से परे राजनीति	*आशीष वशिष्ठ*	20
◆ नैतिकता को बनाएं प्रतिरोधक शक्ति	*हुकमचंद सोगानी*	23
◆ इंदिराजी का अंतिम कार्यक्रम	*मुनि राकेशकुमार*	24
◆ बढ़ती आयु बुढ़ापा	*शिवचरण मंत्री*	27
◆ आत्मज्ञान और अहिंसक समाज	*डॉ. सरोजकुमार वर्मा*	28
◆ श्वास रोग और प्रेक्षा चिकित्सा : 5:	*मुनि किशनलाल*	31

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	6
◆ प्रेरणा	8
◆ झाँकी है हिन्दुस्तान की	17
◆ अणुव्रत अधिवेशन	25
◆ अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह	32
◆ अणुव्रत आंदोलन	33-39
◆ कृति	40

www.terapanthinfo.com

शताब्दी वर्ष के मायने : 5 :

मानवीय नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा को समर्पित अणुव्रत आंदोलन के छः दशक पूर्ण हो चले हैं। आंदोलन की प्राणवत्ता को बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि सातवें दशक की प्रारंभिक वेला तथा आचार्य तुलसी शताब्दी वर्ष में नवीन तकनीक एवं नये आयामों का समावेश करते हुए हम आगे कदम बढ़ायें। पहली मार्च 1949 को अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का शंखनाद कर तत्कालीन सामाजिक–राजनैतिक–शैक्षिक परिस्थितियों पर चोट की। जिस समय अणुव्रत का काम प्रारंभ हुआ। कार्यकर्ताओं के पास गुरु के प्रति श्रद्धाभाव के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। न तो पर्याप्त कार्यकर्ता थे, न आर्थिक संसाधन, न परिचय और न ही अनुकूल सामाजिक वातावरण। अणुव्रत के आधार स्तंभ रहे हमारे पूर्वजों के समर्पण भाव ने उन्हें कुछ करने को प्रेरित किया और वे अपने श्रद्धाबल के सहारे बहुत कुछ कर गये।

प्रारंभ में अणुव्रती पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के बीच कोई भेदरेखा नहीं थी। सभी एक–दूसरे के सुख–दुःख में सहभागी थे, प्रदर्शन और आडम्बर से कोसों दूर रह, स्वास्थ्य–परिवार और अर्थ की चिंता किये बिना ये लोग गुरु के इंगित को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़े थे। आज परिस्थितियां बदल चुकी हैं। कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों की बढ़ती महत्त्वाकांक्षाओं ने स्वस्थ समाज निर्माण के आंदोलन की गति को मंद कर दिया है। फलस्वरूप इस दिशा में हमारा सार्वजनिक जीवन भी धीरे–धीरे व्यावसायिक स्वरूप लेता जा रहा है। इससे सेवा–भावना आहत हुई है, अधिकारियों और कार्यकर्ताओं के बीच में विभाजन रेखा बनी है, अहं एवं अर्थ हावी हुआ है तथा जीवनदानी कार्यकर्ताओं का स्थान वेतनभोगी कार्यकर्ताओं ने लिया है। सार्वजनिक जीवन के इस प्रदूषित वातावरण ने कार्यकर्ताओं की कार्यक्षमता पर भी विराम लगा दिया है।

समाज एवं राष्ट्र की वर्तमान विषम परिस्थितियां हमारा आह्वान कर रही हैं कि अणुव्रत आंदोलन से जुड़े व्यक्ति पुनः सेवा–भावना के साथ स्वस्थ समाज निर्माण का संकल्प लें और अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के दिशा–निर्देश में स्वयं को गुरु चरणों में समर्पित करें। **आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में–अणुव्रत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। सत्य त्रैकालिक होता है, सामयिक नहीं होता। नैतिकता, चरित्र भी त्रैकालिक है। अणुव्रत ऐसा तत्त्व है जिसको व्यापक होने की बहुत आवश्यकता है। अणुव्रत के व्यापक होने का अर्थ है–राष्ट्र का उत्थान।**

आज भी देश की परिस्थितियां विषम हैं। बढ़ते भोगवाद, अर्थ की उद्दाम लालसा एवं आडम्बर ने स्वस्थ समाज संरचना के स्वप्न को चकनाचूर कर दिया है। परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार, हिंसा, असत्य का बोलबाला चहुँओर है और सदाचार, अहिंसा, सत्य हाशिये पर धकेल दिये गये हैं। इन विषम परिस्थितियों में अणुव्रत आंदोलन की ज्यादा आवश्यकता एवं उपयोगिता है। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान, भ्रष्टाचार मुक्ति अभियान, पानी–बिजली–पर्यावरण–पृथ्वी बचाओ अभियान में सार्वजनिक संस्थाओं एवं अणुव्रत समितियों–कार्यकर्ताओं का जो सहयोग मिला, जो उत्साह दिखाई दिया उसे निरंतरता एवं स्थायित्व में बदलना आवश्यक है। कई स्वयंसेवी संगठन हमारे अहिंसा एवं नैतिकतामूलक स्वर को एक आंदोलन के रूप में संचालित करने और सहयोग देने को तत्पर हुए हैं। यह शुभ संकेत है कि वर्तमान स्थितियों में सार्वजनिक संस्थाओं, अणुव्रती संस्थाओं तथा तेरापंथी संस्थाओं के सहयोग एवं संयुक्त भागीदारिता से इन ज्वलंत बिन्दुओं पर देश में सशक्त वातावरण का निर्माण किया जा सकता है। इस दिशा में हमारी कितनी तैयारी है यही मूलभूत प्रश्न हैं? अणुव्रत आंदोलन के सातवें दशक में अणुव्रत का आंदोलनात्मक स्वरूप पुनः निखरे यही आचार्य तुलसी शताब्दी वर्ष की प्रतिध्वनि है। क्या हम इसे सुनेंगे!

● **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com

हृदय को समझा, शरीर को गलत आदतें मत दो, शरीर के अवयवों को गलत आदतें मत दो। यह निरोगी काया की उपलब्धि के लिए अनिवार्य है। यदि तुमने गलत आदतें डाल ली तो न शरीर स्वस्थ रहेगा, न मन स्वस्थ रहेगा और न धर्म की साधना हो सकेगी। साधना, स्वास्थ्य और प्रसन्नता का रहस्य-सूत्र है शरीर का संयम करो, उसे अच्छा अभ्यास और संस्कार दो। इस सचाई का निरंतर अनुशीलन और प्रयोग करो, पहला सुख निरोगी काया केवल वाचिक ही नहीं रहेगा, अनुभूति के स्तर पर उतर आएगा।

पहला सुख निरोगी काया

आचार्य महाप्रज्ञ

हम शरीर की चिंता क्यों करते हैं? शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जागरूक क्यों रहते हैं? इस प्रश्न पर वर्तमान चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं, हजारों वर्ष पूर्व आगम और आयुर्वेद में भी विचार किया गया। धर्म का साधन क्या है? धर्म है हमारी आत्मा की पवित्रता। धर्माचरण का साधन क्या है? वह है शरीर। पापाचरण और धर्माचरण दोनों का साधन है शरीर। हम गहराई में जाएं तो निष्कर्ष आएगा धर्म का साधन शरीर के सिवाय कोई दूसरा नहीं है। मन, वचन और शरीर ये तीन योग माने गए हैं। भगवान महावीर के समय एक मान्यता यह थी एक दण्ड है मन। मन ही सब कुछ है। मन पवित्र नहीं है तो धर्म नहीं है। शरीर का खास महत्व नहीं है। भगवान महावीर ने इस विचार को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि दण्ड के तीन प्रकार हैं मनोदण्ड, वचन-दण्ड और काय-दण्ड। आदमी मन से पाप करता है किन्तु शरीर का योग न मिले तो पाप जितना हो सकता है, उतना नहीं होता। मन में आया मैं अमुक को मार डालूं। शरीर में सामर्थ्य नहीं है अथवा शरीर का योग नहीं मिला तो वह मार नहीं पाएगा। मन की बात मन में रह जाएगी।

शरीर का महत्व कम नहीं है। बहुत सारे काम शरीर के द्वारा होते हैं। नशा करने की आदत पड़ गई। मन चाहता है नशा छोड़ दूं किन्तु व्यक्ति छोड़ नहीं पाता। क्या शरीर कारण नहीं है? व्यक्ति तंबाकू पीता है, सिगरेट पीता है। कुछ लोग तो इनके ऐसे आदी होते हैं कि दिन भर सिगरेट और तंबाकू पीते रहते हैं। तीन युवकों ने एक युवक की ओर इशारा करते हुए कहा महाराज! इसे सिगरेट न पीने का संकल्प करवा दीजिए। मैंने युवक से पूछा भाई! कितनी सिगरेट पीते हो। युवक सकुचाते हुए बोला महाराज! तीन पैकट पीता हूँ। एक पैकेट में दस-बारह सिगरेट होती हैं। ऐसा लगता है, जैसे सारे दिन यही कार्य है सिगरेट पीता रहे और धुंआ निकालता रहे। पान-पराग खाने वाले एक दिन में कितना पान-पराग खा जाते हैं। एक दिन में कितना जहर पेट में चला जाता है। जब यह पता चलता है पान-पराग, जर्दा और तंबाकू कैंसर, हार्ट अटैक आदि भयंकर बीमारियों के कारण बनते हैं तब मन में आता है इन सबको छोड़ दें। मनुष्य छोड़ना चाहते हुए भी नहीं छोड़ पाता। इसका कारण क्या है? यदि मन को ही सब कुछ मानें तो एक दिन में छूट जाए लेकिन ऐसा होता नहीं है। इसका कारण शरीर है, शरीर के स्नायु हैं। जो आदत स्नायुगत हो जाती है उसे छोड़ना बड़ा कठिन होता है। जोधपुर के पास अफीम छुड़ाने का एक आंदोलन चलता है। उस क्षेत्र में अफीम-सेवन का प्रचलन बहुत है। कुछ लोग प्रेरित होकर अफीम छोड़ने के लिए आते हैं। जिस समय छोड़ते हैं, उस समय ऐसी भयंकर स्थिति बन जाती है कि पागल जैसे हो जाते हैं। अफीम छोड़ते समय जो लक्षण पैदा होते हैं, उस समय चिकित्सक को संभालना पड़ता है, अन्यथा बहुत मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। व्यक्ति क्यों नहीं छोड़ पाता? ऐसे लक्षण क्यों प्रकट होते हैं? कारण स्पष्ट है जो आदत स्नायुगत बन जाती है, उसे छोड़ना बहुत कष्टप्रद प्रतीत होता है।

स्वाभाविक अभ्यास

हम शरीर के स्नायुओं को जैसी आदत देते हैं, वे वैसा ही कार्य करने लग जाते हैं। हम स्थूल उदाहरण लें। एक व्यक्ति तीसरी मंजिल पर रहता है। वह प्रतिदिन चढ़ता है, उतरता है। वह कभी चढ़ते हुए ध्यान नहीं देता, देख-देखकर नहीं चढ़ता। सहजता से सोपान पंक्ति को लांघ जाता है। पैर के स्नायुओं का ऐसा अभ्यास होता है कि आंख मूंदकर भी सीढ़ियां चढ़ जाता है। यदि कोई नया व्यक्ति आएगा तो उसे देख-देखकर चलना पड़ेगा, सावधानी और जागरूकता के साथ चढ़ना पड़ेगा। जो व्यक्ति उन सीढ़ियों से अनेक बार चढ़ जाता है, उसके लिए चढ़ना स्वाभाविक बन जाता है। इसका कारण है स्नायविक अभ्यास। पैर के

www.terapanthinfo.com

स्नायुओं को अभ्यास हो गया तो आंख मूंदकर चलना होगा। स्नायुओं को जैसा अभ्यास हो गया, वह कार्य अपने आप होने लग जाता है। हमारा शरीर एक बात को पकड़ता है, उसका अभ्यास हो जाता है, फिर उस कार्य को करने में कठिनाई होती। कालसौकरिक की घटना बहुत विश्रुत है। वह प्रतिदिन पांच सौ भैंसे मारता था। एक दिन उसे भैंसा नहीं मिला। वह मिट्टी के भैंसे बना-बनाकर मारने लगा। स्नायु के अभ्यास के कारण ऐसा होता है।

केवल मन को सब कुछ मत मानो

यह बहुत सुंदर सिद्धांत है केवल मन को ही सब कुछ मानकर मत चलो। मन, वाणी और शरीर तीनों का अपना स्वतंत्र कार्य है। जिस व्यक्ति को गाली देने की आदत पड़ गई, वह सोचेगा नहीं। जैसे ही सामने कुछ स्थिति आएगी, गाली निकल जाएगी। फिर भले ही उसे पश्चाताप करना पड़े। एक व्यक्ति क्रोध करना नहीं चाहता, किसी पर हाथ उठाना नहीं चाहता है किन्तु छोड़ नहीं पाता। जैसे ही सामने अप्रिय प्रसंग घटित होता है, हाथ उठ जाता है, दो-चार थप्पड़ जड़ देता है। उस समय उसे बोध ही नहीं रहता कि मैं क्या कर रहा हूँ। यदि मन का ही कार्य होता तो ऐसा नहीं होता। हमारे तीनों योग स्वतंत्र हैं। अध्यवसाय योग का प्रवर्तन करते हैं। मन को चलाने वाला अध्यवसाय तीनों अध्यवसाय स्वतंत्र हैं। एक जैन मुनि के लिए विधान है कि वह हरियाली को छूते हुए व्यक्ति से भिक्षा नहीं ले सकता। यदि वही व्यक्ति मन ही मन आक्रूष्ट है, कुछ कटु-वाक्य कह भी देता है फिर भी मुनि भिक्षा ले सकता है। कारण स्पष्ट है शरीर, वाणी और मन तीनों योग स्वतंत्र हैं, तीनों को चलाने वाले तीन अध्यवसाय हैं।

मन का बहुत महत्व है, उसका अपना स्थान है, पर वह सब कुछ नहीं है। शरीर का भी अपना मूल्य है। उसे जो अभ्यास हो गया, उसे मन बदल नहीं पाता। हम अनेक बार यह स्वयं अनुभव करते हैं। एक व्यक्ति चश्मा लगाता है दूर की वस्तुओं को देखने के लिए। जब उसे पढ़ना होता है, चश्मा उतार देता है। अनेक बार ऐसा होता है कि चश्मा उतारा हुआ है, फिर भी हाथ चश्मा उतारने के लिए आंख पर चला जाता है। जब भी पढ़ना होता है, हाथ चश्मा उतारने की क्रिया में जुट जाता है, भले ही आंख पर चश्मा लगा हुआ न हो। हमने हाथ को जो अभ्यास दे दिया, वह उस क्रिया के संचालन में लग जाएगा। शरीर का अपना अभ्यास होता है, हाथ और पैरों का अपना अभ्यास होता है। उसे जो अभ्यास दे दिया, वह चलता रहेगा इसीलिए दशैवकालिक सूत्र में कहा गया हत्थ संजए पाय संजए, वाय संजए संजए इंदिए हाथ का संयम करो, पैर का संयम करो, वाणी का संयम करो, इंद्रिय का संयम करो।

हाथ और पैर का संयम

यह बहुत मार्मिक सूत्र है हाथ को ऐसा अभ्यास मत दो कि तुम्हारा हाथ गलत काम करने लग जाए। हाथों के अपने संस्कार हैं। उसे गलत संस्कार मत दो। किसी के तिरस्कार करने के लिए अंगुली मत हिलाओ, किसी की अवज्ञा मत करो, उपहास मत करो। किसी के लिए मुट्ठी मत तानो। हाथ को यह गलत अभ्यास मत दो। हाथों को अच्छा अभ्यास दो। हाथों को ऐसा अभ्यास दो, जिससे विनम्रता का भाव बढ़े, सौहार्द का भाव बढ़े। कुछ लोग हाथों को अच्छा अभ्यास देते हैं, दूसरे के सामने आते ही हाथ अभिवादन में स्वतः जुड़ जाते हैं। एक अच्छा शिष्य अपने हाथों को ऐसा ही अभ्यास देता है। जहाँ गुरु विराजमान होते हैं, सामने दिखाई देते ही उसके हाथ स्वतः जुड़ जाते हैं। उसके मन में यह विकल्प ही नहीं उठता कि मैं हाथ जोड़ूं या न जोड़ूं। जैसे ही आदरास्पद व्यक्ति सामने आता है, अभिवादन की मुद्रा बन जाती है। जो हाथ का संयम कर लेते हैं, उसे अच्छा संस्कार अथवा अभ्यास देते हैं, उनका हाथ कभी गलत अभ्यास में नहीं जाता, हाथों में कोई गलत प्रवृत्ति नहीं हो सकती। मन के चाहने पर भी हाथ द्वारा गलत काम नहीं होता।

दूसरा निर्देश है पैरों का संयम करो। पैर का भी बहुत असंयम होता है। लात मारने की बात पैर से होती है। पैर से और भी कुछ गलत प्रवृत्तियां हो सकती हैं, इसलिए पैर का संयम करो, उसे गलत अभ्यास मत दो। उसे अच्छा अभ्यास दो, संयमपूर्वक याचना पूर्वक चलने का अभ्यास दो।

वाणी का संयम

तीसरा निर्देश है वाणी का संयम करो। वाणी को भी गलत अभ्यास मत दो। एक भी बुरा शब्द न निकले, ऐसा अभ्यास करो। जहाँ वाणी में शालीनता और शिष्टता होती है वहाँ एक शब्द भी गलत नहीं निकल सकता। यही वाणी का सम्यक् प्रयोग है। ऐसे लोगों को भी देखा है, जो रेकारा अथवा तुंकारा दिए बिना बोलते नहीं है, गाली अथवा अपशब्द के बिना बोलते ही नहीं है। मूर्ख, बेवकूफ इन शब्दों का प्रयोग तो उनके लिए दाल-रोटी

शरीर का अपना अभ्यास होता है, हाथ और पैरों का अपना अभ्यास होता है। उसे जो अभ्यास दे दिया, वह चलता रहेगा इसीलिए दशैवकालिक सूत्र में कहा गया हत्थ संजए पाय संजए, वाय संजए संजए इंदिए हाथ का संयम करो, पैर का संयम करो, वाणी का संयम करो, इंद्रिय का संयम करो।

www.terapanthinfo.com

जैसा होता है। वे कभी-कभी इस सीमा को लांघ जाते हैं। एक बार मैंने एक व्यक्ति से कहा तुम्हारी भाषा में जितने अपशब्द हैं उनका पूरा कोश बन सकता है। यह वाणी का असंयम, वाणी का गलत प्रयोग बड़ी जटिलताएं पैदा कर देता है।

चौथा निर्देश है इन्द्रियों का संयम करो। यह स्वस्थ रहने का महत्वपूर्ण सूत्र है। जितना इन्द्रियों का संयम उतना स्वास्थ्य। जितना इन्द्रियों का असंयम उतना अस्वास्थ्य। इन्द्रिय संयम के साथ शरीर के स्वास्थ्य का गहरा संबंध है।

गलत अभ्यास मत दो

शरीर के स्वास्थ्य का सूत्र है शरीर के अवयवों को अच्छा अभ्यास और संस्कार दें। शरीर को दिया हुआ गलत अभ्यास बहुत खतरनाक होता है। कुछ लोगों को लिखने का अभ्यास हो जाता है। केवल कागज पर लिखा जाए एवं सार्थक सृजन किया जाए, यह अच्छा अभ्यास है। गलत अभ्यास है, जहाँ भी बैठेंगे, लिखते रहेंगे, सामने कोई कागज और पेन नहीं है फिर भी जमीन को कुरेदते रहेंगे। यह स्वास्थ्य का लक्षण नहीं है। शरीर के स्वस्थ होने का मतलब है शरीर को गलत अभ्यास मत दो। जो लोग नशा करते हैं, जीभ को गलत अभ्यास देते हैं। उनमें एक अंतर्द्वंद्व रहता है। मन कहता है शराब पीना अच्छा नहीं है, स्वास्थ्य के लिए खराब है। किन्तु जीभ और स्नायुओं को ऐसा अभ्यास दे दिया कि रहा भी नहीं कहा 'कैसे आदमी हो? न कमाई करते हो, न बच्चें की पढ़ाई की व्यवस्था करते हो। केवल शराब ही शराब में डूबे रहते हो। यह क्या जीवन है तुम्हारा?' पत्नी के कथन का कुछ असर हुआ। पति बोला 'तुम ठीक कह रही हो। मैं आज से शराब नहीं पीऊंगा, बिल्कुल नहीं पीऊंगा।' पति ने संकल्प कर लिया पर पत्नी को विश्वास नहीं हुआ। संध्या का समय। आंतें टूटने लगी। स्नायविक मांग प्रबल बन गई। कहा जाता है पहले आदमी शराब को पीता है, फिर शराब आदमी को पीने लग जाती है। संकल्प धरा रह गया। शराब पी ली। उसने सोचा आज इतनी सावधानी से जाऊंगा कि पत्नी को कुछ पता ही नहीं चलेगा। उसने घर की ओर कदम बढाए। नशा चढ़ने लगा। पैर डगमगाने लगे। जैसे-तैसे घर के द्वार पहुँचा। पत्नी ने देखा पतिदेव आज भी शराब पीकर आए हैं। संकल्प टूट गया है। पति महाशय सीधे भीतर कक्ष में आए और पढ़ने लगे। पत्नी ने कहा 'आज फिर पीकर आए हो? अब क्या कर रहे हो?' पति बोला 'पुस्तक पढ़ रहा हूँ।' पत्नी बोली 'यह पुस्तक कहाँ है। आप तो अटैची खोलकर बैठे हैं।'

जब व्यक्ति शराब के नशे में धुत हो जाता है तब अटैची को पुस्तक समझ कर पढ़ने बैठ जाता है। यह उसकी विवशता है। एक नशेड़ी, नशाखोर विवश बन जाता है। वह मन की नहीं, स्नायविक विवशता है।

कब होगी निरोगी काया?

कहा जाता है पहला सुख निरोगी काया। निरोगी काया कब होगी? शरीर स्वस्थ कैसे रहेगा? जब तक स्नायु बिल्कुल ठीक काम कर रहे हैं, शरीर स्वस्थ रहेगा। यदि हमने स्नायुओं को गलत आदत दे दी तो शरीर स्वस्थ नहीं रह पाएगा। केवल मन ही आदमी को नहीं सताता, स्नायविक आदतें भी बहुत सताती हैं। भगवान् महावीर ने शरीर संयम की जो बात कही,

www.terapanthinfo.com

उसमें बहुत गहराई है। महावीर ने कहा संयम के तीन प्रकार हैं मन का संयम, वाणी का संयम और शरीर का संयम। मन का नहीं, शरीर का भी संयम करो। शरीर का संयम होगा तो धीरे-धीरे वाणी और मन का ही संयम भी होने लग जाएगा। यह बात विपरीत लगते हुए भी सच है। यह कहा जाता है मन का निग्रह करो, मन को वश में करो, सब कुछ वश में हो जाएगा। मन को जीतो, सब कुछ जीत लिया जाएगा। जैन दर्शन की जो सूक्ष्मता है, उसमें यह बात नहीं है। वहाँ कहा गया सबसे पहले शरीर का संयम करो, फिर मन का संयम करो। शरीर का असंयम है तो मन का संयम सध नहीं पाएगा। शरीर का संयम सधेगा, काय गुप्ति होगी तो मन और वाणी का संयम सध जाएगा।

गहरा सूत्र

पहला सुख निरोगी काया इस पद के गहन अर्थ को समझें। निरोगी काया सुख है पर काया निरोग कब रह सकती है? एक परिभाषा बनाई जा सकती है जो व्यक्ति अपने शरीर के स्नायुओं को गलत आदतें नहीं देता, उसका शरीर निरोग रह सकता है। जो व्यक्ति शरीर के स्नायुओं को गलत आदते एवं अभ्यास देता है, उसका शरीर निरोग नहीं रह सकता। हम इसके प्रति जागरूक रहें, स्नायुओं को गलत आदत न दें। निरोगी काया पहला सुख है पर वह तभी संभव है जब हम उसके प्रति प्रारंभ से जागरूक बने रहें। माता-पिता जागरूक नहीं रहते हैं तो बच्चों में गलत आदतें पड़ जाती हैं। कुछ ऐसी आदतें सामने आ रही हैं, जिन्हें कहने में भी संकोच होता है। जितने अप्राकृतिक कार्य हैं, उनसे भयंकर बीमारियां फैल रही हैं। एड्स को कैंसर से भी अधिक भयावह बीमारी माना जा रहा है और वह हिन्दुस्तान में फैल चुकी है। एड्स छूत की बीमारी है। एड्स रोगी के पास डॉक्टर भी जाना पसंद नहीं करता। एड्स के विषाणु शरीर में संक्रमित होने के बाद शरीर सूखने लगता है, शक्ति चुकने लगती है। वह असमय में ही मौत को आमंत्रित कर लेता है। यह होता है अप्राकृतिक आचरणों के द्वारा, शरीर की गलत आदतों के द्वारा। इस प्रकार न जाने कितनी बीमारियां शरीर की गलत आदतों के कारण होती हैं। इस सारे संदर्भ में पहला सुख निरोगी काया बहुत गहरा सूत्र है। इसके हृदय को समझा, शरीर को गलत आदतें मत दो, शरीर के अवयवों को गलत आदतें मत दो। यह निरोगी काया की उपलब्धि के लिए अनिवार्य है। यदि तुमने गलत आदतें डाल ली तो न शरीर स्वस्थ रहेगा, न मन स्वस्थ रहेगा और न धर्म की साधना हो सकेगी। साधना, स्वास्थ्य और प्रसन्नता का रहस्य-सूत्र है शरीर का संयम करो, उसे अच्छा अभ्यास और संस्कार दो। इस सचाई का निरंतर अनुशीलन और प्रयोग करो, पहला सुख निरोगी काया केवल वाचिक ही नहीं रहेगा, अनुभूति के स्तर पर उतर आएगा।

राष्ट्र चिन्तन

◆ मुझे लगता है कि जो उपेक्षित हैं, जिन्हें कोई प्यार नहीं करता, जिनकी कोई देखभाल नहीं करता और जिन्हें हर कोई भुला देता है, वे उन लोगों की तुलना में ज्यादा गरीब होते हैं जिनके पास खाने को कुछ नहीं होता।

मदर टेरेसा ने गरीबों की भूख और प्यास की स्थितियों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि अक्सर शरीर की भूख से कहीं बड़ी समस्या अकेलापन होती है।

हमें मदर टेरेसा जन्म शताब्दी समारोह के मौके पर मदर टेरेसा के जीवन से सीख लेनी चाहिए। मदर टेरेसा दिल से एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं।

प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, राष्ट्रपति

◆ देश में अमीरों और गरीबों के बीच बढ़ती खाई के चलते समाज में असंतुलन बढ़ रहा है। देश में व्यवस्था बनाए रखना बीते कई वर्षों में काफी जटिल हो गया है। सामाजिक तनाव, धार्मिक विवाद, बढ़ती आर्थिक और क्षेत्रीय असमानता, भाषाई और जातीय मतभेद जैसे विषय देश में प्रभावी व्यवस्था बनाए रखने में सबसे बड़ी चुनौती रहे हैं। राज्यों तथा सीमापार तक अस्थिरता को बढ़ावा देने वाले तत्वों और अपराधिक गुटों के बीच बढ़ते संबंध के कारण व्यापक निगरानी और पहले के विपरीत अब सुरक्षा एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय की जरूरत आ गई है।

जम्मू-कश्मीर में हिंसक प्रदर्शनों में उग्र भीड़ को नियंत्रित करने के लिए ऐसे तरीके अपनाने होंगे जिससे जनहानि नहीं हो। हमें यह समझना होगा कि हर तरह की उग्र भीड़ से एक ही दृष्टिकोण और तरीके से नहीं निपटा जा सकता।

नक्सली हमारे अपने हैं। हम चाहते हैं कि वे पहले हथियार छोड़ें और बातचीत के लिए आगे आएं। नक्सलवाद से निपटने के मौजूदा कदम अपर्याप्त हैं, इसके लिए अधिकारियों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

डॉ. मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री

www.terapanthinfo.com

आदमी अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखे और कुछ समय अध्यात्म चेतना के लिए भी लगाए तो शान्तिमय जीवन जी सकता है। आदमी में ईमानदारी के प्रति निष्ठा जाग जाए, संवेगों पर निमंत्र करना सीख ले, संयम का भाव पुष्ट हो जाए और समय-नियोजन करना सीख ले तो जीवन शैली विशिष्ट/ प्रशस्त बन सकती है और शान्तिमय, सुखमय जीवन जी सकता है।

प्रशस्त जीवन शैली के आयाम

आचार्य महाश्रमण

दुनिया के सभी प्राणी जीना चाहते हैं। मरना कोई नहीं चाहता। कभी-कभी विवशतावश या परिस्थितिवश उन्हें मृत्यु का वरण करना पड़ता है, किन्तु सामान्यतया व्यक्ति जीना चाहता है। वह मात्र जीना ही नहीं चाहता, सुखी भी रहना चाहता है।

एक सुख वह होता है जो बाहर के निमित्तों से मिलता है, जैसे गर्मी के समय पंखा, कूलर आदि सुविधाओं के योग से मिलने वाला सुख। एक सुख आदमी के भीतर के साथ जुड़ा हुआ होता है, जिसे मानसिक, भावात्मक या आत्मिक-सुख भी कहा जा सकता है। बाहर से सब सुविधाएं मिलने पर भी कई बार आदमी भीतर से दुःखी रहता है। बाहर से सुविधा मिलना एक बात है और भीतर की शान्ति मिलना दूसरी बात है। आदमी की जीवनशैली अच्छी हो तो वह सुखी जीवन जी सकता है।

मनुष्य एक उच्च कोटि का आदमी है इसलिए उसकी जीवनशैली भी विशिष्ट होनी चाहिए। विशिष्ट जीवनशैली के लिए मैं यदा-कदा चार सूत्र बताया करता हूँ।

पहला सूत्र है ईमानदारी के प्रति निष्ठा। आदमी के मन में नैतिक मूल्यों के प्रति, सच्चाई के प्रति, प्रामाणिकता के प्रति निष्ठा जाग जाए। उसमें यह आस्था जाग जाए कि कुछ कठिनाई आएगी तो उसे झेलेंगे, किन्तु ईमानदारी को बनाए रखेंगे। ईमानदारी की दो बाधाएं हैं असत्य ओर चौर्य। जहाँ असत्य और चौर्य है, वहाँ बेईमानी है। आदमी मृषावाद और चोरी की वृत्ति से बचने का प्रयास करे। कभी-कभी आदमी धोखा देने का भी प्रयास करता है। और तो क्या, देवी-देवताओं को भी धोखा दे देता है। एक आदमी के सामने भयंकर विपत्ति आ गई। उसने अपने इष्ट को याद किया और प्रार्थना की हे प्रभो! मुझे इस विपत्ति से बचा लो। मैं आपको प्रसाद चढ़ा दूंगा। संयोग की बात, वह विपत्ति से बच गया। उसने एक किलो खजूर खरीदे और अपने इष्टदेव के मंदिर में गया। उसने सोचा कि ऊपर की चीज को क्या चढ़ाना है, भीतरी भाग चढ़ाना चाहिए। इसलिए खजूर की गुठलियां तो चढ़ा दीं और ऊपर का भाग स्वयं खा गया। कुछ समय बीता, फिर विपत्ति आ गई। फिर उसने अपने इष्टदेव को याद किया और बचाने की प्रार्थना की। आस्था या संकल्प का ही प्रभाव समझना चाहिए, वह फिर बच गया। इस बार उसने एक किलो केले खरीदे और प्रसाद चढ़ाने मंदिर गया। उसने सोचा, पिछली बार भीतरी भाग चढ़ाया था, इस बार ऊपर का भाग चढ़ा देता हूँ। उसने छिलके चढ़ा दिए और केले स्वयं खा गया। इस प्रकार आदमी भगवान को भी धोखा दे देता है। अगर शान्तिमय जीवन जीना है तो धोखा, बेईमानी को छोड़ना होगा और ऋजुता व सरलता को स्वीकार करना होगा। सरलता और ईमानदारी, दोनों एक ही बात हैं। सरलता नहीं है तो फिर ईमानदारी का रहना भी संभव नहीं होगा। इसलिए ऋजुता और प्रामाणिकता, दोनों में अभिन्नता अथवा परम नैकट्य माना गया है। ईमानदारी शुद्ध, निर्मल और शान्तिमय जीवन का पहला और प्रमुख सूत्र है।

दूसरा सूत्र है संवेग संतुलन; आक्रोश संयम। आदमी को यदा-कदा, चाहे-अनचाहे गुस्सा आ जाता है, परन्तु उसमें इतनी क्षमता का विकास तो होना चाहिए कि प्रतिकूल स्थिति में भी वह शान्त रह सके। जब व्यक्ति के चेहरे पर आक्रोश की रेखाएं छा जाती हैं तब उसका सुंदर चेहरा भी विकृत बन जाता है। वे लोग धन्य हैं, जो सदा शान्त रहते हैं और जिनके चेहरे पर अनुकूल-प्रतिकूल, हर परिस्थिति में मुस्कान देखने को मिलती है।

परिवार में समस्याएं उत्पन्न होती रहती हैं। उसका एक कारण है सहनशक्ति का अभाव। जिनको साथ में जीना हो और एक-दूसरे को सहन करने की क्षमता न हो तो वे शान्तिमय जीवन कैसे जी पायेंगे? एक बाईस वर्षीय युवक के मन में विकल्प उठा कि मैं शादी करूं या नहीं? उसने सोचा, इस विषय में मुझे किसी दिव्य पुरुष से परामर्श लेना चाहिए। वह संत कबीरजी के पास गया और बोला संतप्रवर! मैं आपके पास एक परामर्श मांगने आया हूँ कि मुझे शादी करनी चाहिए या नहीं? कबीरजी ने कहा युवक! तुम कुछ देर यहीं बैठो, फिर बात करेंगे। कबीरजी ने अपनी पत्नी से कहा जरा, लालटेन जलाना। मध्याह्न का समय था फिर भी बिना कोई प्रश्न किए उसने लालटेन जला कर रख दी। कुछ देर बाद कबीरजी ने दो गिलास दूध लाने का आदेश दिया। पत्नी ने एक गिलास कबीरजी को और एक गिलास अतिथि को पकड़ा दिया। कबीरजी दूध पीते गए और पत्नी की प्रशंसा करते गए। युवक भी दूध पीने लगा, किन्तु पी नहीं सका, क्योंकि उसमें नमक डाला हुआ था। वह वहाँ से उठ कर जाने लगा तब कबीरजी ने कहा युवक! कहाँ जा रहे हो? युवक ने कहा मैं तो आपके पास परामर्श लेने आया था, किन्तु आप तो कैसी बेहूदी बातें कर रहे हैं! कबीरजी ने कहा मैं तो तुम्हारे प्रश्नों का ही जवाब दे रहा हूँ। मैंने मध्याह्न में लालटेन जलाने के लिए कहा तो पत्नी ने बिना किसी तर्क के लालटेन जला दिया, यानी मेरी हरकत को उसने सहन किया। उसने दूध में नमक डाला तो मैंने भी उसे

www.terapanthinfo.com

शांत भाव से पी लिया। उस पर आक्रोश नहीं किया। युवक! अगर पत्नी की हरकतों को सहन कर सको तो शादी करना, अन्यथा बाबा बन जाना। मेरा तो मानना है कि गलती करने पर अंगुली-निर्देश भी करना चाहिए, किन्तु साथ में सहन करने का मादा भी होना चाहिए। तभी व्यक्ति शान्तिमय जीवन जी सकता है। मैंने एक सूत्र बना दिया सहन करना चाहिए, मौके पर कहना भी चाहिए और शान्ति के साथ रहना चाहिए।

तीसरा सूत्र है संयम। आदमी में संयम का विकास होना चाहिए। जहाँ-जहाँ इसमें कमी रहती है, वहाँ-वहाँ समस्या खड़ी हो जाती है। मेरा तो मानना है कि अपेक्षित संयम के अभाव में व्यक्ति का पूरा विकास नहीं हो सकता। आदमी में कठोर जीवन जीने का भी मादा होना चाहिए। उसके खान-पान, रहन-सहन में भी संयम होना चाहिए। संयम के अभाव में वह अखाद्य खा लेता है और अपेय पी लेता है। खान-पान के असंयम के कारण वह अनेक समस्याओं को निमंत्रण दे देता है, अनेक बीमारियां हो जाती हैं। शरीर के अनेक अवयव अव्यवस्थित हो जाते हैं। इसलिए आदमी कुछ त्याग, नियमों को स्वीकार करे। अपने जीवन में संयम को महत्व दे। वह संयम को जीवन का भार न माने, श्रृंगार माने, आभार माने। आदमी विचारों में भी संयम रखे। अनावश्यक चिंतन न करे और किसी के बारे में गलत न सोचे, निषेधात्मक विचारों को स्थान न दे। यदि जीवन में संयम का अवतरण हो जाता है तो आदमी शांतिमय जीवन जी सकता है।

चौथा सूत्र है समय-नियोजन। आदमी की दिनचर्या ठीक होनी चाहिए। कई बार अव्यवस्थित दिनचर्या के कारण करणीय कार्य छूट जाते हैं और समय बीत जाता है। इसलिए आदमी को योजनाबद्ध कार्य करना चाहिए। हर आदमी को 24 घंटे का समय मिलता है। उसमें से कुछ समय चेतना के लिए भी लगाना चाहिए। आदमी केवल शरीर के आस-पास ही न रहे, आत्मा के आस-पास रहने का भी अभ्यास करे। यदि आदमी का संकल्प हो तो कुछ समय चेतना के लिए निकाला जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि उसको प्राथमिकता दी जाए। जब मैं आचार्य श्री महाप्रज्ञ को देखता था तो लगता था कि उन्होंने समय का काफी नियोजन कर रखा था। मैं तो सोचता हूँ कि आदमी को सोने-जागने का समय निश्चित रखना चाहिए। यदि दोनों न बैठ सकें तो कम-से-कम एक समय तो निश्चित रखना ही चाहिए। गुरुदेव तुलसी को मैंने देखा, उनके सोने में देरी हो जाती थी, किन्तु उनके जागने का समय निश्चित था। वे प्रातः चार बजे विराजमान हो जाते थे। किस समय कौन-सा कार्य करना चाहिए, यह ध्यान देकर समय-नियोजन करना चाहिए। आदमी अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखे और कुछ समय अध्यात्म चेतना के लिए भी लगाए तो शान्तिमय जीवन जी सकता है।

आदमी में ईमानदारी के प्रति निष्ठा जाग जाए, संवेगों पर निमंत्र करना सीख ले, संयम का भाव पुष्ट हो जाए और समय-नियोजन करना सीख ले तो जीवन शैली विशिष्ट/प्रशस्त बन सकती है और शान्तिमय, सुखमय जीवन जी सकता है।

बापू जिन्दा हैं

गांधीजी की लड़ाई अंग्रेजों से नहीं थी अपितु देश की गरीबी से थी। गांधीजी देश की गरीबी मिटाना चाहते थे न कि गरीबों को। देश को स्वर्णिम भारत बनाना चाहते थे। उनका सपना था कि देश के हरेक आदमी के पास काम हो, स्वाभिमान के साथ जी सके, किसी का मोहताज न हो। वो हिन्दु-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कभी नही चाहा कि भारत में जातिय दंगें भड़के। वह हिन्दु-मुस्लिम-सिख-ईसाई को अपना अभिन्न अंग मानते थे परंतु फिरकापरस्त, अवसरवादी, स्वार्थी लोगों ने गांधीजी के मिशन को नहीं समझा और उन्हें वंदे मातरम् बना दिया।

दोस्तों जो निःस्वार्थ, आत्मियता, आध्यात्मिकता और राष्ट्र हित के लिए, मानवता के लिए सदा तत्पर रहते है उन्हें काल भी ग्रसित नहीं करता। वे सदा अमर रहते है उनकी करनी और कथनी लोगों के लिए प्रेरणा बन जाते हैं। आज कौन कहता है बापू हमारे बीच में नहीं है। बापू की छवि देश की अमूल्य मुद्रा पर छपी हुई है। जो हर किसी का प्यारा है, वह चाहे बच्चा हो, युवा हो या वृद्ध, सभी प्यार करते है उसको देखकर मुस्कराता है और दौड़ता है।

आज बापू राष्ट्रीय मुद्रा पर विराजमान है। जिस पर सेठों, रिजर्व बैंक और काले कर्म करने वालों का आधिपत्य जमा हुआ है। आज बापू को आजाद करना हैं। ग्रामोत्थान, समाजोत्थान और राष्ट्रोत्थान के लिए सेठों की तिजोरी, काले करतुत करने वाले भ्रष्टाचारी नेता, अभिनेता, नौकरशाह तथा धर्मांध, तथाकथित धर्मरक्षकों के शिकंजे से निकाल कर मरू की प्यास बुझानी है। जहाँ बाढ़ है, सुखा है, गलीच बस्ती है, गरीबी है उन असहाय लोगों तक पहुँचाना है। बापू जिंदा है, जिंदा रहेगा उसको कोई भी कैद नहीं कर पायेगा यदि किसी ने कैद किया तो बापू उसको माफ नहीं करने वाला है। भांडा फोड देंगे और भ्रष्टाचारियों सलाखों के पीछे होना होगा।

◆ **मनमोहन गुप्ता**
एम. एम. मिठाईवाला, मालाड, मुंबई

www.terapanthinfo.com

बनाएं सुखी घर-परिवार, बनेगा सुन्दर यह संसार

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

आम आदमी का जीवन निरन्तर अस्त-व्यस्त होता जा रहा है। तीव्र प्रतियोगिता के युग में व्यक्ति आँखें मींचकर दौड़ता चला जा रहा है। उसे गति की परवाह नहीं, दिशा की परवाह नहीं, यहाँ तक कि खुद की भी परवाह नहीं। दिनचर्या अस्त-व्यस्त है, जीवन शैली सम्यक् नहीं है, वातावरण से प्राप्त होने वाली हवा नकली और प्रदूषित है, ऐसे में जीवन के वास्तविक सुख के साजो-सामान कहाँ से जुटाए जा सकते हैं ?

जीवन कला के सिद्धातों का व्यवस्थित ज्ञान आर्यदेश के सपूतों की सांस्कृतिक विरासत था। देश-काल की स्थितियों-परिस्थितियों के कारण वह विश्रृंखलित होता चला गया। मानव जाति चाहकर भी उसे संपूर्ण रूप में नहीं बचा सकी। कुछ तत्व तो बड़ी मुश्किल से वर्तमान काल तक सुरक्षित रह पाए हैं, उन्हें एक थाती के रूप में सँजोए रखने की अपेक्षा है। कारण कि स्वस्थ और सम्यक् जीवन शैली के लिए वही आधारशिला है।

घर-परिवार को सुखमय बनाने के लिए कई आवश्यक बिन्दु हो सकते हैं। यहाँ पर कुछ विशेष महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित किया जा रहा है

घर को बनाएँ संस्कार का मंदिर

घर को मंदिर बनाने के लिए माता-पिता एवं परिवार के सभी सदस्यों का संस्कारी होना जरूरी है। घर का माहौल सौहार्दपूर्ण होना चाहिए। बच्चों को नैतिक साहित्य एवं महापुरुषों की जीवन-गाथा की पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना भी आवश्यक है। समय-समय पर आयोजित होने वाले संस्कार प्रशिक्षण केन्द्रों में तो परिवार के सभी सदस्यों को भाग लेना चाहिए। ज्ञान-वर्द्धक ज्ञानशालाएं भारत के कोने-कोने में विस्तृत पैमाने पर नेटवर्क के रूप में काम कर रही हैं। जीवन विज्ञान की सैद्धांतिक शिक्षा और प्रायोगिक प्रशिक्षण भी जीवन-शैली को निखार देते हैं। आजकल टेलिविजन के सामने बैठकर दो-तीन घंटे का समय यूँ ही जाया कर देना साधारण-सी बात हो गई है। अपनी आस्था और विश्वासों को मजबूती देने के लिए यह अपेक्षित है कि शाम को आधे घंटे समय हम किसी धर्म-गुरु के प्रवचन को सुनने में लगाएँ। या फिर, शाम को स्वाध्याय चिन्तन आदि उपक्रम का नियमित क्रम करके भी शुद्ध मनोभावों के विकास की दिशा में आगे बढ़े। इस प्रकार के कई प्रयत्न और भी हो सकते हैं। अपेक्षा इस बात की है कि हम क्रम को परिवार में चालू करें, नियमित संचालन करें ताकि हमारी सांस्कृतिक विरासत के संस्कार-चिह्नों की स्थायी स्मृति हमारे चेतना-स्थल पर अंकित हो सके। थोड़ा-सा प्रयास तो जरूर करना पड़ेगा परन्तु इससे परिवार संस्कार का एक मंदिर बन जाएगा।

परिवार के सभी सदस्य हों व्यसन-मुक्त

व्यसन और नशा दुनिया में एक फैशन बनकर मनो-मस्तिष्क में घुस रहा है। इसे गले न लगाने वाला व्यक्ति समाज में 'आदिम युग का मानव' कहा जाता है और लोग उसे पुराने की संज्ञा देते हैं। प्रारंभ में थोड़ी मात्र विवेक के साथ ली जाती है परन्तु समय बीतने के साथ-साथ सेवन नशा शुरू होता है और मात्रा में निरन्तर वृद्धि होती जाती है। इससे आर्थिक नुकसान तो होता ही है, साथ-साथ स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता जाता है। व्यक्ति जब तक स्वस्थ रहता है और जब तक सक्रिय रहता है, तब तक परिवार इसके कुप्रभाव से कम प्रभावित होता है। परन्तु जब नशे की चपेट में आया हुआ व्यक्ति स्वास्थ्य की दृष्टि से बीमार, शक्ति की दृष्टि से कमजोर, सक्रियता की दृष्टि से कुछ न कर पानेवाला, आर्थिक दृष्टि से थोथा होता चला जाता है तो अच्छे से अच्छा समृद्ध परिवार भी सड़क पर आ जाता है। तम्बाकू, गुटका, बीड़ी-सिगरेट आदि सामान्य श्रेणी में आने वाले नशे भी व्यक्ति को जीवन की अँधेरी गलियों में धकेल देते हैं। नशे में धुत्त व्यक्ति विवेकशून्य हो जाता है। पत्नी-पुत्र और भाई तो क्या, वह अपने माता-पिता तक को मारने-पीटने एवं गालियाँ देने लगता है। नशे से आविष्ट व्यक्ति को करणीय और अकरणीय का पता नहीं चलता। बलात्कार, हत्या आदि जघन्य श्रेणी के अपराधों के पीछे नशे का बहुत बड़ा हाथ होता है। नशा एक ओर मानव जीवन के लिए अभिशाप है तो दूसरी ओर कुकृत्यों एवं अपराधों का जनक भी है। नशा करने वाला व्यक्ति स्वयं को तो जोखिम में डालता ही है साथ-साथ परिवार के लिए वह एक बड़ी समस्या बन जाता है। वह स्वयं दुखी होने की अनुभूति करे या नहीं परन्तु उसके परिवार का हर एक सदस्य दुखी हो जाता है। घर-परिवार को सुखी बनाने के लिए यह नितांत आवश्यक है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य व्यसन एवं नशे से मुक्त रहे।

हर पल बनी रहे जागरूकता

वेदों, पुराणों, आगमों एवं प्रायः प्रायः हर धर्मग्रन्थों में सजग एवं जागरूक बनने की प्रेरणा के सूक्त निबद्ध किए गए हैं। मानव जीवन को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए सजगता एवं जागरूकता नितान्त अनिवार्य तत्त्व है। यह एक कर्त्तव्य है जिसका अधिक से अधिक निर्वाह करना आवश्यक होता है। हम अपने प्रति जागरूक रहें, बच्चों के प्रति जागरूक रहें, परिवार के प्रति जागरूक रहें। आगे चलकर हम समाज, संगठन एवं देश के प्रति भी जागरूक बनें। मानव जीवन केवल हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहने, निष्क्रियता का परिचय देने और आलस्य व प्रमाद में निस्तेज होकर पड़े रहने के लिए नहीं है। हर व्यक्ति के अन्दर बुद्धि है, हर व्यक्ति के अन्दर शक्ति है और हर व्यक्ति के हाथ में हुनर है। उसका कुशलता के साथ उपयोग करने के लिए आवश्यक है जागरूकता। सजगता एवं जागरूकता का दामन पकड़कर हम शीघ्र सफलता के द्वार तक पहुँच सकते हैं। सजगता एवं जागरूकता ऐसा तत्त्व है जिसके द्वारा व्यक्ति समय के साथ चल सकता है और कभी-कभी समय से आगे

भी निकल सकता है। सुखी घर-परिवार के हेतु यह भी एक आवश्यक घटक है।

भरते रहें सुख का भंडार

परिवार में धन का अपार भंडार हो परन्तु परिवार सुखी न हो तो अपार समृद्धि भी व्यक्ति के कलेजे को ठंडक नहीं पहुँचा सकती। परिवार में यदि सुख का भंडार भरा है तो समझो कि धरती पर स्वर्ग ही उतर आया है। परिवार को सुख से सराबोर करने के लिए तीन तत्त्व आवश्यक हैं- श्रमशीलता, स्नेहशीलता और सहनशीलता। परिवार का हर सदस्य श्रमशील हो। किसी भी कार्य को करने के लिए वह तत्पर रहे और सदा आगे रहे। 'तू कर, तू कर' की भावना परिवार के सदस्यों में न रहे। एक प्रोफेसर ने अपने लिए एक पैंट सिलवाई। कार्य आधिक्य के कारण वे दर्जी को नाप देने नहीं जा सके, फलतः पैंट एक बालिश्त बड़ी हो गई। उन्होंने पत्नी से कहा कि मेरी पैंट ठीक कर देना। पत्नी बोली कि मुझे अभी समय नहीं है, बाद में कर दूँगी। इसके बाद प्रोफेसर ने अपनी बहू को पैंट की एक बालिश्त छोटी करने की बात कही। बहू बोली कि आज तो मैं व्यस्त हूँ, कल कर पाऊँगी। प्रोफेसर ने पैंट को अपनी बेटी के हाथों में सौंप दिया और कहा कि इसे छोटा कर दो। वह भी बोली कि अभी कॉलेज जाने का समय है, आने के बाद कर दूँगी। अगले सप्ताह प्रोफेसर को कहीं बाहर जाना था। वे सूटकेस में कपड़े डालने लगे। नई पैंट की स्मृति भी हो आई। वह पैंन्ट भी उनके कपड़ों में रखी थी। सोचा कि एक बार इसकी फिटिंग तो देख लूँ। पैंट को हाथ में लिया तो पाया कि पैंट तो अब हाफ पैंट में तब्दील हो चुकी थी। श्रम का समयोचित नियोजन न कर पाने से स्थिति ऐसी बनी।

परिवार में सुख का निरन्तर संचार होता रहे, इसके लिए दूसरा आवश्यक तत्त्व है स्नेहशीलता। कहीं-कहीं ऐसा भी देखा गया है कि एक भाई जब घर में प्रवेश करता है तो दूसरा भाई उसे आता देखकर अपने कमरे का दरवाजा बंद कर लेता है। परछाई से भी जब अनष्टि की आशंका हो, परछाई से भी कहीं कोई आत्मीयता का भाव न हो तो सहोदर के रिश्तों के बीच भी हम प्यार और स्नेह का आदान-प्रदान नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार की स्थितियों में तो घर-परिवार नर्क से भी ज्यादा बदतर हो जाता है। जहाँ भीतर ही भीतर एक दूसरे की काट करने की योजना हो और वाणी में एक दूसरे के प्रति तिरस्कार और निन्दा के स्वर हो, वहाँ स्नेह के दीए जल नहीं सकते। परिवार के सभी सदस्यों के बीच परस्पर स्नेह की धारा बहती रहनी चाहिए। सभी एक टेबल पर बैठकर खाना खाते दिखाई देने चाहिए। उत्सव, आयोजनों में सभी एक छत के नीचे खुशियां बाँटते रहते दिखाई देने चाहिए। मानसिक स्तर पर किसी भी सदस्य में किसी भी बात के लिए कभी तनाव नहीं रहना चाहिए। अगर किसी बात के चलते स्नेहशीलता में कमी आ गई हो तो उसे आपस में बैठकर सौहार्द के साथ समाहित कर लेना चाहिए। जहाँ तक हो सके, घर की बात को घर की सीमा के अन्दर ही सलटा देना चाहिए।

परिवार में सुख को विस्तार होनेवाला तीसरा तत्त्व है सहनशीलता। कहा गया है 'जो सहता है, वह रहता है।' परिस्थितियों के बदलते दौर में भी संतुलित रहना सहनशीलता है। आज सहनशीलता का चक्र निरंतर नीचे गिरता जा रहा है। घर में किसी ने आपको अपना समझकर भी हित-चिन्ता में कोई नसीहत दे दी पर इतने में ही मुँह सूजा हुआ दिखाई पड़ने लगता है। मार्गदर्शन को भी आज हम थोंपे सिद्धांतों की तरह मानने लगे हैं और वह अमृत तत्त्व जो जीवन-क्यारियों में पहुँचकर सिंचन, पोषण ओर पुष्टि देने वाला है, उसे यथास्थान पहुँचने के पहले ही उस पर मिट्टी डाल देते हैं। किसी को अंश-मात्र भी न झेल पाने से अत्यन्त विषम स्थितियां बन जाती हैं। सहनशीलता के अभाव के कारण ही सास-बहू के झगड़े, पिता-पुत्र में दूरी, भाई-भाई में बैर, तलाक आदि सब टूटते रिश्तों के खण्डहर बनते चले जा रहे हैं। छोटी-मोटी बातें कहाँ नहीं होती? छोटी-मोटी बातों को पकड़ना और उन्हें लम्बा करना अच्छा नहीं होता, जब कभी भी किसी बात से मानसिक स्तर पर आहत होने का एहसास हो तो खामोश हो जाएं, मौन हो जाएं, कोई उत्तर-प्रत्युत्तर व प्रतिवाद न करें। चिन्गारी ज्वाला नहीं बनेगी, हवा न पाकर वह ठंडी हो जाएगी। क्षुद्र बातों से आहत प्रत्युत ईंधन और हवा के अभाव में करने वाला व्यक्ति उत्तर न पाकर झुँझला जाएगा और धीरे-धीरे स्वयं चुप हो जाएगा। सहनशील व्यक्ति हर विपरीत परिस्थिति को मोड़ देता है। जिस परिवार के सदस्यों में सहनशीलता का तत्त्व है, वह परिवार सुख को निरंतर विस्तार देता जाता है।

सजाते रहें स्वर्ग-सा संसार

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने अपने महाकाव्य 'लोकायतन' में मानवतावाद को प्रतिष्ठित करते हुए लिखा है

'जीवन की क्षण-धूलि रह सके जहाँ सुरक्षित,
रक्त मांस की इच्छाएँ जन की हों पूरित।
मनुज प्रेम से जहाँ रह सके, मानव ईश्वर,
और कौन-सा स्वर्ग चाहिए, तुझे धरा पर?'

धरती पर स्वर्ग उतर आने की कल्पना तभी साकार होती है जब मनुष्य-मनुष्य के साथ परस्पर प्रेम और सौहार्द की भावना से रहता है। परिवार में एक सदस्य के प्रति दूसरे संदस्य की समर्पण भावना एवं सहायता की भावना अपनी चरम सीमा पर रहती है। वे एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से नहीं देखते, बल्कि एक दूसरे के प्रति विश्वास के भाव रखते हैं। विचारों एवं सिद्धांतों के प्रति सभी एक मत हों, यह संभव नहीं, सबके अपने-अपने मत-मतान्तर हों परन्तु मन-भेद कहीं न हो। सभी एक-दूसरे के विचारों का आदर करना सीखें। समूहगत रहने की आदत डालें। परिवार के दस व्यक्तियों के बीच रहकर अपने जीवन के उद्देश्य की तलाश करें। वर्ना अकेले दौड़ते-दौड़ते आप कब थक जाएंगे, कह पाना कठिन है। एकाकीपन की मानसिकता से ऊपर उठें, तभी आप समूहगत जीवन की भीनी-भीनी सुरभि को प्राप्त कर पाएँगे। सुखी घर में आप खुशियों के जितने बेल-बूटे टाँक पाएँगे, आपका घर-परिवार निरंतर उतना ही शांतिमय, शक्ति संपन्नमय बनता चला जाएगा। पतवार आपके हाथ में है। जीवन नौका को किस ओर ले जाना है यह सोचना भी आपका ही काम है।

मौन का महत्त्व

सीताराम गुप्ता

साधना में उपवास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उपवास जहाँ भौतिक शरीर की शुद्धि का साधन है वहीं मौन मन की शुद्धि के लिए अनिवार्य है। मौन वस्तुतः मानसिक उपवास ही है। मौन की अवस्था में हम अपने मुख जिह्वा तथा बोलने में सहायक स्वर यंत्रों पर नियंत्रण कर सकते हैं लेकिन इसके बावजूद हम बाह्य जगत से जुड़े रहते हैं। आँखों से देख सकते हैं, कानों से सुन सकते हैं, इशारों तथा भाव-भंगिमाओं द्वारा अपनी बात दूसरों को समझा सकते हैं तथा दूसरों की बातों को ग्रहण कर सकते हैं। किसी भी व्यक्ति, वस्तु या स्थिति को देख कर हमारे मन में विचार उत्पन्न हो सकते हैं और हम बोलने पर भी विवश हो सकते हैं। अतः आदर्श मौन का अनुपालन अनिवार्य है ताकि विचार प्रक्रिया अथवा विचारों के प्रवाह से मुक्ति मिल सके तथा निर्णय लेने की स्थिति से बच सकें। यही ध्यान की अवस्था है।

आदर्श मौन वह स्थिति है जब हम बोलने पर नियंत्रण के साथ-साथ अपनी अन्य ज्ञानेंद्रियों के कार्यकलापों को भी सीमित अथवा नियंत्रण में कर लेते हैं जिससे अपने आस-पास के वातावरण के प्रति निरपेक्षता अथवा तटस्थता आ जाती है। शब्द के साथ-साथ रूप, रस, गंध तथा स्पर्श से विमुख होना ही आदर्श मौन है। आँखें बंद करने का तो और भी महत्व है। आँखें बंद करने का अर्थ है मस्तिष्क की तरंगों की आवृति में कमी जो हमें मन की गहराई में पहुँचने का अवसर प्रदान करती है।

आदर्श मौन अथवा बाहर से संवादहीनता का अर्थ है अपने अभ्यंतर से संवाद जो आध्यात्मिक विकास का उद्गम है। जब हम देखते हैं, बोलते हैं अथवा अन्य किसी भी क्षेत्र में किसी भी दिशा में गतिशील होते हैं तो ऊर्जा का बहाव अंदर से बाहर की ओर होता है अर्थात् हमारी ऊर्जा में निरंतर कमी होती रहती है। इसके विपरीत मौन की स्थिति में, न देखने की स्थिति में, निश्चलता की स्थिति में ऊर्जा का बहाव बाहर से अंदर की ओर होता है अर्थात् हम पराभौतिक ऊर्जा के लाभ प्राप्त करने लगते हैं।

मौन साधना का एक हिस्सा है जो ध्यान अथवा मेडिटेशन में होने से पहले की अवस्था है। आदर्श मौन के बाद मन को किसी एक ओर केन्द्रित करना अथवा इच्छित दिशा में ले जाना ही ध्यान है। योग के आठ अंगों : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि में ध्यान से पहले की अवस्थाएँ हैं 'प्रत्याहार' तथा 'धारणा'। 'प्रत्याहार' है ज्ञानेंद्रियों पर नियंत्रण बाह्य जगत से संबंध तोड़ना ताकि अंतर्यात्रा संभव हो सके। 'धारणा' है चित्त का केन्द्रीकरण और यहीं से प्रारंभ होती है ध्यान की यात्रा। इस प्रकार मौन की विभिन्न स्थितियाँ योग साधना के मार्ग के विभिन्न सोपान हैं।

मौन में आप अपने श्वास के आवागमन पर ध्यान केंद्रित करें तो मन के अवचेतन भाग में दबे विकार निकल जाएँगे जो अनेक व्याधियों का कारण बनते हैं। मौन में आप संकल्प लें, संकल्प पूर्ण होंगे। तकनीकी भाषा में कहें तो संकल्प लेना या करना एक प्रकार से स्वीकारोक्ति ही है जो मौन की विशेष अवस्था में, जिसे हम एल्फा लेवल ऑफ माइंड कहते हैं, प्रभावशाली ढंग से कार्य करती है। मौन में लिए गए संकल्प ही अधिक गहरे होते हैं अर्थात अधिक प्रभावी होते हैं।

मौन वह तत्त्व है जिसमें महान घटनाएँ विचार रूप में स्वयं को निर्मित करती हैं। संसार के महान आविष्कार, महान घटनाओं की शुरुआत, महान योजनाओं की रूपरेखा सबसे पहले किसी न किसी के मन में बनती है जो कि बाद में कार्य रूप में परिणत होती है। मन में उत्पन्न विचार तभी प्रभावी ढंग से क्रियान्वित होते हैं जब मन शांत हो। अशांत, उद्वेलित मनःस्थिति में कोई भी सकारात्मक विचार या महान योजना न तो उत्पन्न होगी और न ही पूर्ण। तभी तो कहा गया है साइलेंस इज़ गोल्ड।

कुछ समय खाली पड़ी रहने के उपरांत ज़मीन पुनः उर्वर हो जाती है और अच्छी फसलें पैदा करने में सक्षम हो जाती है। यही स्थिति मन की भी है। यदि आप चाहते हैं कि मन रूपी ज़मीन की उर्वरता का आरोग्य तथा भौतिक इच्छापूर्ति के लिए अधिकाधिक लाभ हमें मिल सके तो इसके लिए मौन नामक तत्त्व को जीवन में महत्व दीजिए।

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

जो सुख अहिंसा, सत्य, शील, सदाचार जैसे गुणों की उपासना में है, वह भोगोपभोग में कहाँ?

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

भारतीय महिलाएं

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

प्राचीन भारत में महिलाओं का विशेष स्थान था। वे सर्वत्र सम्मानित थीं और यह माना जाता था कि जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है, वहीं देवता निवास करते हैं। इसी तथ्य को प्रकट करते हुए महात्मा मनु ने कहा था 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।' मनुष्य को सम्मानित, समृद्ध और सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए तीन तत्त्वों की विशेष आवश्यकता होती है विद्या, धन और पराक्रम। इन तीनों की स्वामिनी हमारे यहाँ महिलाएं ही मानी गयी हैं, जो क्रमशः सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा हैं। नारी को आदिशक्ति का प्रतीक माना गया है, जो आवश्यकता के अनुसार अलग-अलग तीन स्वरूप धारण किये हुए है। नारी अपने सभी लौकिक रूपों में भी वन्दनीय और पूज्य है। ममतामयी मां के रूप में वह सम्पूर्ण सृष्टि की जननी है। मां के रूप में वह सर्वश्रेष्ठ गुरु भी है। 'नास्ति विद्या समं चक्षुर्नास्ति मातृ समोगुरुः' अर्थात् विद्या के समान नेत्र नहीं है और माता के समान गुरु नहीं है। बहिन के रूप में वह निश्छल स्नेह की प्रतिमूर्ति है और पुत्री के रूप में वह हमारे परिवार की शोभा और गौरव है। सामान्यतः पुत्र की तुलना में पुत्री माता-पिता के प्रति अधिक निष्ठावान भी पायी गयी है। पत्नी के रूप में तो वह पुरुष की अर्द्धांगिनी और उसके प्रत्येक कार्य की सहभागिनी है ही। भारतीय संस्कृति के अनुसार पुरुष अपना कोई भी धार्मिक कार्य, पत्नी के बिना पूर्ण नहीं कर सकता। स्वयं श्री राम को भी यज्ञ करने के लिए सीता की स्वर्ण प्रतिमा बनवानी पड़ी थी। प्राचीन भारत में नव-वधू भी श्वसुर, देवर, ननद तथा सास आदि के लिए साम्राज्ञी (अथर्ववेद-14/14) के रूप में स्वीकार और सम्मानित की जाती थी। उस समय गार्गी, श्रद्धा, लोपामुद्रा, सरमा, तथा घोषा जैसी अनेक विदूषी महिलाएं थीं, जो न केवल वेद-पाठ करतीं, अपितु वेद-मंत्रों के अर्थ भी स्पष्ट करती थीं। वे याज्ञवल्क्य जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों से बड़ी-बड़ी सभाओं में शास्त्रार्थ भी करतीं थीं। किसी भी दृष्टि से उस समय की महिलाएं पुरुषों से पीछे नहीं थी।

मध्यकाल में भारतीय समाज धीरे धीरे पतनोन्मुख होने लगा। बढ़ती भौतिकता हमारी नैतिक मान्यताओं को पीछे धकेलने लगी। विदेशी आक्रान्ताओं के आगमन से हमें अपनी महिलाओं का सम्मान खतरे में दृष्टिगत होने लगा। इस सम्मान की रक्षा के लिए पुरुषों को अपने शारीरिक बल के प्रयोग की आवश्यकता महसूस हुई ओर जब उससे काम नहीं चला तो महिलाओं पर कछ प्रतिबंध भी लगाये जाने लगे। पर्दा प्रथा शरु हुई और उनके सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेने को भी सीमित किया जाने लगा। इससे महिलाओं की शिक्षा भी प्रभावित हुई। बालिकाओं के उत्तरदायित्व से यथाशीघ्र मुक्त होने और बढ़ती अनैतिकता से होने वाले संभावित खतरे से बचने के लिए बालविवाह की कुप्रथा भी धीरे-धीरे शुरु हुई। संभवतः इसी परिस्थिति में सति प्रथा के नाम पर विधवाओं को जीवित अग्नि की भेंट चढ़ाने की घिनोनी हरकतें भी शुरू हुईं। पुरुषों को अब अपने शारीरिक शक्ति से अधिक सम्पन्न होने का दम्भ भी होने लगा और उनमें महिलाओं को अपना दास बनाकर रखने की राक्षसी प्रवृति पनपने लगी। इसके बाद शुरू हो गया महिलाओं पर अमानुषिक अत्याचारों का सिलसिला। महिलाओं के सम्मानित स्वरूप और समानता की भावना अतीत की गहराइयों में कहीं खोगयी। धार्मिक क्रिया-कलापों में भी पत्नी की उपस्थिति महज औपचारिकता बन कर रह गयी। एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी अनेक कुप्रथाएं जन्म लेने लगीं। पुत्री को नयी गृहस्थी शुरू करने के लिये स्नेहवश दिया जाने वाला उपहार, दहेज की बाध्यता बन गया, जिसने हमारी नववधुओं को मौत के कगार तक पहुँचा दिया। स्त्री का देवी स्वरूप, उसके भोग्या स्वरूप में बदल कर बलात्कार का शिकार हो गया। स्वयं नारी का आत्म-विश्वास टूटकर चकनाचूर हो गया और वह पुरुष की केवल ऐसी दासी बनकर रह गयी, जो दया और सहानुभूति की तो पात्र हैं, मगर सम्मान की नहीं। वह अशिक्षा और अन्धविश्वास के भवंर में फंसकर अपना सब कुछ गंवा बैठी। यद्यपि आधुनिक भारत में भी ऐसी महिलाएं हुई हैं, जिन पर सहज ही गर्व किया जा सकता हैं, मगर उनकी संख्या समुद्र में बूंद के समान है। इनमें महारानी लक्ष्मी बाई, सरोजनी नायडु, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, सुचेता कृपालानी, अरूणा आसफ अली तथा इन्दिरा गांधी आदि के नाम लिये जा सकते हैं। आज की आम महिलाएं तो अपने घूंघट में ही सिमट कर सिसकने, रोने, सभी प्रकार के अत्याचार सहने और अन्त में अज्ञात मौत मरने के लिए ही पैदा होती हैं। उनका सामान्य स्तर विश्व के अन्य देशों की तुलना में बहुत नीचा है। कुछ समय पूर्व विश्व के 130 देशों की महिलाओं के स्तर के बारे में किये गए एक अध्ययन में हमारे यहाँ की महिलाओं को 99वें स्थान पर पाया गया था। अब हमारी महिलाओं ने कुछ प्रगति अवश्य की है, मगर पर्याप्त नहीं। विकास की गति में हमारे देश के पिछड़ने का यह भी एक प्रमुख कारण रहा है। स्वामी विवेकानन्द ने सत्य ही कहा था जिस प्रकार पक्षी एक पंख से उड़ान नहीं भर सकता, उसी प्रकार हमारा समाज भी नारी की उपेक्षा करके आगे नहीं बढ़ सकेगा, विकास नहीं कर सकेगा।'

किसी भी समाज की प्रगति का मूल आधार शिक्षा होता है और इसी क्षेत्र में हमारी महिलाएं बहुत अधिक पिछड़ी हुई हैं। अंग्रेजी शासन काल में तो महिला-शिक्षा पूरी तरह उपेक्षित रही, जो स्वाभाविक ही था। सन् 1822 में देशी प्राथमिक शालाओं में कुल 978630 लड़के शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, जबकि लड़कियों की संख्या केवल 5480 ही थी। मुम्बई में सन् 1824-29 में कोई भी लड़की स्कूल में नहीं पढ़ रही थी। बंगाल में 1835 ईस्वी तक महिला-शिक्षा शून्य के बराबर थी। बाद में महिला-शिक्षा की तरफ

कुछ ध्यान दिया जाने लगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस ओर विशेष ध्यान दिया गया, मगर फिर भी वह आवश्यकता से बहुत कम था। पिछली शताब्दी के प्रारंभ में हमारे यहाँ महिला-साक्षरता केवल 0.69 प्रतिशत थी। 1946-47 में यह बढ़कर 6 प्रतिशत और 1971 में 18.44 प्रतिशत होगयी।

1991 की जनगणना के अनुसार देश में महिला शिक्षा का प्रतिशत 21.4 था, जो 2001 में बढ़कर 28.6 हो गया। इस अवधि में पुरुष-शिक्षा में काफी वृद्धि हुई, मगर महिलाएं शिक्षा में पिछड़ी ही रहीं। वर्ष 2001 के बाद सर्वशिक्षा अभियान तथा अन्य अनेक योजनाओं के माध्यम से जो शिक्षा का प्रसार किया गया, उससे महिलाओं ने भी शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रगति की। इसका परिणाम यह हुआ कि इस समय कुछ महिलाएं जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर अग्रसर हो रही हैं तथा बड़ी संख्या में अन्य महिलाएं भी शिक्षा के माध्यम से प्रगति की ओर अग्रसर होने के लिए उत्सुक होकर प्रयत्नशील हैं। इस संख्या को हमें तेजी से आगे बढ़ाकर इसमें सभी महिलाओं को सम्मिलित करना है।

मध्यकाल में हमारे यहाँ परिस्थितिजन्य विवशतावश जो बालिका विरोधी भावनाएं पनपीं वे कालान्तर में उग्र से उग्रतर होती चली गयीं। देश के अनेक क्षेत्रों में जन्म लेते ही मादा शिशु की हत्या की परंपरा सी बन गयी। बालिका के जन्म को अपमान का प्रतीक समझा जाने लगा। कभी उनका गला घोंटकर, कभी पलंग के पाए के नीचे दबाकर और कभी जहरीली जड़ी बूटी का रस पिलाकर उनकी सरेआम हत्या की जाने लगी और जब कानून ने अपनी सख्ती का डर दिखलाया तो हत्या का यह कार्य गोपनीय रूप में किया जाने लगा। आधुनिक काल में बालिकाओं के जन्म से पूर्व ही उनकी हत्या का नया दौर चल निकला, जिसे भ्रूण हत्या कहते हैं। देश के हर छोटे बड़े शहर में काफी बड़ी संख्या में लगे परीक्षण केन्द्र खुले हुए हैं, जहाँ गर्भस्थ शिशु का लिंग परीक्षण किया जाता है और उसके मादा होने पर गर्भ में ही उसकी हत्या कर दी जाती है। यह सब कानूनी रूप से प्रतिबंधित है। फिर भी धड़ल्ले से भ्रूण हत्याएं हो रही हैं और कानून मूकदर्शक की भांति सब देख रहा है।

इस स्थिति में हमारे यहाँ महिलाओं का अनुपात निरन्तर कम होता जा रहा है। 1901 में हमारे यहाँ 1000 पुरुषों के अनुपात में 972 महिलाएं थीं। बीस वर्ष बाद 1921 में यह अनुपात घटकर 1000 और 955 रह गया। 1961 में 1000 पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या 941 ही रह गयी। 1981 में महिलाओं की यह संख्या 934 और 1991 में 927 तथा 2001 में 933 रह गयी।

महिलाओं के विरूद्ध षड्यंत्र के क्रम में भ्रूण हत्या के बाद बाल-विवाह का दंड़ बालक और बालिका दोनों को भोगना पड़ता है, मगर विशेष हानि होती है बालिका को ही। अपरिपक्व अवस्था में उन्हें प्रजनन का भार ढोना पड़ता है, जिससे वे असमय में ही वृद्ध होकर विभिन्न रोगों की शिकार हो जाती हैं। बाल विवाह पर कानूनी प्रतिबंध के बावजूद आज भी ये बदस्तूर जारी हैं। बालिकाओं के विरूद्ध किये जारहे इन षडयंत्रों के पीछे मानवीय मनोवृत्ति के अतिरिक्त दो अन्य कारण भी उत्तरदायी हैं। वे हैं दहेज की कुप्रथा और महिलाओं की सुरक्षा पर लगे प्रश्न चिन्ह। माता-पिता द्वारा दिये जाने वाला उपहार जब कालान्तर में दहेज के रूप में वर का अधिकार बन गया तो उसने समाज के चेहरे पर लगे कलंक का रूप धारण कर लिया। दहेज की मात्रा कम होने पर नववधू को तरह-तरह के कष्ट देना, उसे तलाक दे देना या उसकी हत्या कर देना आम बात बन गयी। इससे बालिका के जन्म पर माता पिता को कष्ट की अनुभूति होना स्वाभाविक है।

समाज में महिलाओं की सुरक्षा पर मंडराते खतरों में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। उनके साथ की जाने वाली छेड़छाड़, अपहरण और बलात्कार की घटनाएं आम बनती जारही हैं। गूंगी बहरी और नाबालिग लड़कियों से लेकर चार-पांच बच्चों की महिलाओं तक अपहरण और बलात्कार की शिकार होरही हैं। कुकर्म केवल अपरिचित या असंबंधित व्यक्तियों द्वारा ही नहीं, निकट संबंधियों द्वारा भी धड़ल्ले से किये जाते हैं। देश में औसतन प्रत्येक 47 मिनट पर एक महिला के साथ बलात्कार और 44 मिनट पर एक महिला का अपहरण होरहा है। यह भी उल्लेखनीय है कि बलात्कार तथा अपहरण की सभी घटनाएं रिकॉर्ड में नहीं आ पातीं। नारी-सुलभ लज्जा, बदनामी का डर तथा पुलिस और अदालती कार्यवाही की उलझनें महिलाओं को शिकायत दर्ज करवाने से रोक देती हैं। अनुमान है कि बलात्कार और अपहरण की वास्तविक घटनाएं उपलब्ध आंकड़ों से कई गुणा अधिक होती हैं। छेड़छाड़ की घटनाएं तो महिलाओं के जीवन में जैसे आम बात बनती जारही है।

महिलाओं के शोषण में सिनेमा, टी.वी. और कुछ पत्र-पत्रिकाएं भी पीछे नहीं हैं। विज्ञापनों में महिलाओं के शरीर का विज्ञापन किया जाता है और उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है, जैसे उनके पास शारीरिक सौंदर्य के अतिरिक्त कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है। 'तू चीज बड़ी है मस्त मस्त' जैसे गीत धड़ल्ले से प्रस्तुत करके उन्हें केवल 'वस्तु' बना दिया जाता है, जिसके पास न तो अपना कोई व्यक्तिगत सम्मान होता है और न कोई भावना। फिल्मों के अश्लील दृश्यों तक अपने को सीमित रखने वाली पत्रिकाएं भी खूब चलती हैं। स्वभावतः इनमें कहीं भी महिलाओं को सम्मान देने वाली बात नहीं होती। उनका सम्पूर्ण कलेवर महिलाओं की देह तक सीमित होता है।

आज का युग राजनीति-प्रधान है और राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। इसलिए यह कहा जताा है कि महिलाओं की समस्या का समाधान नहीं होने का कारण यही है कि राजनीति में उनका पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है। महिलाओं की समस्याओं को महिलाएं ही भली प्रकार समझ सकती हैं और जन प्रतिनिधि संस्थाओं में वे ही उन्हें सही ढंग से अभिव्यक्त करके उनके समाधान का रास्ता ढूंढ सकती हैं। इसलिए देश की राजनीति में महिलाओं की पर्याप्त उपस्थिति को निश्चित करने के लिए आरक्षण की व्यवस्था पर विचार किया गया और स्थानीय संस्थाओं से उसकी शुरूआत करने की दृष्टि से संविधान में 73वां संशोधन किया गया। इस संशोधन में व्यवस्था की गयी है कि पंचायतों में एक तिहाई निर्वाचित

पद महिलाओं के लिए आरक्षित रहेंगे। अनुसूचित जाति, जन जाति तथा पिडड़े वर्गों के लिए आरक्षित स्थानों में भी एक तिहाई स्थान महिलाओं के लिए रखे गये हैं। इसी प्रकार पंचायतों के अध्यक्षों में भी एक तिहाई स्थान महिलाओं के लिए आरक्षित किये गये। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी की दिशा में यह कदम निश्चित ही एक क्रांतिकारी कदम था। इसके बाद स्वभावतः देश की संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण पर विचार किया जाने लगा।

राजनीति में पुरुष और महिला की समान भागीदारी पर नई दिल्ली में फरवरी 1997 में अन्तर संसदीय सम्मेलन आयोजित किया गया था, जिसमें 77 देशों की महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें इस तथ्य को विशेष रूप से रेखांकित किया गया कि विश्व भर में महिलाओं का राजनीति में प्रतिनिधित्व बहुत कम है जिसे बढ़ाये जाने की आवश्यकता है। दुनिया में महिलाओं की संख्या लगभग पचास प्रतिशत है, लेकिन व्यवस्थापिकाओं में उनका प्रतिनिधित्व लगभग 18 प्रतिशत मात्र है। अध्यक्ष पद पर तो केवल सात प्रतिशत ही महिलाएं हैं। भारतीय संसद के दोनों सदनों में लगभग 7.5 प्रतिशत स्थान ही महिलाओं के पास रहे है तथा इस दृष्टि से विश्व में भारत का 65वां स्थान है। एशिया में भी उसका 11वां स्थान है। एशिया में प्रथम स्थान चीन का है, जहाँ महिलाओं का 21 प्रतिशत प्रतिनिधित्व है। विश्व में प्रथम स्थान स्वीडन का है, जहाँ महिला प्रतिनिधित्व 40.4 प्रतिशत है। इस क्षेत्र में सबसे नीचे मोरक्को का स्थान है, जहाँ महिलाओं का प्रतिनिधित्व केवल 0.6 प्रतिशत है। इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस तथा रूस जैसे विकसित देशों की भी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। अमेरिका में लगभग 11.7 रूस में 10.2, इंग्लैंड में 9.5 तथा फ्रांस में 6. 4 प्रतिशत महिलाओं का प्रतिनिधित्व है। महिलाओं के पर्याप्त प्रतिनिधित्व की दृष्टि से नार्वे (39.4 प्रतिशत), डेनमार्क (33 प्रतिशत), आस्ट्रिया (26.8) प्रतिशत, जर्मनी (26.2 प्रतिशत) तथा दक्षिण अफ्रीका (25 प्रतिशत) अंग्रिम पंक्ति में हैं। विश्व के कुछ देशों में महिलाओं के लिए साधारण सा आरक्षण भी है। वे हैं अर्जेन्टाइना, बेल्जियम, उत्तर कोरिया, ब्राजील तथा फिलीपीन। आरक्षण की व्यवस्था के बावजूद इन देशों में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है।

इस समय महिला आरक्षण का विधेयक भारतीय संसद के विचाराधीन है। राज्य सभा में यह विधेयक स्वीकृत भी हो चुका है और लोकसभा में राजनीतिक मतभेदों में उलझा हुआ है। अनेक महिला-संगठन और राजनेता उसके पक्ष में जोर-शोर से प्रचार कर रहे हैं। कुछ राजनेताओं को यह आशंका है कि संसद में महिलाओं को आरक्षण देने से पुरुषों का प्रतिनिधित्व कम हो जायेगा और तब उन्हें अपनी सीट खोनी पड़ सकती है। इस आशंका को समाप्त करने के लिए यह भी प्रस्तावित है कि आरक्षित सीटों पर दोहरी सदस्यता का फार्मुला अपनाया जाए। जो सीट महिला के लिए आरक्षित है, वहाँ महिला के अतिरिक्त एक पुरुष भी चुना जाए। इसके अनुरूप संसद में सदस्यों की संख्या भी बढ़ानी होगी। यह व्यवस्था समान प्रतिनिधित्व के सिद्धांत के विरुद्ध होगी। इसके अतिरिक्त जातिवाद पर आधारित कुछ राजनीतिक दल महिलाओं के लिए आरक्षित स्थानों को भी विभिन्न जातियों में विभाजित करना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में वे आरक्षण में आरक्षण चाहते हैं। अन्य लोग इसे व्यावहारिक नहीं मानते, क्योंकि इससे दूसरे मामलों में दिये जारहे आरक्षण के अन्दर भी अलग-अलग जातियों के कोटे की मांग की जाने लगेगी। इस प्रकार के मतभेदों के कारण महिला-आरक्षण विधेयक लम्बे समय से टलता रहा है और निकट भविष्य में इन समस्याओं के सुलझने की संभावना भी नहीं है।

यदि हम यह सोचें कि महिला-आरक्षण विधेयक के पीछे राजनेताओं का विचार महिलाओं की प्रगति की भावना पर आधारित है तो इसमें आंशिक सत्य ही होगा। देश की राजनीति में वंशवाद की जो प्रवृति निरन्तर अग्रसर हो रही है, यहाँ भी अधिकांशतः उसी प्रवृति का प्रभाव है। अधिकांश राजनेता इस महिला-आरक्षण के माध्यम से अपने परिवार की महिला सदस्यों को राजनीति में लाकर अपने पक्ष को मजबूत करना चाहते हैं। लालू यादव केन्द्र में मंत्री बने तो बिहार में अपनी अल्पशिक्षित पत्नी को मुख्यमंत्री बना दिया और उनके माध्यम से केन्द्र के साथ ही बिहार में भी अपना प्रत्यक्ष प्रभाव कायम रखा।

महिलाओं की प्रगति के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि उनकी शिक्षा के लिए युद्धस्तर पर कार्य किया जाए तथा उन्हें रूढ़िवादी बन्धनों से मुक्त किया जाए। समाज में उनकी सुरक्षा के लिए भी सख्त व्यवस्था होना आवश्यक है। उनके सम्मान पर अंगुली उठाने वालों के विरुद्ध बिना किसी अपवाद के कठोर कार्यवाही हो। फिल्म और फिल्मी पत्रिकाएं जो उन्हें केवल फैशन की पुतली और सैक्स का साधन बनाकर लोगों के सामने पेश करते हैं, उन पर भी नियंत्रण आवश्यक है। कुछ महिला पत्रिकाएं भी उन्हें प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ाने के स्थान पर उन्हें केवल रसोई घरों में या शीशे के सामने रखे सजावटी बुत के समान बनाये रखने की कोशिश करती हैं। उन पर भी नियंत्रण आवश्यक है।

संसद में महिलाओं के लिए स्थान आरक्षित करने के स्थान पर यह अधिक तर्कसंगत रहेगा कि राजनीतिक दल अगर वास्तव में राजनीति में उनकी प्रगति चाहते हैं तो वे उन पर विश्वास रखें और अधिक से अधिक संख्या में उन्हें चुनावों में उम्मीदवार बनायें। पिछले आम चुनावों के परिणाम यदि देखें तो महिलाओं की जीत का प्रतिशत अधिकांशतः पुरुषों की तुलना में अधिक ही रहा है। इसके बावजूद राजनीतिक दल कहीं महिलाओं के प्रति अपने अविश्वास के कारण और कहीं अपने पुरुष साथियों के दबाव के कारण महिलाओं को पर्याप्त टिकट नहीं दे पाते। आरक्षण का दंश देश को वैसे ही बढ़ते जातिवाद और पारस्परिक कटुता से काफी व्यथित कर रहा है। उसे अब एक और नये आरक्षण से बढ़ाने के स्थान पर यह अधिक श्रेयस्कर रहेगा कि राजनीतिक दल स्वयं अपने घर को संभालें और महिलाओं की प्रगति के लिए कुछ ठोस कार्य करें।

10/611 - मानसरोवर
जयपुर - 302020 (राजस्थान)

नेता पर फेंका जूता

जसविंदर शर्मा

उमर अब्दुल्ला साहब किस्मत के धनी निकले। 15 अगस्त तिरंगे की सलामी देते समय एक सिरफिरे पुलिस हवलदार ने उन पर जूता छोड़ दिया। पापा शेख अब्दुल्ला ने सुना तो खुशी के मारे चीख उठे, 'अब मेरा बेटा जॉर्ज बुश के बराबर हो गया है।' कश्मीर में जहाँ हर तरफ पत्थरों की बारिश हो रही हो, वहाँ जूते पड़ें, यह बात बाप-बेटे को इतनी नहीं अखरी। जूता फैंकने वाले की पहले तो पुलिस ने खूब धुनाई की मगर बाद में उसे उमर साहब ने घर बुलाया, माफी मांगी, जूता फेंकने वाला भी लज्जित हुआ।

इन दिनों हर तरफ कड़वे शब्दों का प्रहार तो हो ही रहा था अब हर चुनावी सभा में जूते भी दागे लगे हैं। कुछ महीने पहले वित्त मंत्री पर जूता चला और फिर उसके बाद आडवाणी पर उनके ही कार्यकर्ता ने खड़ाऊं फैंक दी। दो बड़े राजनैतिक दलों के बीच प्रपिस्पर्धा की हद है यह। इनमें से एक बड़े दल का नेता जूते खाए और मशहूरी पाए तो विरोधी दल पीछे कैसे रह सकता है। गठबंधन के अन्य घटक दलों में नजरों में छोटे होने का खतरा था। अतः पार्टी के थिंक टैंकों ने रातोंरात त्वरित चिंतन किया और अपने ही दल के एक नाराज कार्यकर्ता को उकसाकर जूता फैंकने के लिए तैयार कर लिया।

सयाने लोग कहते हैं कि नेकी कर और दरिया में डाल। वे तो ये भी कहते हैं कि नेकी कर और जूते खा। अर्थात आज के जमाने में दूसरों के साथ नेकी व भला करने वाले को जूते ही पड़ते हैं। हमारे नेताओं के पास कोई नेकनामी तो है नहीं मगर ये शोध का विषय हो सकता है कि क्या जॉर्ज बुश को भी उनके आखिरी दिनों में जूते इसलिए पड़े कि उसने ईराक की जनता के साथ कोई नेकी की थी? अखबार की खबरों से तो ऐसा नहीं लगता।

कहाँ तो विदाई के समय में गले में हार पड़ते हैं, दिल में बिछुड़ने की पीड़ा व आँखों में आँसू आ जाते हैं और कहाँ अब, करे-कराए पर जूते पड़े। हरियाणा में एक सांसद की तरफ चप्पल लहराती हुई आई और उससे पहले गृहमंत्री चिदम्बरम महाशय को जूते पड़े।

इन नेताओं की बेशर्मी देखिए कि उन्हे जूते पड़े मगर फिर भी वह खुश हैं और कह रहे हैं कि एक आजाद देश के लोग ही ऐसी जुर्रत कर सकते हैं। गालिब ने सही कहा है, ' कितने शीरीं हैं तेरे लब कि रकीब, गालियां खा कर भी बेमजा न हुआ।' वही हाल अपने नेताओं का हुआ कि जूते पड़ रहे हैं और वह फिर भी मुस्करा रहे हैं और जूते फैंकने वाले को आसानी से माफ कर रहे हैं।

राजनीति में इस दर्जे की बेहयाई व बेशर्मी बहुत कोशिश और मेहनत के बाद आती है। नेताओं पर हुई यह जूतों की बारिश उन्हे जरा भी उद्वेलित न कर पाई। ऐसा लग रहा था कि उन्हे उम्मीद ही नहीं बल्कि मन में एक पक्का खटका-सा भी था कि जनता के सामने झूठे वादे कर रहे हैं, वहाँ उनका स्वागत जूतों या डंडों से भी हो सकता है। सो ये चंट नेता इस तरह के औचक शारीरिक आक्रमण से बचाव का बहुत बढ़िया अभ्यास करके आते हैं। इसीलिए वे जूतों की सीधी बौछार को डक कर जाते हैं यानि अपना बचाव कर जाते हैं।

वैसे तो शरीफ आदमी को जूता दिखाना मात्र ही काफी होता है और बदमाश को चाहे सौ जूते पड़ भी जाएं तो भी वह बेशर्मी दिखाकर खीसें नपोरता रहता है। ऐसे ही तीन व्यक्तियों के बारे में एक बोध कथा है जिन पर चोरी का इल्जाम लग गया। पहला तो शर्म और हया के मारे गांव छोड़ गया। दूसरे को अपने चरित्र पर यह दाग इतना नागवार गुजरा कि उसने रात को कुएं में छलांग लगाकर जान दे दी। अगले दिन तीसरे व्यक्ति को पंचायत ने सजा दी कि इसका मुंह काला करके गांव में तीन बार घुमाया जाए।

जैसे ही उस व्यक्ति का पहला चक्कर पूरा हुआ, अपनी पत्नी को आंगन में खड़ी देखकर उसने आवाज लगाई, ' अरी बिमला, मुंह की कालिख धोने के लिए गर्म पानी तैयार रखना, इन लोगों को दो-एक चक्कर और लगवाकर बस आ ही रहा हूँ।' वही हाल है हमारे नेताओं का।

सारी दुनिया ने इन नेताओं को जुतियाते हुए देख रही है मगर वे कहते फिर रहे हैं कि भले ही सौ जूते मार लो मगर मत हमारे दल को ही देना। अर्थ यह हुआ कि यह जूता उन्हे उन की किसी गलती या अयोग्यता के कारण नहीं बल्कि एक उन्मादी के चर्चा पाने की उत्कंठा के कारण पड़ा। यह बात पूरी दुनिया में किसी को भी हजम नहीं हुई होगी।

5/2डी रेल विहार मंसा देवी
पंचकुला-134109 हरियाणा

राजनीतिक नैतिकता का सच

सुषमा जैन

राजनीति का तात्पर्य येन-केन-प्रकारेण संपदा संग्रह करना नहीं बल्कि आवश्यकताओं एवं सुख-सुविधाओं पर लगाम लगाते हुए अपने सद्संकल्पों और सद्भावनाओं के बल पर अधिक से अधिक ऐसे जन-कल्याणकारी कार्यों को करना है जिससे जनता भयरहित और द्वेष-मुक्त होकर राहत महसूस कर सके। परन्तु आज जिस प्रकार राजनीतिक नफे-नुकसान के फ्रेम में गढ़ लिए गये कुतर्कों की कतार से दबंगई और नंगई राजनीति को जन्म देने की कवायद हो रही है, जिस प्रकार स्वयं को राष्ट्रवादी और विचारनिष्ठ नेता मानने वाले लोग ही तुष्टीकरण के भूखे प्रेत को रबड़ी खिलाकर उसे दिन-प्रतिदिन खूंखार बनाते जा रहे हैं और जिस प्रकार एक के बाद एक आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ाकर लोकतंत्र को तानाशाही में बदलने के प्रयास हो रहे हैं, उसे देखकर मुझे यह लिखने में कोई संकोच नहीं कि विश्व के सबसे मजबूत लोकतंत्र माने जाने वाले भारतीय राजनीतिक क्षितिज से सामाजिक न्याय और नैतिकता का सूर्य तेजी से अस्तांचल की ओर बढ़ता जा रहा है।

अवसरवादियों की चारागाह, अपराधियों की पनाहगाह और नोट कमाने का जरिया बनती जा रही राजनीति से समता, सम्पन्नता और स्वराज जैसे गुण छिटक-कर दूर जा पड़े हैं और उसके स्थान पर हिंसा, छल-फरेब, जुगाड़, सिफारिश, घूस, अपहरण, गबन, घोटाले जैसे विकृत-विध्वंसक तत्त्वों में लिपटी राजनीति का कुरूप चेहरा उभरता दिखाई दे रहा है, जनतांत्रिक संस्थाएं ध्वस्त होती दिख रही हैं। सभी दल राजनीति की चौसर पर अपने-अपने दांव खेल कर अलगाववादी अस्मिताओं का पोषण कर रहे हैं। कोई मुस्लिम पत्ता खेल रहा है तो कोई हिन्दुत्व का कार्ड और कोई क्षेत्रीय अहसासों की बाजी लगाकर राजनीतिक गुमनामी से बाहर निकलने की कोशिश में हजारों वर्षों से चली आ रही सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता को तार-तार कर रहा है। इन्हें जनता के दुःख-दर्द से कुछ लेना-देना नहीं है बस जुगाड़ फिट कर किसी भी तरह सत्ता हासिल करना ही इनका मुख्य ध्येय है। दल-बदल विरोधी कानून में छिद्र का फायदा उठा एक निर्दलीय विधायक सुबह को इस्तीफा देता है, दोपहर को सत्तारूढ़ पार्टी अपना संख्याबल मजबूत करने के लिए उसे लपक लेती है और शाम को उसकी शान में पलक-पांवड़े बिछाकर उसे मंत्री बना देती है। इतना ही नहीं लोकसभा चुनाव हार गये महारथी भी बुद्धिजीवी-समाज सेवी बनकर किसी न किसी कोटे से 'बैक डोर' पार कर राज्यसभा में पहुँचा दिये जाते हैं। जितनी लूट अब मची है शायद अंग्रेजों के जमाने में भी नहीं रही होगी।

आये दिन सीमापार से आतंकी घुसपैठ की खबरें आती रहती हैं, परन्तु नेतागण हैं कि ''अबकी बार मार के देख' वाली नीति अपनाए हुए हैं। मणिपुर का सड़क अवरोध साठ दिनों बाद जाकर खुला, दैनिक आवश्यक वस्तुओं के अभाव में जनता तड़पती रही। किसी ने कोई सुध नहीं ली पिछले छह माह में नक्सली लगभग बीस बार बंद का आयोजन कर चुके हैं, मगर गुंडाराज के आगे सब मौन हैं। सरकारें जान-बूझकर वहशी, दरिंदें, खूंखार नक्सलियों पर कार्यवाही करने में इसलिए आनाकानी कर रही हैं क्योंकि ये चुनाव के समय वोटरों को धमकाने और उनसे वोट दिलाने के काम जो आते हैं। यह कहाँ की नैतिकता है कि नक्सली बर्बरता की सीमा लांघ मौत का प्लेटफार्म बन चुकी धरती पर लगातार मासूमों के खून की नदियां बहाते रहे और राजनेता चुप्पी साध लें? आखिर कब तक निहत्थे मासूमों और सुरक्षा बलों को कटवाया जाता रहेगा? कब तक दमन और हिंसक प्रतिरोध का खूनी खेल खेला जाता रहेगा? पिछले तीन माह में ही अनेक निर्दोषों सहित सैकड़ों जवान इन रक्त-पिपासु नक्सलियों के हाथों मौत के घाट उतारे जा चुके हैं। 29 जून 2010 को छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में ड्यूटी से पैदल लौट रही सी.आर.पी.एफ. की टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया जिसमें 27 जवान मारे गये और 7 बुरी तरह घायल हो गये। पहले 6 अप्रैल को दंतेवाड़ा में इसी प्रकार घात लगाकर हमला किया गया था, जिसमें 76 जवान एक साथ मारे गये थे। इसके बाद 8 मई को बीजापुर जिले में सुरक्षा बलों की बुलेट-प्रूफ गाड़ी बम से उड़ा दी गयी, जिसमें सी.आर.पी.एफ. के 8 जवान काल के गाल में समा गये। परन्तु शासन-प्रशासन मूकदर्शक बना रहा जिसका परिणाम एक और वीभत्स हादसे के रूप में सामने आया, जब 17 मई को नक्सलियों ने दंतेवाड़ा के पास एक यात्री बस को बारूदी सुरंग से उड़ा दिया। जिसमें 14

एसपीओ सहित 35 लोगों को मौत लील गयी। नेताओं के कानों पर तब भी जूं नहीं रेंगी, शायद किसी बड़े कत्ले आम का इंतजार था। आखिर उनकी मनोकामना पूरी हुई जब झाड़-ग्राम में रेल पटरी उड़ा दी गयी और मुंबई जा रही ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस ट्रेन के करीब 150 यात्री 28 मई को अकाल मृत्यु के ग्रास बन गये।

क्या कभी सोचा है कि एक व्यक्ति की मृत्यु से कितने लोगों का करुण क्रन्दन होता है जब एक साथ इतने लोगों का कत्लेआम होगा तो देश में कितनी चीख-पुकार मच रही होगी। यह दर्द वे ही जानते-समझते हैं जिन्होंने अपनो को खोया है, जो अनाथ होकर दर-बदर की ठोकरें खाने को मजबूर कर दिये गये हैं और जिनकी आंखों में जिंदगी भर के आंसू और सीने में जमाने भर का दर्द भर दिया गया है। आज जबकि नैतिकता के घनत्व को सहेजने की सबसे अधिक आवश्यकता थी, उसे सरे आम तार-तार किया जा रहा है। साम्प्रदायिक विद्वेषी और विश्वासघाती नेताओं के संरक्षण में अलगाववादी खुला खेल खेल रहे हैं। पश्चिम बंगाल का लालगढ़ खून से लाल है, सिंगूर सुलग कर सिसक रहा है, नन्दीग्राम पर नियंत्रण नहीं और कश्मीर जीवन के लिए कसमसाने के लिए विवश है।

लोगों को भय और भूख से तड़पाकर अपने कार्यकाल को उपलब्धि भरा, शानदार और ऐतिहासिक होने का ढिंढोरा पीटना क्या नैतिकता है? महंगाई से जर्जर होते समाज को बाजार भरोसे छोड़ देना क्या नैतिकता है? खुद एयर कंडीशन में पड़े रहें और जनता महंगाई के अग्निकुण्ड की तपिश में तपती रहे क्या यही नैतिकता है। जनता से बड़े-बड़े वायदे कर सत्ता में आते ही उन्हें विकास के नाम पर ठेंगा दिखा देना क्या नैतिकता है। 12वीं कक्षा में साईंस, कॉमर्स एक साथ पढ़ाने का ढकोसला कर 6 से 14 वर्ष के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का कानून पास हो जाने के बावजूद भी कोई हलचल न होना क्या नैतिकता है? चारों ओर फैली जातीय संघर्ष, निर्दयता की पराकाष्ठा और प्रशासन - राजनीति की अकर्मण्यता क्या नैतिकता है? हिसार और जींद जिलों की सीमा से लगे मिर्चपुर गांव में मात्र कुत्ता भोंकने पर एक दलित और उसकी विकलांग बेटी को उनके घर में बंद करके जिंदा जला देना तथा मृतकों का दो दिन तक संस्कार न होने देने पर शासन-प्रशासन की चुप्पी क्या नैतिकता थी। नेता ऐशोआराम भरी जिंदगी जीते रहें और गरीब की झोंपड़ी में जलने वाली कुप्पी में तेल भी न हो क्या यही नैतिकता है। गरीब के पास ओढ़ने को फटी चादर भी न हो और नेता नोटों की मालाएं ओढ़ते फिरें क्या यही है नैतिकता। अपने ही लोग घर की बहू-बेटियों को कत्ल करते रहें और कोई उफ तक न करे क्या यही है नैतिकता? यदि यही सब नैतिकता है तो फिर अनैतिकता क्या होगी?

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार, न्यू कृष्णा नगर, जैन बाग, वीर नगर, सहारनपुर - 247001 (उ.प्र.)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- हाईटेंशन तारों की चपेट में आने से आठ महिलाओं की मौत ने 28 बच्चों से उनकी मां का प्यार छीन लिया। गांव खेड़ला में पसरा मातम का माहौल बच्चों के चीखने की आवाज से और भी गहरा गया। इनमें से छह महिलाओं के बच्चे, अपनी अम्मी के लौटने का अब जिंदगी भर इंतजार करते रहेंगे। दो जवान बेटियों की शादी की तैयारियां कर रहे अब्बा उमर मोहम्मद इस मनहूस घड़ी को कोसते नहीं थक रहे थे। शनिवार सुबह गांव खेड़ला में ट्रैक्टर-ट्राली के हाईटेंशन तारों की चपेट में आने से आठ लोगों की मौत हो गई थी। इनमें छह शादी-शुदा थीं, जबकि दो लड़कियों की शादी की तैयारी में घरवाले जुटे थे।

- देश का मोबाइल बाजार दुनियाभर की कंपनियों के लिए आकर्षण का विषय बनता जा रहा है। यहां पर लोग बातचीत करते ही हैं लेकिन एसएमएस का भी रोजाना का औसत करीब 12 करोड़ का है। अगर इनकी लागत 25 पैसे भी मान ली जाए तो लगभग तीन करोड़ रुपए के रोज एसएमएस ही किए जा रहे हैं। देश का मोबाइल फोन का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन फोन करने की एक सीमा है। लोग जितना फोन कर रहे हैं उससे बहुत ज्यादा इस्तेमाल की उम्मीद नहीं है।

- छत्तीसगढ़ में गरीबी से आजिज होकर एक युवा आदिवासी महिला द्वारा बच्चों के साथ आत्मदाह करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि महिला ने पहले बच्चों पर मिट्टी का तेल उड़ेलकर माचिस मार दी, फिर अपने ऊपर डालकर आग लगा ली। गांव वाले पहुंचते तब तक तीनों का अंत हो चुका था।
  मामला रायपुर से 362 किलोमीटर दूर जशपुर जिले के भेलवा गांव का है। पुलिस ने बताया कि कमला बाई 27 साल पति। नहिर साय नागवंशी की तीन साल की एक बेटी और चार महीने का एक बेटा था। कमला और उसकी बेटी हफ्ते भर से बुखार से पीड़ित थे। उन्होंने दुःखी होकर आत्मदाह कर लिया।

हे महाप्रज्ञ! शत-शत वंदन

हिन्दी भवन दिल्ली में 22 अगस्त, 2010 को आचार्य महाप्रज्ञ के तैल चित्र अनावरण पर पढ़ी गयी कविता

डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण'

तुम जीवन का उजियार बने,
जैनत्व का दृढ़ आधार बने,
तुमको अर्पित युग का वंदन, हे महाप्रज्ञ! शत-शत वंदन।

प्रतिभा चेरी थी चरणों की,
था ज्ञान तुम्हारा नित अनुचर!
प्रज्ञा को साध बने सचमुच,
तुम महाप्रज्ञ हे गुरु मुनिवर।।
वाणी में दिव्य प्रभाव रहा,
अणुव्रत साकार हुए तुम में,
छाया जिसकी नित दे अमृत,
ऐसे बन गए ज्ञान-तरुवर।।
दिव्यता स्वयं साकार बने,
जन-जन के मन का प्यार बने,
यह धरा कर रही है वंदन, हे महाप्रज्ञ! शत-शत वंदन।

अपना कर कर्म-मंत्र पावन,
चल पड़े अहिंसा के रथ पर।
बढ़ते ही रहे निर्भय होकर,
आजीवन अणुव्रत के पथ पर।।
गुरु से पाया ऐसा गुरुत्व
हर जीवन का तुम केन्द्र बने,
'तुलसी' को पावन लक्ष्य बना,
चलते ही रहे सत् के पथ पर।।
शुचिता के तुम आगार बने,
साकार स्वयं आचार बने,
यह गगन कर रहा है वंदन, हे महाप्रज्ञ! शत-शत वंदन।

गंगा-सा जीवन जीकर नित,
अमृत सबको ही दे डाला।
बना काव्य रूप हे महाप्रज्ञ,
निज जीवन शब्दों में ढाला।।
अर्पित श्रद्धा जन-गण-मन की
बन गए प्रेरणा तुम गुरुवर,
अणुव्रत अनुशास्ता बनकर नित,
अणुव्रत को जीवन भर पाला।।
इस युग का तुम शृंगार बने,
जिज्ञासाओं का सार बने,
स्वीकारो जन-जन का वंदन, हे महाप्रज्ञ! शत-शत वंदन।

74/3, न्यू नेहरू नगर, रुड़की - 247667

भीख मांगने के लिए ट्रेनिंग-स्कूल

स्वामी वाहिद काज़मी

घटना यद्यपि कोच्चि में घटी, यह टिप्पणी 'अणुव्रत' पाक्षिक 1-15 अगस्त 2009 अंक में छपी है कि कोच्चि में एक भिखारी ने भीख मांगकर 13 लाख 80 हज़ार रुपये इकट्ठा कर लिए हैं। उसकी पत्नी सरकारी अस्पताल में नर्स है, बेटा चेन्नई में साफ्टवेयर इंजीनियर है। वह पिछले तीस साल से भीख मांगने के धंधे में लिप्त है। उसने एक मस्जिद के अधिकारियों की दया दृष्टि का फायदा उठाकर, उनसे 10 हज़ार रुपये नकद प्राप्त किए। स्थानीय लोगों को शक हुआ तो उसकी तलाशी ली गई। तलाशी में उसकी पोटली से 80 हज़ार रुपये नक़द मिले। लोगों ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया।

मैं नासमझ नहीं मानता कि पुलिस उस लखपति भिखारी के खिलाफ ज्यादा कुछ कर पाएगी। ले-दे कर मामला रफ़ा-दफ़ा हो जाएगा। हैरानी नहीं होनी चाहिए कि नर्स जैसे व्यवसाय में रत कमाऊ पत्नी और साफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर सपूत का बाप! भीख मांगे।

दोस्तो! प्राचीनकालीन, आवश्यकता-वश, भिक्षारन तथा मधुकरी से उत्पन्न भीख भी अब इस युग में छलांगों पर छलांगे लगाती व्यावसायिक स्तर पर चोखा धंधा है। बेशक आप यह जानकर भले थोड़ा हैरान-परेशान हों कि केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री द्वारा दी गयी सूचना के अनुसार, एक सर्वेक्षण के नतीजे में यह सच्चाई सामने आई कि देश की राजधानी दिल्ली में भीख मांगने वालों की औसत संख्या 58 हज़ार 5 सौ सत्तर है (ख्याल रखिए, यह सरकारी आंकड़ा है। वास्तविकता से जिसका कितना सम्बन्ध होता है, सर्वज्ञात है) रोचक बात यह कि उनमें से छह भिखारी बी.ए. पास हैं और चार भिखारी एम.ए. पास हैं। पता नहीं बी.ए., एम.ए. पास उन भाग्यशाली बा-रोजगार भिखारियों की आमदनी कितनी है? मगर उन बाईस भाग्यवान भिखारियों को तो आप भी धन-सम्पन्न कहेंगे जो भीख मांगकर दो सौ से लेकर पांच सौ रुपये रोजाना की मोटी कमाई कर लेते हैं। अब आप समझ सकते हैं कि जिस धंधे में एम.ए., बी.ए. पास युवक संलग्न हों वह कोई घास खोदने जैसा धंधा तो रह नहीं जाएगा फिर क्या व कैसा होगा? यह भी सुन लीजिएगा। फैसला बाद में कीजिएगा।

जैसा कि आप जानते होंगे। इस वर्ष यानी सन 2010 ई. में अपने देश भारत में राष्ट्रमंडल खेलों का भव्य और धमाकेदार आयोजन होने जा रहा है। ज़ाहिर है उसमें कई देश बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए अपने-अपने देश के नामी खिलाड़ियों को भेजेंगे। लिहाज़ा भिखारियों के एक प्रगतिशील ग्रुप ने तय किया है कि यह जो अनपढ़ बच्चे नाक पोंछते, गिड़गिड़ाते भीख मांगते हैं, इन्हें भी प्रगतिशीलता का पाठ पढ़ाया जाये। इसलिए उन्हें विदेशी भाषा में भीख मांगने के लिए कुछ कारगर वाक्य सिखाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

स्कूल खुल गया : इस प्रकार का एक स्कूल पटेल नगर (दिल्ली) स्थित कठपुतली कॉलोनी के भिखारी पतलू द्वारा चलाया जा रहा है। भीख मांगने वाले हर बालक को उसकी 'प्रतिभा' के मुताबिक़ कुशल बनाया जा रहा है। इसी प्रकार का एक और स्कूल, दिल्ली का विख्यात भिखारी राजू सांसी भी, रोहिणी क्षेत्र में चला रहा है। भीख मांगने के लिए पारंगत करने हेतु इस स्कूल के लिए 45 बच्चों व भिखारियों का चयन किया गया है। जिन्हें राजू सांसी अपने अनुभव बांटता है और भीख मांगने के आधुनिक तरीकों का प्रशिक्षण दे रहा है और अंग्रेजी भाषा में बच्चों को भीख मांगने के गुर सिखा रहा है।

इस प्रकार भीख मांगने वाले बच्चों को राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान दिल्ली की सड़कों पर उतारा जाएगा। ज़ाहिर है राष्ट्रमंडल खेल दिल्ली वाले भिखारियों के लिए भी एक बड़ा आयोजन होगा। जिसमें विदेशी भाषाओं के चुनींदा वाक्य बोलने में चुस्त-दुरुस्त बाल भिखारी भी मनोरंजक खेल-तमाशों में पारंगत होकर अपनी भूमिका अलग से निभाएंगे! इस बारे में, भीख मांगकर गुज़ारा करने वाली एक आठ वर्षीया बालिका से जब पूछा गया तो वह मानो खुश होकर बोली जब तक खेल शुरू होंगे, हम विदेशी भाषा बोलना सीख जाएंगे। यह उस एक बालिका का नहीं बल्कि विदेशी बोली बोलने में कुशल बाल-भिखारियों की टोली का प्रतिनिधि स्वर नहीं है क्या?

एक ओर देश की सरकारें बच्चों के हितार्थ बड़े-बड़े कार्यक्रम चलाने का दावा करती हैं। बाल-मज़दूरी पर प्रतिबंध लगाती हैं। नियम-उपनियम बनाती हैं। दूसरी ओर राजू सांसी और पतलू जैसे घाघ भिखारी राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन को भी भीख मांगने का चमकीला और मॉडर्न धंधा बनाने के लिए ट्रेनिंग स्कूल चलाते हैं। यह कोई विरोधाभास नहीं है! यह उस देश की सच्चाई है, जिसके लिए चमकीले नारों के दरम्यान एक दमकीला नारा 'शाइनिंग इंडिया' भी रहा है। अब देश के भावी नागरिक प्रगतिशील तरीके से भीख मांगकर देश का नाम चमकाएंगे। देश आगे बढ़ेगा। भीख का धंधा फले-फूलेगा।

10 राज होटल, पुल चमेली,
अंबाला छावनी - 133001 (हरियाणा)

राष्ट्रचिंतन से परे राजनीति

आशीष वशिष्ठ

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सत्तासीन व सत्ताहीन दलों को देश से अधिक अपनी व पार्टी की चिंता है। राष्ट्रीय मुद्दों, चिंताओं और समस्याओं से उनका कोई सरोकार नहीं है। जनता मंहगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, घटतोली, आंतकवाद, नक्सलवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रीयतावाद, जात-पात की राजनीति का दंश झेलने को मजबूर है, और राजनीतिक दल सत्ता की भूख मिटाने और कुर्सी पर जमे रहने की राजनीति में मशगूल हैं। सत्तासीन दल के साथ ही साथ विपक्षी दल भी देश व जनता के प्रति अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व भूलकर निज स्वार्थों की पूर्ति में लगे हैं। लोकतंत्र का ये वो शर्मनाक चेहरा है जिसकी कल्पना शायद हमारे संविधान निर्माताओं ने सपनों में भी नहीं की थी। लेकिन नेताओं व राजनीतिक दलों ने अपनी ओछी मानसिकता, स्वार्थ सिद्धि, पद लोलुपता, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार और घोटालों द्वारा लोकतंत्र के झण्डे को शर्म से झुका दिया है। लोकतंत्र का सीधा सादा अर्थ जनता का शासन होता है। जनता अपने वोट की शक्ति का प्रयोग कर अपने प्रतिनिधि को राजकाज की बागडोर सौंपती हैं। लेकिन आज कार्यपालिका, न्यायपालिका व विधायिका की तिगड़ी में जल-नींबू और चीनी के मिश्रण की भांति घाल-मेल है। वर्तमान में लोकतंत्र में लोक वे दीन हीन प्राणी हैं जो वोट डालने के बाद अगले चुनाव तक अपाहिज की भूमिका निभाने को विवश हो जाते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय नेताओं में राष्ट्रचिंतन की भावना सर्वोपरि थी। दल, प्रांत, जात-पात, अपना-पराया भूलकर राजनीति व नेता काम करते थे। आजादी के बाद अगले दो तीन दशकों तक लगभग हर क्षेत्र में जो तीव्र विकास हुआ वह राष्ट्रचिंतन का ही नतीजा था। तब राजनीति में लोग सेवाभाव से आते थे। नेता सादा जीवन, उच्च विचार का सिद्धान्त पूरे मनोयोग से धारण व पालन करते थे। उनका दिन-रात राष्ट्रचिंतन व समाजसेवा में बीतता था। लेकिन सत्तर-अस्सी के दशक तक आते-आते भ्रष्टाचार, पद लोलुपता, भाई-भतीजावाद, क्षेत्रीय राजनीति, जात-पात, भाषा की राजनीति का जो नवीन संस्करण सामने आया वह संकरित व संक्रमित निकला। दागी व अपराधी चरित्र के व्यक्तियों को टिकट देकर राजनीतिक दलों ने संसद में अपनी सीटे तो बढ़ा ली लेकिन राष्ट्रचिंतन, सामाजिक सरोकार, मुद्दे व नीतियों को अंधेरे कोने में डाल दिया। चुनाव के समय सारे सिद्धांत, नियम, कानून व नैतिकता किनारे रख कर सभी दल नंगई पर उतर आते हैं। अब नेता की परिभाषा बदल चुकी है। आज नेता वही है, जिसके पास लम्बी चमचमाती गाड़ियों का काफिला व दर्जन भर बंदूकधारी हो। अगर नेता का आपराधिक रिकार्ड हो तो सोने पे सुहागा समझो। अपवाद स्वरूप आज भी कुछ नेता ऐसे हैं जो सादगी पसंद व पाक-साफ छवि वाले हैं, लेकिन ऐसे नेताओं को आप उंगुलियों पर गिन सकते हैं। आज अधिकतर नेता पेशे से व्यापारी, उद्योगपति, किसी बड़े राजनीतिक घराने से जुड़े हुए या फिर आपराधिक छवि वाले हैं। आज राजनीति में लोग सेवा भाव से नहीं बल्कि अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा, कारोबार, काले कारनामों और गुनाहों पर पर्दा डालने या फिर किसी अन्य स्वार्थ को साधने की नीयत से आते हैं। ऐसी प्रवृत्ति व चरित्र के लोग राजनीति में आकर वो अपनी चिंता करेंगे या राष्ट्र की इसे सहज ही समझा जा सकता है।

वर्तमान संसद में उद्योगपति, अपराधी व अरबपति सांसदों की अच्छी खासी तादाद है। अधिकांश नेता जब पहली बार चुनाव लड़ते हैं तो उनकी हैसियत गाड़ी में पेट्रोल-डीजल भरवाने की नहीं होती है, लेकिन एक बार चुनाव जीतने के बाद हमारे प्रतिनिधि इतना पैसा जोड़ लेते हैं कि कुबेर भी शरमा जाए। आज छोटे-बड़े नेताओं के पास पेट्रोल पंप, गैस एजेंसी, रेलवे, लोक निर्माण विभाग के ठेके, स्टोन क्रेशर, बड़े बड़े उद्योगों के हिस्सेदारी व भागदारी, शराब कारोबार आदि में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से दखल है। आज राजनीति काली करतूतों, काले धंधों को ढकने का सबसे आसान व पुख्ता जरिया है। नेता नगरी में शामिल होते ही 'माफिया' 'माननीय' बन जाता है। जिस पुलिस के डर से जनाब भागे-भागे फिरते थे, वही पुलिस उनके आगे-पीछे चलने लगती है। आज नेता राष्ट्र कल्याण, उत्थान व विकास

की चिंता छोड़कर हर वह काम करते हैं जिसमें उनका व उनके दल का भला होता है। लोकतंत्र में जनता केवल 'वोट' बनकर रह गई है। वोट डालने के बाद जनता की औकात 'लौटे बाराती' जैसी होती है। राजनीति के चरित्र में आई गिरावट के कारण संसद की गरिमा व साख को तो बट्टा लगा ही है, वहीं लोकतंत्र व लोकतांत्रिक व्यवस्था भी शर्मसार हुई है। संसद में हमारे प्रतिनिधि जन समस्याओं व मुद्दों पर चर्चा करने की बजाए व्यर्थ में चिल्लाने, एक दूजे को भला बुरा कहने, हंगामा करने, विरोधियों की टांग खींचने आदि के अलावा कोई सार्थक या सकारात्मक कार्य नहीं करते हैं। वास्तविकता यह है कि पक्ष-विपक्ष सब मिलकर जनता की भावनाओं से खिलवाड़ करते हैं। सभी दल बारी-बारी सत्ता का सुख भोगते हैं, और बेचारी जनता आजादी के 63 सालों के बाद भी बिजली, पानी, सड़क नाली जैसी छोटी-मोटी सुविधाओं के लिए तरसती रहती है। लेकिन हमारे प्रतिनिधि हर साल अपना वेतन, सुविधाओं और भत्तों में भारी बढ़ोतरी करवाना नहीं भूलते हैं। लोकतंत्र में लोक खस्ताहाल है और हमारे निर्वाचित प्रतिनिधि जनता के खून-पसीने की कमाई से सरकारी मेहमान व दामाद बनकर गुलछर्रे उड़ाते हैं।

पंचवर्षीय व वार्षिक योजनाओं के माध्यम से विकास की दुहाई दी जाती है और सरकारी मशीनरी सत्तासीन दल के लाभ के लिए उनका जमकर ढोल भी पीटती हैं। सरकारी योजनाओं कार्यक्रमों में व्याप्त भ्रष्टाचार जग जाहिर है। ऐसा भी नहीं है कि इन वर्षों में विकास नहीं हुआ है लेकिन आंतरिक व बाहरी सहायता से जितनी धनराशि कागजों में खर्च की गई है अगर उसका आधा पैसा भी ईमानदारी से खर्च किया जाता तो देश में विकास की गंगा बहने लगती। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने खुद स्वीकार किया था कि केन्द्र से विकास कार्यो के लिए चला एक रूपया नीचे पहुँचते पहुँचते 10 पैसे में तब्दील हो जाता है। क्योंकि हमारे यहाँ विकास को राजनीति का चश्मा घूरता है। विकास न हो पाने के लिए सबसे बड़ी दोषी विधायिका ही है। विधायिका की देखा-देखी न्यायपालिका व कार्यपालिका भी अपनी दशा और दिशा तय करती है। जिनके हाथों में देश की बागडोर है जब वहीं देश की चिंता नहीं करेंगे तो नीचे वालों को क्या गर्ज पड़ी है कि वो देश व लोकहित में चिंतन करें या फिर ईमानदारी से कार्यों का निष्पादन करें। हमारे प्रतिनिधि चुनाव जीतने के बाद इतनी सुविधाएं भोगते हैं कि जिनकी आम आदमी कल्पना भी नहीं कर सकता है और मजे की बात यह है कि उन्हें ये सुविधाएं आम आदमी की गाढ़ी कमाई के बल पर उपलब्ध करवाई जाती हैं। संसद की कैन्टीन में खाने की थाली से लेकर हवाई यात्रा तक का सफर सब कुछ लगभग मुफ्त ही उन्हें उपलब्ध है वो भी सिर्फ इसलिए कि वो हमारे प्रतिनिधि हैं और उनके कंधों पर राष्ट्र व जनसेवा की अहम् जिम्मेदारी है। राष्ट्र कल्याण, उत्थान व विकास की कोई योजना हमारे नेताओं के पास नहीं है लेकिन खुद को अमीर बनाने के नुस्खों का पिटारा इनके पास है। देश में बढ़ता भ्रष्टाचार, क्षेत्रीयवाद, आरक्षण, जात-पात की राजनीति, धर्म-भाषा के झगड़े, सांप्रदायिक तनाव, नक्सलवाद, आंतकी घटनाओं आदि का स्थायी हल केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में नहीं हो पा रहा है। वास्तव में हमारे नेताओं को देश की परवाह नहीं है, राष्ट्र चिंतन की भावना से वो कोसों दूर हैं।

आज देश में आर्थिक विकास व वृद्धि को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया जाता है, उदारीकरण की नीतियों का खुला समर्थन भी किया जाता है लेकिन सच्चाई यह है कि आज भी हमारे देश की गिनती तीसरी दुनिया के विकासशील व पिछड़े देशों में होती है। मानव विकास सूंचकाक में हमारा स्थान निम्न है लेकिन भ्रष्ट देशों की लिस्ट में हमारा रैंक काफी ऊपर है। बेरोजगारी, भुखमरी, बढ़ती जनसंख्या, दहेज हत्याएं, अपहरण, नक्सली घटनाएं, आतंकी हमलें, पर्यावरण प्रदूषण वो चिंतनीय पहलू हैं जिन पर किसी का ध्यान नहीं जाता है। देश में लाखों टन अनाज की पैदावार के बाद भी उड़ीसा, महाराष्ट्र, बिहार, झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़ में आज भी लाखों लोग भुखमरी का शिकार हैं। किसान आत्महत्याएं करने को विवश हैं। देश से प्रतिभा पलायन रोके रूक नहीं रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां प्राकृतिक स्त्रोतों व सम्पदा का अंधाधुंध दोहन कोड़ियों के दामों में कर रही हैं। जिनके कंधों पर हम सब ने मिलकर देश चलाने की जिम्मेदारी छोड़ रखी है उन्हें तो इसकी परवाह ही नहीं है। उन्हें तो सब हरा ही हरा दिखाई देता है। आखिरकार देश का आम आदमी तो जाकर राष्ट्रहित के मुद्दों, चिंताओं, समस्याओं को सुलझाएगा नहीं ये काम तो नेताओं को ही करने हैं लेकिन वो तो फाइव स्टार सुविधाओं से लैस अपनी ही दुनिया में लीन हैं।

राजनीति का प्रथम व मुख्य उद्देश्य राष्ट्रचिंतन होना चाहिए, लेकिन वर्तमान में राजनीति, राजनेता व राजनैतिक दलों को इस पवित्र भावना से कोई लेना-देना नहीं है। आवश्यकता राष्ट्रचिंतन को मन से अपनाकर उस पर अमल करने की है। समय रहते राजनीति व नेताओं को राष्ट्रचिंतन के लिए गंभीर कदम उठाने होंगे क्योंकि लोकतंत्र की स्वस्थ परंपरा तभी कायम रह पाएगी जब राजनीति राष्ट्रचिंतन की ओर उन्मुख होगी। लोकतंत्र में वास्तविक राजा 'लोक' ही होते हैं और अगर राजा कष्ट में है तो लोकतंत्र भी संकट में पड़ जाएगा।

स्वतंत्र पत्रकार, बी-96, इंदिरा नगर, लखनऊ - 226016 (उ.प्र.)

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत का अर्थ है–नैतिकता। आज चहुँ ओर हाहाकार है। समूचा मानव समाज पीड़ित है अनैतिकता से। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचार माध्यम, शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर में लिप्त हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे अपना डेरा डाले बैठे हैं। हाँ, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर अँगुली उठाई है। हमारे साधन, शक्ति सीमित हैं। अँगुली निर्देश का यह क्रम न सिर्फ गतिशील रहे वरन् लोकव्यापी बने और अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो इस दृष्टि से अणुव्रत महासमिति के पास पूरे साधन हो यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

आने वाले पाँच वर्षों में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से संचालित हों और अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए इस दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना का वर्ष 2009–10 से प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं–

विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
विशेष अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग**

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रतापी अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु इस योजना का श्रीगणेश हुआ है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार–प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में अभी तक निम्न महानुभावों ने जुड़कर अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को निखारने में अपनी सहभागिता अंकित कराई है

- **विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री जुगराज नाहर	चैन्नई	2.	श्रीमती शांता नाहर	चैन्नई
3.	श्री बी.सी भलावत	मुम्बई	4.	श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5.	श्री कमलेश भादानी	तिरूपुर	6.	श्री मगन जैन	तुषरा

- **विशेष अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली	2.	श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा
3.	श्री जसराज बुरड़	जसोल	4.	श्री निर्मल नरेन्द्र रांका	कोयम्बतूर
5.	श्री गोविन्दलाल सरावगी	कोलकाता	6.	श्री ताराचंद दीपचंद ठाकरमल सेठिया	जलगांव
7.	श्री रूपचंद सुराना	गुवाहाटी	8.	श्री मूलचंद पारख (वैरायटी हॉल)	ऊंटी

- **अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री जी.एल.नाहर	जयपुर	2.	श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
3.	श्री मीठालाल भोगर	सूरत	4.	श्री बाबूलाल दूगड़	आसीन्द
5.	श्री गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमन्द	6.	श्री अंकेशभाई दोषी	सूरत
7.	श्री इन्द्रमल हिंगड़	भीलवाड़ा	8.	श्रीमती भारती मुरलीधर कांठेड़	दिल्ली
9.	श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट	उदयपुर	10.	श्री सुबोध कोठारी	गुवाहाटी
11.	श्री जयसिंह कुंडलिया	सिलीगुडी	11.	श्री राजेन्द्र सेठिया	गंगाशहर
12.	श्री सी.एल. सरावगी	झांसी			

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर हम सभी प्रयास करें स्वस्थ समाज संरचना के सपने को धरती पर उतारने का। इस क्रम में आपका त्वरित सहयोग प्राप्त हो यही अनुरोध है। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति के नाम से नई दिल्ली भिजवायें या केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक **0158101010750** में जमा करायें।

आपका सहयोग : हमारा आधार संबल

नैतिकता को बनाएं प्रतिरोधक शक्ति

हुकमचंद सोगानी

हम स्नान करते हैं तो शरीर स्वच्छ होता है। भोजन करते हैं तो शरीर स्वस्थ रहता है। जबकि आध्यात्मिक ज्ञान से जीवन का सर्वांगीण विकास होता है। अध्यात्म का रहस्य जब आंखों के समक्ष प्रकट होने लगता है, तो फिर प्रकृति के रहस्यों का भी शनैः-शनैः खुलासा हो जाता है। जीवन-मृत्यु के संदर्भ में मन में उठने वाले प्रश्न भी हल हो जाते हैं। कई लौकिक और अलौकिक रहस्यों से भी आवरण हटने लगता है। आध्यात्मिक ज्ञान से जिंदगी के विभिन्न अनुभवों का विश्लेषण कर सकते हैं। हमें यह जीवन किसलिए मिला है। यह जानने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान जिंदगी की राहों का प्रकाश है।

आध्यात्मिक ज्ञान की परिधि में आकर हम मोह रहित, भार मुक्त जीवन व्यतीत कर सकते हैं। वास्तविक जीवन में क्रियाकांडों का स्थान नगण्य है। सकारात्मक चिंतन-मनन और अध्ययन के अनुरूप दिनचर्या में आध्यात्मिक ज्ञान की गरिमा झलकती है। आध्यात्मिक धरातल पर आदर्श जीवन व्यतीत करने से हम सांसारिक तनावों की चपेट से बचे रहते हैं। जो व्यक्ति संसार में रहते हुए भी संसार को हृदय में नहीं बसाते, वे आध्यात्मिक मूल्यों को समझने का माद्दा रखते हैं।

आध्यात्मिकता और शुचिता एक-दूसरे के पूरक हैं। जैसे-जैसे हम स्वाध्याय के जरिए आध्यात्मिक गहराइयों में उतरते हैं। आचरण सात्विकता और शालीनता से ओतप्रोत होने लगता है। अध्यात्म ज्ञान संकटों का सामना करने की शक्ति और युक्ति देता है। धार्मिक स्वभाव के जरिए हम अहिंसक, नैतिक तथा अपरिग्रह के पथ से जुड़कर जीवन को सही दिशा देने में समर्थ होते हैं।

सही अर्थों में आधुनिक होने के लिए अपार धन और दिखावे की कामना के बजाय आध्यात्मिक तथा नैतिक गुणों को अपनाने की महती जरूरत है। आध्यात्मिक ज्ञान की रोशनी में हम संयमी, सात्विक, सत्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ और कर्त्तव्यनिष्ठ बन सकते हैं। यदि हम अर्जन के साथ विसर्जन के महत्व को भी समझ लें तो आसक्ति से अछूते रह सकते हैं। लोभ की अति से बच सकते हैं। धार्मिक और नैतिक मूल्यों से विश्वास की जड़ें मजबूत होती हैं। आध्यात्मिक ज्ञान से उपलब्ध सद्गुण हमें दुर्गुणों की हद से दूर रखते हैं।

भौतिक वस्तुएं तथा भोग-विलास की लालसा प्रमाद और उन्माद का कारण बनती हैं। अपनी वाणी, जिह्वा, मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखते हुए श्रेष्ठ जीवन की राहें प्राप्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक चिंतन हमें चिंताओं से मुक्त करते हुए स्वावलंबी जीवन की प्रेरणा दे सकता है। आत्मा में अनंत सुख, वीर्य, शक्ति और भक्ति के श्रोत मौजूद हैं। इन्हें अपने संज्ञान से प्राप्त करें। संज्ञान हमें पाप के पथ पर कदम रखने के पूर्व विचार करने का समय देता है। यही वह समय है जो हमें धर्म की ओर खींचकर धर्म की जड़ों को सींचता है। धर्म से अर्जित आज का पुण्य कल की वह पूंजी है जो दूनी होने वाली है।

नैतिकता को प्रतिरोधक शक्ति का स्वरूप देकर ही अनैतिक आचरण के छिद्र अवरुद्ध किये जा सकते हैं। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में विचार शुद्धि अभियान चलाकर ही बुराइयों और पापकर्मों को निरुत्साहित किया जा सकता है। भूख, अशिक्षा और अभावों के तले दबा समाज हिंसक, अनैतिक और भ्रष्ट आचरण की ओर उन्मुख होता है। रूढ़ियां, गरीबी, कुप्रथाएं तथा अत्याचार-कदाचार आदि के लिए कोई एक व्यक्ति दोषी नहीं है। सहचिंतन के साथ अच्छाइयों को अमल में लाकर ही हम समाज का उद्धार कर सकते हैं। धर्म, साहित्य, कला और संस्कृति आदि के प्रति संतुलित तथा सम्मानजनक दृष्टि जीवन शैली में गुणात्मक सुधार ला सकती है। आदर्श जीवन के धनी बहुत कम लोग हैं। दूरदर्शी संतों का जीवन प्रेरणास्पद है। विडंबना है कि अप्रतिम संतों के गुणों की रश्मियों से अवगुणों को तिरोहित करने के प्रति हम कितने उदासीन हैं?

धूम्रपान, नशे की लत, कुत्सित साहित्य, निम्नस्तरीय फिल्में युवा शक्ति को गर्त में धकेल रही हैं। घरों और चौपाल पर यदि सद्साहित्य एवं धर्मग्रंथों की चर्चा चलती रहे तो बुराइयों के परित्याग और अच्छाइयों के उपार्जन की राहें प्रशस्त होती रहें। विद्या के द्वारा यथेष्ट रूप से ज्ञान अर्जित करने का अधिकार सबको है। ज्ञान के समान कोई दूसरा नेत्र और उद्धारक धन नहीं है। इस ओर सकारात्मक सोच के साथ सतत् प्रयासों की जरूरत है।

कुविचारों में नरक है। सुविचारों में स्वर्ग है। पुण्य अथवा पाप के अर्जित कर्ता हम स्वयं हैं। हिंसा और अधर्म के कारण को देखते हुए तटस्थ न रहें। इनका प्रतिकार करें। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चतुष्टय पुरुषार्थ हैं। जीवन के संदर्भ में इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। नैतिक और संतुलित आचरण के लिए आध्यात्मिक ज्ञान अनिवार्य है। लौकिक जीवन के निर्णयों में सत्य का मंडन तथा असत्य का खंडन करें। निकृष्ट को चुनौती देने के लिए उत्कृष्ट विचारों का प्रसार करें। आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा लक्ष्य की ओर निहारें। जिंदगी के माध्यम से वह कार्य कर दिखाएं जो नजीर बनकर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो जाएं।

श्रीपाल प्लाजा, द्वितीय माला,
फ्लैट नं. 201, महावीर मार्केट,
नई पेठ, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

इंदिराजी का अंतिम अणुव्रत कार्यक्रम

मुनि राकेशकुमार

इंदिरा गांधी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह एक राष्ट्रभक्त वीर महिला थी। इससे सभी विचारक एकमत हैं। उन्होंने पंडित नेहरू की पुत्री होने के कारण ही नहीं बल्कि अपने प्रतिभा-कौशल और अद्भुत सूझ-बूझ से ही प्रधानमंत्री पद को सुशोभित किया था। उन्हें भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री होने का सौभाग्य मिला। इंदिराजी पंडित नेहरू के समय से ही अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों से परिचित रहीं। सन् 1962 में मेरा चातुर्मास दिल्ली में था। उस समय अणुव्रत विद्यार्थी परिषद् दिल्ली में बहुत सक्रिय थी। उन दिनों विद्यार्थी संगठनों द्वारा सारे देश में तोड़-फोड़ मूलक हिंसात्मक प्रवृत्तियां बहुत हो रही थी। दिल्ली में ये समस्या बहुत उग्र रूप में थी। विद्यार्थियों का ध्यान हिंसात्मक प्रवृत्तियों से मोड़ने के लिए अणुव्रत विद्यार्थी परिषद् की ओर से विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों में अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गये। हंसराज कॉलेज (सब्जी मंडी) में एक विराट विद्यार्थी सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में इंदिरा गांधी ने भाग लिया। उन्होंने राजनीति से हटकर विद्यार्थी अणुव्रत नियमावली के आधार पर अपना सुंदर वक्तव्य दिया। मैंने कहा किसी भी समस्या का समाधान हिंसा के द्वारा नहीं हो सकता। हिंसा से प्रतिहिंसा का जन्म होता है। किसी भी समस्या का समाधान स्थायी व समुचित रूप से अहिंसा में निहित होता है। विद्यार्थियों को अहिंसात्मक तरीके से अपनी समस्याओं को सुलझाना चाहिए। कार्यक्रम की समाप्ति पर उपस्थित छात्रों ने विद्यार्थी अणुव्रत नियमावली स्वीकार की जिससे कॉलेज का वातावरण अणुव्रतमय बन गया। इंदिराजी ने अनेकों बार अणुव्रत के आयोजनों में भाग लिया था।

भगवान महावीर की 25वीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर गुरुदेव श्री तुलसी का दिल्ली में ऐतिहासिक व दीर्घकालीन प्रवास हुआ। उस प्रवास के अंतर्गत अम्बेडकर स्टेडियम में आचार्य तुलसी के सान्निध्य में विराट् अणुव्रत सम्मेलन आयोजित किया गया। इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री के रूप में उस सम्मेलन में भाग लिया। इंदिराजी के मन में गुरुदेव तुलसी के प्रति असीम आस्था व श्रद्धा का भाव था। वह अपने मन की अंतरंग बात गुरुदेव के समक्ष निःसंकोच रखती व मार्गदर्शन प्राप्त करती।

इंदिराजी से थोड़ी दूरी पर खड़े हुए अपने सचिव धवन को बुलाया और कहा मुनिजी से बातचीत कर सारा कार्यक्रम समझ लो। धवन ने डायरी देखकर कहा इतना जल्दी संभव नहीं होगा। इंदिराजी को आचार्यश्री जी से भेंट करने की इच्छा है। आगे किसी अन्य कार्यक्रमों के अवसर पर कोई कार्यकर्ता सम्पर्क करे। यद्यपि इंदिराजी का बाद में आचार्यश्री से साक्षात्कार नहीं हो सका, किन्तु उनके मन में आचार्यश्री के व्यक्तित्व और विचारों के प्रति गहरी निष्ठा और श्रद्धा थी। उस दिन की बातचीत में मुझे इसकी झलक बहुत अधिक मिली।

एक दिन मेरा इंदिराजी से वार्तालाप का समय निश्चित था। हम दो संत समय पर उनके कार्यालय पहुँचे। हमारे पहुँचते ही उन्होंने अपने सेक्रेट्री धवन को बाहर भेजकर हमें अपने कार्यालय में बुला लिया। उनके पास कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता बैठे थे। उन्होंने इंदिराजी से एक प्रसिद्ध स्वामीजी के बारे में कहा विदेशों में हमारे राष्ट्र के प्रति नाना प्रकार की भ्रांतियां व्याप्त हैं। उनके निवारण के लिए यदि उनका उपयोग करें तो अच्छा रहेगा। इंदिराजी पहले तो मौन रहीं पर जब उन्होंने दूसरी बार वही बात दोहराई तब इंदिराजी ने कहा ऐसे साधु-संत बहुत हैं। उन पर अधिक भरोसा उचित नहीं है। इंदिराजी साधु-संतों की भक्त थीं, पर उन्हें कसौटी पर भी कसती थीं इस प्रसंग से मुझे यह अनुभव हुआ। गुरुदेव तुलसी के प्रति उनकी जो श्रद्धा व अणुव्रत के प्रति जो उनकी अभिरुचि थी वह एक सुविचारित थी।

इंदिराजी का अंतिम अणुव्रत कार्यक्रम

इंदिराजी के देहवसान से कुछ महीने पूर्व प्रधानमंत्री निवास पर अणुव्रत समिति की ओर से राष्ट्रीय एकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। मुनि वत्सराज और मैं दोनों ही अपने साथी संतों के साथ उसमें सम्मिलित हुए थे। संयोग से हमारे पहुँचने में थोड़ा विलम्ब हो गया। अन्य आमंत्रित व्यक्ति पहुँच चुके थे। इंदिराजी अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गयीं। उस दिन उन्हें सचिवालय जल्दी जाना था। परिस्थिति के अनुसार कार्यकर्ताओं ने गोष्ठी का आरंभ कर दिया। संयोजकीय वक्तव्य के पश्चात् इंदिराजी का भाषण शुरू हो गया। दो-चार क्षणों के बाद हम पहुँच गये। हमें देखते ही प्रधानमंत्री ने

कहा मुनिजी! आ गये हैं। हम सब निकट पहुँचे। उन्होंने करबद्ध प्रणाम किया। इंदिराजी के पास एक कुर्सी रखी हुई थी। उनके सचिव धवन ने मुझे कहा यहाँ आपके बैठने की व्यवस्था है। दूसरे मुनि लोग उधर बैठेंगे। मैंने कहा ऐसा नहीं हो सकता। जब मैंने अकेले वहाँ बैठने के लिए इंकार कर दिया तो इंदिराजी ने स्वयं दूसरी कुर्सियां वहाँ रखने के लिए कहा। हमारे बैठने तक इंदिराजी ने अपना भाषण बंद रखा और अपने स्थान पर उसी रूप में खड़ी रही। प्रधानमंत्री के उस शिष्टाचार और नम्र व्यवहार से उपस्थित सभी व्यक्ति बहुत प्रभावित हुए।

इंदिराजी कार्यक्रम की सम्पन्नता तक उपस्थित रही तथा अणुव्रत और राष्ट्रीय एकता से संबंधित सारे विचारों को बहुत ध्यान से सुना। मैंने अपने भाषण में राष्ट्र में व्याप्त साम्प्रदायिक अशांति के लिए राजनैतिक नेताओं को अधिक उत्तरदायी बताया इस कटु सत्य को भी उन्होंने सर हिलाकर प्रसन्नता से स्वीकार किया।

कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों ने घड़ी दिखाकर समय अधिक हो जाने की सूचना भी दी, पर इंदिराजी अत्यन्त शांति और गंभीरता से बोलती रही। मुनि वत्सराज, निर्मला देशपांडे आदि अनेक विशिष्ट व्यक्तियों के वक्तव्य हुए। लगभग 125 भाई-बहनों ने गोष्ठी में भाग लिया।

इस संगोष्ठी के कुछ ही दिन पूर्व रामचन्द्र विकास की प्रेरणा से इंदिराजी के साथ एक परिचर्चा का कार्यक्रम था। साम्प्रदायिक अशांति के संदर्भ में धर्म और राजनीति का सम्बन्ध क्या होना चाहिए, इस पर मैंने विचार रखे थे। इंदिराजी ने चर्चा के बीच में कहा यह बिल्कुल ठीक है। धार्मिक संगठनों को सक्रिय राजनीति से दूर रहना चाहिए, तथा राजनैतिक संगठनों को भी धार्मिक मामलों में दखल नहीं करना चाहिए। महात्मा गांधी, पंडित नेहरू के भी यही विचार थे। परिचर्चा की सम्पन्नता पर मैंने प्रधान मंत्री से कहा हम लोग शीघ्र ही दिल्ली से पदयात्रा कर आचार्य श्री तुलसी के दर्शनार्थ राजस्थान जा रहे हैं। यदि आपका कोई संदेश हो तो हम आचार्यश्री से निवेदन कर देंगे। इंदिराजी ने करबद्ध होकर कहा देश की वर्तमान समस्याओं पर एक बार आचार्य श्री तुलसी से विचार विमर्श करना चाहिए। आपको बहुत बड़ा आध्यात्मिक बल प्राप्त होगा। इंदिराजी ने कहा आचार्यश्री का क्या कार्यक्रम है? मैंने कहा अभी आचार्य तुलसी अपनी जन्मभूमि लाडनूं में हैं। वहाँ जैन विश्व भारती के नाम से एक विराट संस्थान का प्रारंभ हुआ है। बसंत पंचमी के अवसर पर बीदासर (चुरू-राजस्थान) में मर्यादा महोत्सव का विशाल कार्यक्रम समारोह संपन्न होने वाला है। यदि उस अवसर पर आप समय निकाल सकें तो उचित होगा। इंदिराजी ने थोड़ी दूरी पर खड़े अपने सचिव धवन को बुलाया और कहा मुनिजी से बातचीत कर सारा कार्यक्रम समझ लो। धवन ने डायरी देखकर कहा इतना जल्दी संभव नहीं होगा। इंदिराजी को आचार्यश्री जी से भेंट करने की इच्छा है। आगे किसी अन्य कार्यक्रमों के अवसर पर कोई कार्यकर्ता सम्पर्क करे। यद्यपि इंदिराजी का बाद में आचार्यश्री से साक्षात्कार नहीं हो सका, किन्तु उनके मन में आचार्यश्री के व्यक्तित्व और विचारों के प्रति गहरी निष्ठा और श्रद्धा थी। उस दिन की बातचीत में मुझे इसकी झलक बहुत अधिक मिली।

अणुव्रत अधिवेशन

9, 10, 11 अक्टूबर 2010 को सरदारशहर में

अणुव्रत महासमिति का वार्षिक अधिवेशन आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में **बानीदा-बास, ओसवाल पंचायत भवन, रामदेव मंदिर के सामने, सरदारशहर, चुरू-राजस्थान** में 9, 10, 11 अक्टूबर 2010 को आयोजित हो रहा है। सर्व स्थानीय/ जिला/प्रादेशिक अणुव्रत समितियों, कार्यसमिति सदस्यों, साधारण सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि अधिवेशन में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करावें। विश्वास है कि आप हमारे अनुरोध को स्वीकार कर अपने प्रतिनिधियों के आगमन की अग्रिम सूचना अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली को शीघ्र भिजवाएं, ताकि आवास एवं अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा सकें।

विजयराज सुराणा, महामंत्री

बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

लोकमान्य गोल्छा
अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)
फोन नं. : 4250001/4249939 (D)
फैक्स : 00977-1-4249723

बढ़ती आयु बुढ़ापा

शिवचरण मंत्री

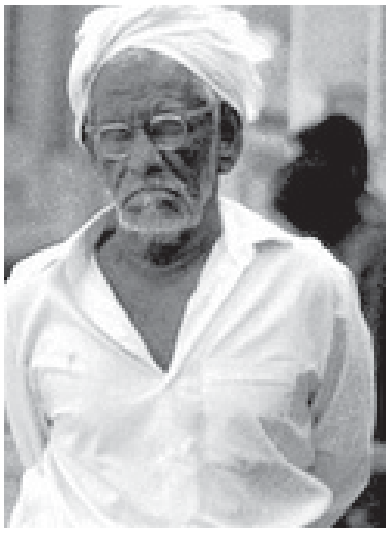

मेरे मित्र मोहन की पत्नी का पैंतालीस वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। मेरे मित्र की आयु पचास के आस-पास थी। मृतक अपने पीछे बारह वर्षीय पुत्री और दस वर्षीय पुत्र छोड़ कर गई थी। मोहन ने पंद्रह वर्ष तक अपने बेटे-बेटी का बड़े स्नेह से पालन-पोषण किया, उनको पढ़ाया-लिखाया, स्वस्थ बनाया, उनकी गृहस्थी की देखभाल की और अपने दायित्व का बड़ी लगन से निर्वहन किया। बेटा अपने परिवार के साथ महानगर में रहने लगा तो बेटी अपनी ससुराल में अपना जीवन बिताने लगी। मोहन को अकेलापन सताने लगा तो उन्होंने अपनी एक समव्यस्क विधवा-महिला सरोज के साथ पुनर्विवाह कर लिया।

मोहन के विवाह को लेकर समाज में कई चर्चाएं हुई। किसी ने मोहन के अकेलेपन को समाप्त करने को उचित बताया तो बुजुर्गों, धर्म-नेताओं ने इसकी कटु आलोचना की।

वर्तमान की बदली सामाजिक परिस्थितियों में मोहन का पुनर्विवाह अकेलेपन की मानसिक व्यथा से मुक्ति पाने के लिए भले ही उचित मान लिया जाए, परन्तु वृद्धावस्था में पुनर्विवाह आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति ही कर सकते हैं। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य सही है कि मानव को अपना अकेलापन दूर करने की आजीवन आवश्यकता रहती है। परन्तु अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए पैंसठ, सत्तर वर्ष की आयु में पुरुष या स्त्री को पुनर्विवाह करना उचित नहीं है। क्योंकि इस उम्र में जीवन का क्या भरोसा? संभव है कि पुनर्विवाह के कुछ समय पश्चात फिर वृद्ध अथवा वृद्धा चल दे तो तीसरी, चौथी बार पुनर्विवाह कहाँ संभव है।

भारत की संयुक्त परिवार की प्रथा पश्चिमी सभ्यता के कारण टूटती जा रही हैं। एकल परिवार प्रथा का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। एकाकी परिवार में आज की व्यस्तता में बूढ़े व्यक्ति की उसकी इच्छानुसार सार-संभाल करना संभव नहीं। वृद्ध जहाँ शारीरिक रूप से अशक्त होकर पल-पल सहायता की आकांक्षा रखता है वहीं अपने अहं, झूठे मान-सम्मान को बनाए रखना है तो दूसरी ओर समयाभाव, क्षमाभाव के कारण वहीं परिवारजन भी उससे दूर रहने का प्रयास करते हैं और महानगरों में उसे वृद्धाश्रम में भोजने का प्रयास किया जाता है।

आदर्श तो यही है कि वृद्धावस्था में बूढ़ा, बुढ़िया अपनी संतान के साथ ही रहें विशेष रूप से जब वे अकेले रह जावें। यदि पति-पत्नी दोनों ही जीवित हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हों तो भी अपने स्वभाव में परिवर्तन, जो कठिन है, पर असंभव नहीं, लाए और अपने परिवार के साथ ही रहे। तदुपरांत संतान होने पर या संतान के साथ न रहने की स्थिति में स्त्री की अपेक्षा पुरुष को अकेले रहने की आदत डालने के पचास वर्ष की आयु से कर देने चाहिए। क्योंकि स्त्री भावुक, सहनशील, परिस्थिति अनुकूल पुरुष की अपेक्षा अधिक सक्षम होती है। जैसे स्त्री किसी भी स्थिति में कभी भी रसोई में घुसकर अपनी चाय बनाकर पी सकती है और दूसरों को भी पिला सकती है। जबकि पुरुष के लिए यह काम असंभव ही होता है।

क्षमाशील व भावुक नारी पौते-पौती, नाती-नातिन आदि छोटे नन्हे-मुन्नों की सार-संभाल पुरुष की अपेक्षा अच्छी तरह से करने के अलावा रुग्ण होने पर भी पुरुष की अपेक्षा अधिक शारीरिक श्रम कर सकती है।

पुरुष वर्ग पचास वर्ष से पूर्व अकेलेपन को दूर करने और अपने स्वाभिमान को यथावत बनाए रखने के लिए सर्वप्रथम अपने स्वभाव में परिवर्तन करे। इस आयु में यदि आदमी बाल स्वभाव बना ले तो सभी समस्याएं ही समाप्त हो जाएंगी। बालक-सा अबोध, सदा प्रसन्न रहने वाला बन जावे तो जीवन मंगलमय हो जावे।

प्रयास किया जाये कि वृद्धावस्था में वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो।

शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक परिवेश अनुसार वृद्धावस्था से पूर्व अपनी एक या दो अभिरुचियों को विकसित करे तो वृद्धावस्था में इन अभिरुचियों में खोकर, तल्लीन रहकर अपना अकेलापन भूल सकेगा। ये अभिरुचियां हो सकती हैं। पढ़ना, लिखना, संगीत, वाद्ययंत्रों का अभ्यास, समाज सेवा आदि।

संक्षेप में स्त्री की अपेक्षा पुरुष को सुखद बुढ़ापे की तैयारी पचास वर्ष की आयु पूर्व प्रारंभ कर देनी चाहिए। ऐसा करने से उसका बुढ़ापा मंगलमय होगा।

श्रीनगर (अजमेर-राजस्थान)
305025

आत्मज्ञान और अहिंसक समाज

डॉ. सरोजकुमार वर्मा

वार्ताकार : डॉ. दीपक कुमार

अँधेरे से बचना है तो हमें रोशनी की चिंता करनी होगी और रोशनी के लिए दीये को सुरक्षित रखना पड़ेगा। इस प्रकार अद्वैतवाद की स्थापना से अहिंसा स्वतः निःसृत होती है। इसलिए मेरा जोर आत्मबोध पर इतना अधिक है। किसी भी पद्धति के द्वारा जब हमें आत्मज्ञान हो जाता है तो साथ ही साथ हमें यह भी ज्ञान हो जाता है कि दुनिया में कोई दूसरा नहीं है।

(डॉ. सरोज कुमार वर्मा चर्चित कवि और दर्शनशास्त्री है। इनकी रचनाएं, कविताएँ वागर्थ, अक्षरा, काव्या, दैनिक हिन्दुस्तान आदि पत्र-पत्रिकाओं में छपती रही हैं और इनके दार्शनिक निबंध तथा शोध-पत्र गांधी मार्ग, परामर्श, दार्शनिक त्रैमासिक, समकालीन भारतीय साहित्य, आजकल, योजना, दैनिक हिन्दुस्तान आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। अणुव्रत (पाक्षिक) में भी लगातार लिखते रहते है। डॉ. वर्मा प्राध्यापक हैं तथा बी.आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर (बिहार) के दर्शनशास्त्र विभाग में दर्शनशास्त्र पढ़ाते हैं। सरलता-सहजता उनके व्यक्तित्व का अवियोज्य पहलू है। इसीलिए एक दिन बातों-बातों में, क्योंकि वे हमेशा शांति और अहिंसा की बातें किया करते है, उनसे एक साक्षात्कार के लिए समय मांगा वे तुरंत तैयार हो गए और एक दिन समय निकालकर कोई दो घंटे तक मेरे साथ बात-चीत की। बात-चीत मुख्यतः 'अहिंसक समाज रचना में लेखकों की भूमिका' विषय पर केन्द्रित रही। प्रस्तुत है उनसे हुई उसी बात-चीत का प्रमुख अंश) *- डॉ. दीपक कुमार*

♦ डॉ. दीपक - अहिंसक समाज को आप कैसे परिभाषित करेंगे?

डॉ. सरोज वर्मा - वह समाज, जिसमें आदमी का केवल आदमी के साथ नहीं बल्कि सभी प्राणियों के साथ आत्मीय संबंध हो, उसे अहिंसक समाज कहा जा सकता है। उस समाज में प्रेम, करुणा, दया, त्याग, सहिष्णुता, उदारता आदि गुण सर्वोपरि होंगे। उसमें हम जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों के साथ भी आत्मीय संबंध रखेंगे। केवल हम अपना हित नहीं बल्कि सबका हित सोचेंगे, चाहेंगे और उसके लिए प्रयास भी करेंगे। आपने महावीर की अहिंसा देखी होगी। उनकी अहिंसा केवल मानव तक सीमित नहीं थी वह पशु-पक्षी, वनस्पति आदि जगत के लिए भी थी। इसलिए उनकी अहिंसा सम्पूर्ण थी। मैं इसी सम्पूर्ण अहिंसा को केन्द्र में रखकर अहिंसक समाज को परिभाषित करना चाहता हूँ। एक ऐसा समाज जिसके प्राण में अहिंसा हो, जिसके रग-रेसे, मांस-मज्जा सब में अहिंसा हो।

और देखिए! ऐसे व्यापक अहिंसक समाज के बगैर अब मानव अस्तित्व बच भी नहीं पायेगा। आज मानव पर और न केवल मानव पर बल्कि सम्पूर्ण प्राणी जगत पर जैसा संकट आ पड़ा है, वैसा संकट पहले कभी नहीं था। यह संकट पर्यावरण का है। पर्यावरण वह परिस्थिति है जिसमें प्राणी का अस्तित्व संभव हो पाता है। आज वही नष्ट हो रहा है। फिर तो किसी प्राणी के होने की संभावना ही नहीं बच पायेगी। इसलिए आज का समय सर्वाधिक संकट का है और इस संकट से मुक्ति अहिंसक समाज की स्थापना से ही हो सकती है।

♦ डॉ. दीपक - इस 'अहिंसक समाज' की संरचना में लेखकों की क्या भूमिका हो सकती है?

डॉ. सरोज वर्मा - इसमें लेखकों की अहम भूमिका हो सकती है। लेखन एक बहुत बड़ा दायित्व है। अपने प्रति भी और समाज के प्रति भी। दरअसल जो अपने प्रति दायित्वपूर्ण नहीं हो सकता वह किसी के प्रति दायित्व पूर्ण नहीं हो सकता है। इसलिए सबसे पहले तो लेखकों को अपने प्रति दायित्वपूर्ण होना पड़ेगा। उसे यह स्पष्ट होना पड़ेगा कि वह क्यों लिख रहा है? फिर इससे यह बात भी आएगी कि वह किसके लिए लिख रहा है? लेखन कोई मौज-मस्ती नहीं है। सैर-सपाटा नहीं है कि जब जो जी में आया लिख दिया, जैसा आया लिख दिया। लेखन एक गहन दायित्व है। बड़ी जिम्मेवारी है। हम क्यों लिखते हैं? किसके लिए लिखते हैं? इसकी व्यापक चिन्ता है। इसके बगैर लेखन का कोई मतलब नहीं होता।

इस सन्दर्भ में मैं एक बात और कहना चाहूँगा। अभी का लेखन इस बात का पक्षधर है कि लेखक का दायित्व समाज की स्थिति को यथावत चित्रित कर देना है, उसकी बेहतरी के लिए किसी विकल्प की तलाश नहीं करनी है। यह पाठकों के स्वविवेक पर छोड़ देना चाहिए। मैं इससे सहमत नहीं हूँ। यह ठीक है कि पाठकों के पास स्व-विवेक है और वह अपना रास्ता निकाल लेगा। लेकिन तब, जब रास्ता निकालने का विवेक उसके पास है तो क्या समस्या को समझने का विवेक उसके पास नहीं है? फिर आप उसका चित्रण क्यों करते हैं? आप दिखाएंगें तो वह देखेगा, ऐसा तो नहीं है। वह भी समाज में रहता है। समाज की स्थितियों से रू-ब-रू होता है। फिर आप उस पर क्यों लिख रहे हैं? जब आप समस्याओं के बारे में लिख रहे हैं तो उनके समाधान के बारे में भी अपनी तरह से, अपने स्तर से सोचिए, लिखिए। वरना यह तो पत्रकारिता हो जायेगी। किसी घटना को वैसे ही लिख देना, जैसे वह घटी

है, निर्लिप्तता से, तटस्थ होकर, हालांकि पत्रकार भी एकदम इतना तटस्थ नहीं होता, मगर यह पत्रकारिता है, घटना को वैसे ही चित्रित कर देना फोटोग्राफी है। लेखन तो तब होता है जब उस घटना से आपका चित्त आंदोलित होता है, और आप उसके बदत्तर पक्ष को विश्लेषित कर बेहतर विकल्प की तलाश करते हैं।

इसी विकल्प की तलाश में लेखक के दायित्व का पता चलता है। वह समाज की घटनाओं स्थितियों आदि के प्रति कितना जागरूक है? कुछ गलती हो रही है तो उसे सही करने के लिए क्या कुछ किया जा सकता है? यदि इन सबकी चिन्ता लेखक को नहीं है तो फिर उसके लेखन की जरूरत क्या है? फिर उसे क्यों लिखना चाहिए? और क्यों किसी को उसे पढ़ना चाहिए? मेरे विचार से अहिंसक समाज संरचना इस समय की सबसे बड़ी जरूरत है। इसलिए लेखकों की उसमें अहम् भूमिका हो सकती है।

♦ डॉ. दीपक - मगर वे अपनी इस भूमिका का निर्वाह कैसे कर सकते हैं?

डॉ. सरोज वर्मा - लेखन के द्वारा। लेखन ही उसका औजार है। उसी के द्वारा वह कोई भी संरचना कर सकता है। मगर यहाँ एक बात मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ कि यह लेखन जीवन से निःसृत होना चाहिए। 'जीवन में निःसृत होना चाहिए' का मतलब हम जैसा लिखते है वैसा ही जीयें। बल्कि उसे ऐसा कहिए कि हम जैसा जीते हैं वैसा ही लिखें। अभी के अधिकांश लेखन में यह अंतर है। अधिकांश लेखक की कथनी-करनी में समानता नहीं होती। वह लिखता कुछ है, जीता कुछ है। उसके व्यक्तित्व और वक्तव्य में गहरी खाईं होती है। मैं कई लेखक संगोष्ठियों में गया हूँ। काव्य पाठ के लिए मंचों पर गया हूँ। मंच पर तो कवि, लेखक महोदय बड़ी ऊँची-ऊँची बाते करते हैं, नैतिकता की ईमानदारी की, अपरिग्रह की, मूल्यों की मगर अपने निजी जीवन में वे सब भूल जाते हैं। मानों हाथी के दाँत दिखाने के लिए और खाने के लिए और होते है। उनका सब लिखना-कहना दूसरों के लिए होता है। अपने लिए कुछ भी नहीं। मैं कई लोगों से अलग से मिलता हूँ कि आप जिस जीवन की जिन जीवन मूल्यों की चर्चा मंच पर कर रहे थे वैसा जीवन, मूल्य खुद क्यों नहीं जीते? तो बड़ी हिकारत से मुझे देखकर व्यंग्य भरी हँसी हँस देते हैं। मानो मैं कोई अल्पबुद्धि का आदमी कोई असंगत सवाल कर रहा हूँ। मगर ऐसे तो कोई तब्दीली नहीं हो सकती। इसीलिए तो ऐसे लेखकों का, ऐसे लेखन का कोई प्रभाव समाज पर नहीं पड़ता। आखिरकार आम आदमी मूर्ख नहीं है। उसे सदाचार और नैतिकता का उपदेश देकर खुद अनैतिकता और दुराचार में लिप्त होकर आप उस पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ सकते। क्यों सादगी और ईमानदारी सिर्फ उसी के लिए होनी चाहिए, आपके लिए नहीं? आपको तो सारी सुविधाएं चाहिए। महँगा खाना, वातानुकूलित मकान, चार पहिए की सवारी, टी.वी., फ्रीज, वगैरह-वगैरह सब चाहिए और दूसरे को सादा जीवन, उच्च विचार। ऐसे पूर्ण अहिंसक समाज की संरचना संभव नहीं है। यदि वाकई आप अहिंसक समाज की संरचना के लिए प्रतिबद्ध हैं तो आपकी कथनी-करनी में समानता तो होनी ही चाहिए, तभी आप समाज के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकते हैं।

♦ डॉ. दीपक - तो इसके लिए क्या किया जाना चाहिए? यह कथनी-करनी की समानता कैसे स्थापित होगी?

डॉ. सरोज वर्मा - केवल बात से नहीं होगी। चर्चा-मशवरा से नहीं होगी। गोष्ठी-आयोजन से नहीं होगी। इसके लिए प्रयोग करना पड़ेगा। केवल बात से होनी होती तो कबकी हो गई होती। हजारों वर्षों से हम इसकी चर्चा कर रहे हैं। मगर यह नाटक आज भी बदस्तूर कायम है। आज हर आदमी केवल अच्छा दीखने की कोशिश कर रहा है। अच्छा होना कोई नहीं चाहता। अच्छा नहीं होने और अच्छा दीखने की इसी कोशिश में सारी गड़बड़ी पैदा हो रही है। यह गड़बड़ी केवल बात से दूर होने वाली नहीं है। इसके लिए तो प्रयोग करना पड़ेगा। अपने को जानने का। अपने भीतर जाने का। हम हमेशा बाहर ही जीते है। भीतर कभी जाते ही नहीं। इसलिए हमें सारी दुनिया का ज्ञान है। चाँद-सितारों का ज्ञान है, मंगल-सूर्य का ज्ञान है। सिर्फ अपना ज्ञान नहीं है स्वज्ञान नहीं है। इस स्वज्ञान के बगैर ही यह सारा पाखंड पैदा होते है। इसलिए इस पाखंड से मुक्ति भी स्वज्ञान से ही मिल सकती है। और यह स्वज्ञान प्राप्त करने के कई उपाय है। कई विधियाँ है। जैसे अणुव्रत में प्रेक्षाध्यान है, ओशो का सक्रिय ध्यान है, पतंजलि का योग है और इसी तरह ध्यान- साधना की और भी कई विधियाँ- पद्धतियाँ है। किसी भी पद्धति से, जो जिसको अनुकूल लगे अभ्यास करना चाहिए। ये सारी पद्धतियाँ स्वज्ञान की पद्धतियाँ हैं, आत्मबोध के मार्ग है। इनके द्वारा जब हमें आत्मज्ञान की प्राप्ति हो जायेगी, तब हमें यह भी ज्ञान हो जायेगा कि दूसरा, वास्तव में कोई दूसरा नहीं है। वह मेरा ही फैलाव है। स्व का ही विस्तार है। फिर किसी दूसरे की हिंसा वास्तव में अपनी ही हिंसा है।

देखिये! मैं जो कह रहा हूँ, अहिंसा के बारे में उसकी दार्शनिक स्थापना है। आपने शंकराचार्य का अद्वैतवाद पढ़ा होगा। अद्वैतवाद के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और वह सभी में व्याप्त है। यह जो आत्मा है वह ब्रह्म ही है और वह सभी में एक ही है। अद्वैत है। द्वैत देह के स्तर पर है और रहेगा। शरीर सबके अलग-अलग होंगे। होते है। मगर उनके भीतर की आत्मा सबकी एक होती है और वही मूल है। फिर जब सभी का मूल एक ही है तब यह जो दूसरा दिखाई पड़ रहा है, फिर उसको किसी प्रकार का कोई कष्ट पहुँचाना प्रकारान्तर से अपने को ही कष्ट पहुँचाना है। उसकी क्षति, उसका दुःख-तकलीफ, उसका अहित, अपनी ही क्षति, अपना ही दुःख-तकलीफ, अपना ही अहित है। आप इसको ऐसे समझिये कि दीये तो

अलग-अलग होते हैं मगर उसमें से निकलने वाली रोशनी अलग-अलग नहीं होती। वह एक ही होती है। इसलिए यदि दीये को क्षति पहुँचाते हैं तो हम रोशनी को ही बाधित करते हैं और रोशनी को बाधित करना अँधेरे को आमंत्रित करना है। यदि हमें अँधेरे से बचना है तो हमें रोशनी की चिंता करनी होगी और रोशनी के लिए दीये को सुरक्षित रखना पड़ेगा। इस प्रकार अद्वैतवाद की स्थापना से अहिंसा स्वतः निःसृत होती है। इसलिए मेरा जोर आत्मबोध पर इतना अधिक है। किसी भी पद्धति के द्वारा जब हमें आत्मज्ञान हो जाता है तो साथ ही साथ हमें यह भी ज्ञान हो जाता है कि दुनिया में कोई दूसरा नहीं है। फिर किसकी हिंसा करनी? किसलिए हिंसा करनी? फिर हिंसा के लिए कोई स्थान ही नहीं बचता। अहिंसा स्वतः निःसृत होती है। इसलिए मेरा कहना है कि लेखक भी यदि इस आत्मबोध को प्राप्त कर लिखें तो उनका लेखन पाखंड से मुक्त होगा। फिर उनकी कथनी-करनी में समानता होगी। फिर वे केवल अच्छा लिखेंगे ही नहीं, अच्छा बनेंगे भी और तब वे अहिंसक समाज की संरचना में अपनी महती भूमिका का निर्वाह प्रतिबद्धता से कर सकेंगे। यह केवल बात से नहीं होगा, प्रयोग से होगा।

♦ डॉ. दीपक - डॉ. साहब! आप जो कह रहे हैं उसकी पूरी पृष्ठभूमि आध्यात्मिक है। इसी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। अणुव्रत में अहिंसा प्रशिक्षण की एक प्रक्रिया है। यह आप जो पद्धति वगैरह की बात कर रहे हैं, यह कुछ उसी तरह की बात लगती है। तो क्या लेखकों को भी अहिंसा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए?

डॉ. सरोज वर्मा - देखिये! 'प्रशिक्षण' शब्द से मेरी थोड़ी असहमति है। प्रशिक्षण का अर्थ होता है बाहर से सिखाया जाना। जबकि अहिंसा बाहर से सिखायी जाने वाली कोई चीज नहीं है। वह भीतर से निःसृत होती है। इसलिए मेरे हिसाब से प्रशिक्षण की जगह 'प्रतिफलन' शब्द ज्यादा सही होगा। यदि प्रशिक्षण देना हो तो ध्यान, योग का दीजिए। साधना की अन्य पद्धतियों का दीजिए। अहिंसा तो उनके द्वारा प्राप्त बोध का परिणाम है। वह प्रतिफलित होगी तभी सम्पूर्ण व्यक्तित्व का हिस्सा बन पायेगी। अभी उसे केवल बाह्य नीति समझकर आचरण में उतारने का प्रयास किया जाता है। इसी से पाखंड पैदा होता है। अहिंसा की मात्र चर्चा होती है किसी के जीवन में उतरती नहीं। यह उतर सकती है आत्म बोध से क्योंकि अहिंसा आत्मबोध का प्रतिफलन है। हाँ! आप की इस बात से मैं अवश्य सहमत हूँ कि लेखकों को भी स्वज्ञान के लिए किसी-न-किसी विधि का अभ्यास जरूर करना चाहिए।

वैसे संभवतः अणुव्रत का यह 'अहिंसा प्रशिक्षण' भी इसी तरह की कोई विधि है। मैं अणुव्रत के कुछ लेखक सम्मेलनों में गया हूँ। वहाँ भी केवल सैद्धान्तिक चर्चाएँ होती है। कोई व्यावहारिक प्रयोग नहीं होते। क्या ही बेहतर होता कि लेखक आधे घन्टे- पन्द्रह मिनट के लिए ही सही मौन बैठते, अपने भीतर उतरने का प्रयास करते। उन सम्मेलनों में महाप्रज्ञ होते थे, आचार्य महाश्रमण होते हैं, मुनि सुखलाल होते हैं, मुनि किशनलाल होते है। पन्द्रह मिनट-आधा घन्टा इन सिद्ध पुरुषों की उपस्थिति में अहिंसा प्रशिक्षण दिया जायें, अपने भीतर उतरने के अभ्यास करवायें जाएँ, तो श्रेयस्कर होगा। क्योंकि इनकी उपस्थिति में, इनके सान्निध्य में, इनके उर्जा क्षेत्र में भीतर उतरना और आसान होगा। तो मुझे लगता है कि किसी भी गोष्ठी सम्मेलनों के पूर्व और केवल लेखकों का ही नहीं किसी का भी हो, राजनेता का हो, फिल्म अभिनेता का हो, व्यापारी, चिकित्सक, शिक्षक, वकील किसी का भी हो, सम्मेलन गोष्ठी के पूर्व और बाद में पन्द्रह मिनट-आधा घन्टा ध्यान-साधना का कोई प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। और कुछ नहीं हो तो कम-से-कम मौन बैठने का तो अभ्यास किया ही जा सकता है। ताकि इन लोगों को भी भीतर जाने का कोई रास्ता मिले। कोई सूत्र, कोई स्वाद। फिर जिस अहिंसक समाज की बात आप कर रहे हैं, उसकी स्थापना सरल-सहज हो जायेगी।

♦ डॉ. दीपक - बहुत देर से हम लोग इस चर्चा में बैठे हुए हैं। आपका बहुत समय मैंने लिया है। बस एक व्यक्तिगत सवाल और? आप किसी ध्यान-साधना का नियिमित अभ्यास करते हैं क्या?

डॉ. सरोज वर्मा - (हँसते हुए) यह बात मेरे कहने की नहीं है। आपके महसूस करने की है। यदि मेरे व्यक्तित्व में कोई व्यवस्था आपको नजर आती है, कोई संगति दिखाई पड़ती है, मेरी अकारण उपस्थिति से आप कहीं आह्लादित होते हैं, मेरा होना आपको अच्छा लगता है, तो समझिये करता हूँ। और यदि ऐसा नहीं होता तो समझिए नहीं करता। दरअसल वक्तव्य वहीं देना पड़ता है, जहाँ व्यक्तित्व से वह बात प्रकट नहीं होती जो आप कहना चाहते हैं। यदि वह बात व्यक्तित्व से प्रकट होती है तो फिर वक्तव्य देने की कोई जरूरत नहीं होती। अब जैसे फूल खिलता तो उसे कहना नहीं पड़ता कि मैं खुशबू बिखेर रहा हूँ। दीया जलता है तो उसे कहना नहीं पड़ता कि मैं रौशनी बाँट रहा हूँ। बस लोगों को खबर हो जाती है खुशबू की। रोशनी की। बस वैसे ही कोई ध्यान-साधना करता है, प्रेमिल है, अहिंसक है, करुणावान है तो उसे कहने की जरूरत नहीं है। मगर यहाँ त्रासदी है कि लोग अपने बारे में वह वक्तव्य देने लगते हैं, जो वे होते नहीं। यहीं से सारी अनैतिकता, सारा पाखंड शुरू हो जाता है। इसलिए मेरा मानना है कि किसी को अपने बारे में कोई वक्तव्य नहीं देना चाहिए। उसे अपने व्यक्तित्व से वह प्रकट होने देना चाहिए, जो वह है। इसीलिए मैंने कहा कि यह आपके महसूस करने की बात है। मैंने कसौटी दे दी। आप परख लीजिए।

द्वारा : भरत प्रसाद सिन्हा
सिन्हा वाटिका, सुभाषनगर, पथ सं. 5,
भगवानपुर चौक, मुजफ्फरपुर-842001

श्वास रोग और प्रेक्षा चिकित्सा :5:

मुनि किशनलाल

आचार्य मुद्रा : आचार्य मुद्रा चरित्र का प्रतीक है। आचार्य धर्म को जानने और धर्म का आचरण करने वाले होते हैं।

मंत्र **''ऊँ ह्रीं णमो आयरियाणं''** का दीर्घ उच्चारण करें। दोनों हाथ आनन्द केन्द्र (हृदय) के पास रहें। आंखें कोमलता से बन्द करें।

1. श्वास भरते हुए हाथों को कन्धे के पास ले जावें। सीना फैलावें। भावना करें चरित्र मेरे भीतर प्रवेश कर रहा है।

2. श्वास छोड़ते हुए हाथ जोड़ें।

लाभ :

1. हृदय और फेफड़े मजबूत बनते हैं।
2. श्वसन तन्त्र स्वस्थ बनता है।
3. आचरण में शुद्धता आती है।
4. प्रसन्नता बढ़ती है।

उपाध्याय मुद्राः उपाध्याय मुद्रा ज्ञान प्रतीक है।

उपाध्याय एक ऐसा पद है जहाँ से बारह अंगों का ज्ञान प्राप्त होता है। इसलिए उपाध्याय साधना करने, कराने में लीन रहते हैं। सूत्रों के अध्ययन और अध्यापन में निरन्तर रत रहने वाले उपाध्याय धर्मशासन की बहुत बड़ी सम्पदा है।

मंत्र **''ऊँ ह्रीं णमो उवज्झायाणं''** का दीर्घ उच्चारण करें। दोनों हाथ आनन्द केन्द्र (हृदय) के पास रहें। आँखें कोमलता से बन्द रखें।

1. श्वास भरते हुए हाथों को ऊपर ले जाएं। अंगूठे और तर्जनी को पान के आकार में बनाकर, गर्दन को मोड़कर दृष्टि आकाश की ओर करके हाथों को देखें।

2. श्वास छोड़ते हुए हाथों को नीचे लावें।

लाभ :

1. कमर और गर्दन का दर्द दूर होता है।
2. आँखों की ज्योति और मानसिक संतुलन बढ़ता है।
3. थायरायड, पैराथायरायड, पीनियल और पिच्यूटरी ग्रन्थियों के स्राव सन्तुलित होते हैं। इससे ज्ञान, विवेक, चेतना एवं अतीन्द्रिय क्षमता का विकास होता है।
4. श्वास के सन्तुलन में लाभकारी है।

मुनि मुद्रा : मुनि मुद्रा समता, साधना का प्रतीक है।

मुनि मुद्रा से अहंकार का विसर्जन होता है तथा मानवता के प्रति प्रेम, मैत्री एवं करूणा का भाव विकसित होता है। संयम के प्रति सर्वथा समर्पित व्यक्ति मुनि होता है।

मंत्र **''ऊँ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं''** का दीर्घ उच्चारण करें। दोनों हाथ आनन्द केन्द्र (हृदय) के पास रहें। आँखें कोमलता से बन्द रखें।

1. श्वास भरते हुए हाथों को ऊपर ले जाएं। हाथों से अंजुली बनावें। (बिना हाथों को मोड़े)

2. श्वास छोड़ते हुए विनम्रता से आगे झुकें, ललाट जमीन पर लगावें।

लाभ :

1. एड्रीनल ग्रन्थि पर दबाव पड़ने से क्रोध शान्त होता है।
2. चेहरे एवं मस्तिष्क पर रक्त की मात्र अधिक पहुँचने से चेहरा सुन्दर तथा स्मरण शक्ति का विकास होता है।

अन्त में निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि दमा रोग का आसन-प्राणायाम के नियमित अभ्यास से उपचार संभव है। इसके अतिरिक्त इसके उपचार में आहार विवेक भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

–समाप्त

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण द्वारा उद्घोषित

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

(26 सितंबर 2010 से 2 अक्टूबर 2010)

अणुव्रत आंदोलन न सम्प्रदाय है न कोई परम्परा। असाम्प्रदायिक और शाश्वत धर्म है अणुव्रत। इसके परिपार्श्व में चरित्र विकास, नैतिक और अहिंसक मूल्यों की पुर्नस्थापना का अभियान विगत 60 वर्षों से गतिशील है। अणुव्रत मानव जाति के विकास के लिए पथ दर्शन है जिसकी शाश्वत अपेक्षा है। अणुव्रत कार्यक्रमों की शृंखला में इस वर्ष अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का क्रम निम्नानुसार निर्धारित हुआ है

- **26 सितंबर, 2010 रविवार : पर्यावरण शुद्धि दिवस**

  शुद्ध पर्यावरण स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण चेतना को जन-जन तक पहुँचाया जाये यही इस दिवस का उद्देश्य है। इस दिन स्थान-स्थान पर यात्राएं, भाषण, चित्रकला, नाटक, गायन प्रतियोगिताएं, प्रदर्शनियां आयोजित की जाएं।

- **27 सितंबर, 2010 सोमवार : जीवन विज्ञान दिवस**

  शिक्षा का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप जीवन में निखरे। शिक्षा को मूल्यपरक बनाने के लिए जीवन विज्ञान विकल्प है। इस दिन शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों, शिक्षक-शिक्षिकाओं को जीवन-विज्ञान की जानकारी दी जाये एवं प्रयोग भी करवाये जायें।

- **28 सितंबर, 2010 मंगलवार : अणुव्रत प्रेरणा दिवस**

  जन-जन को अणुव्रत आचार-संहिता, वर्गीय आचार-संहिता की जानकारी दी जाए। अणुव्रती बनो अभियान संचालित हो। अणुव्रत समिति का गठन किया जाए। 'अणुव्रत' आधारित भाषण, निबन्ध, चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं।

- **29 सितंबर, 2010 बुधवार : सांप्रदायिक सौहार्द दिवस**

  दुनिया में संप्रदाय सदा रहे हैं, आगे भी रहेंगे। आवश्यकता है कि संप्रदाय सापेक्षता को समझा जाए तथा इससे जुड़ी संकीर्णता, द्वेष, दुर्भावना आदि को दूर किया जाए। विभिन्न संप्रदाय के प्रमुखों तथा अनुयायियों के साथ मिलकर संप्रदायों की सापेक्षता पर विचार किया जाए एवं सांप्रदायिक सौहार्द का वातावरण बनाया जाए। इस दिवस पर सर्वधर्म सम्मेलन, गोष्ठियां, सेमिनार आदि आयोजित हों।

- **30 सितंबर, 2010 वृहस्पतिवार : नशामुक्ति दिवस**

  नशा नाश का द्वार है। आज नशे के अनेक प्रकार प्रचलित हैं। सभी लोगों को नशे के दोषों, हानियों की जानकारी दी जाये तथा नशामुक्ति का संकल्प कराया जाए। इस कार्यक्रम में चिकित्सकों, नशामुक्ति से संबंधित सरकारी विभागों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं का सहयोग भी लिया जाए। नुक्कड़-नाटक, गीत, प्रदर्शनी, भाषण आदि के विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

- **01 अक्टूबर, 2010 शुक्रवार : अनुशासन दिवस**

  अनुशासन व्यक्ति और समाज का मूलाधार है। अनुशासन के अभाव में जीवन बिखर जाता है। इस दिन अनुशासन के संदर्भ में जानकारी दी जाये एवं अनुप्रेक्षाओं के प्रयोग भी करवाए जायें।

- **02 अक्टूबर, 2010 शनिवार : अहिंसा दिवस**

  वर्तमान में बढ़ती हुई हिंसा को रोकने के लिए अहिंसा का स्वर अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर जन-जन में मुखरित हो। इस दिन गोष्ठियों, सभाओं, शिविरों द्वारा अहिंसा के स्वर को जन-जन तक पहुँचाया जाए। अहिंसा में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों/संगठनों से संपर्क किया जाए एवं सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में विविध आयोजन

सरदारशहर, १३ अगस्त। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने धम्मपद और उत्तराध्ययन के आध्यात्मिक सूत्रों का विवेचन किया। इस अवसर पर मुम्बई के सूफी संत शफी वासन ने कहा अहिंसा यात्रा के समय मैं आचार्य महाप्रज्ञ के साथ निकटता से जुड़ा। मुझे उनका आशीर्वाद और सद्भाव मिला। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा, शान्ति और साम्प्रदायिक सद्भाव का विलक्षण कार्य किया। हमने उनके सान्निध्य में श्रीडूंगरगढ़ में सूफीज्म और जैनिज्म पर सम्मेलन किया। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में वह कार्य आगे बढ़ता रहेगा, ऐसा मुझे विश्वास है।'

प्रेक्षा पुरस्कार

मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष द्वारा प्रेक्षा पुरस्कार सोहनलाल सिंघवी (मुम्बई) को प्रदान किया गया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के विमलकुमार नाहटा ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन कर सिंघवी को प्रदान किया। राहुल कठोतिया ने पुरस्कार राशि का चैक एवं हंसराज डागा ने साहित्य उपहृत किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक सुमतिचन्द गोठी ने प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से मोमेन्टो भेंट किया। सोहनलाल सिंघवी ने अपने स्वीकृत भाषण में श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। कान्ता सिंघवी ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। पुरस्कार समर्पण कार्यक्रम का संयोजन अशोक नाहटा ने किया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'सिंघवी उपासक हैं, प्रेक्षा प्रशिक्षक हैं एवं ज्ञानशाला में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। प्रेक्षा पुरस्कार के लिए इनका चयन सर्वथा उपयुक्त है। ये निष्ठा, मनोबल और आध्यात्मिक भावना के साथ संघ को अपनी सेवाएं देते रहें।

महासभा प्रतिनिधि सम्मेलन

१४ अगस्त। आज से पूज्यवर के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय सभा प्रतिनिधि सम्मेलन प्रारंभ हुआ। इस सम्मेलन में दो सौ सभाओं के छह सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्यवर के महामंत्रोचार से हुआ। मुनि नीरजकुमार ने मंगल गीत का संगान किया। महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिंडालिया ने प्रस्तुत सम्मेलन की प्रासंगिकता के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा एवं प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमति गोठी ने आगंतुक प्रतिनिधियों का स्वागत किया। इस अवसर पर कुमुद नोरतनमल बच्छावत ने जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय में निर्माणाधीन कालू कन्या महाविद्यालय के लिए राशि इक्यावन लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की।

मुनि धनंजयकुमार ने प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा 'विकास के लिए जड़ों को सींचना आवश्यक है।' मुनिश्री ने सभा प्रतिनिधियों से नशामुक्त जीवन जीने का आह्वान किया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा महासभा धर्मसंघ की सबसे पुरानी संस्था है। इस संस्था के साथ पूरा समाज जुड़ा है। इस सम्मेलन का चिंतनीय बिन्दु है करें चिंतन, कैसे लाएं परिवर्तन। महासभा चिंतन की बात करती है और यह जरूरी भी है। परिवर्तन के संदर्भों को विश्लेषित करते हुए साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा

- जो अपरिवर्तनीय है, उसे स्वीकार करें।
- जो परिवर्तनीय है, उसमें परिवर्तन करें।
- जो अस्वीकार्य है, उससे अपने आपको हटा लें, अलग कर लें।

हमारे विचारों में क्रान्ति के स्फुलिंग आएं। मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए समाज को आगे बढ़ाएं। जो कर रहे हैं, उसकी समीक्षा करें और कुछ नया भी सोचें। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष तक कुछ परिवर्तन दृष्टिगत हों तो कहा जा सकेगा महासभा अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रही है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा महासभा प्रतिनिधि सम्मेलन की थीम है **'करें चिंतन : कैसे लाएं परिवर्तन।'** परिवर्तन में विवेक जरूरी है। परिवर्तन कहाँ अपेक्षित है, कहाँ नहीं, इसका विवेक होना चाहिए। जो परिवर्तनीय है, जहाँ परिवर्तन अपेक्षित है, परिवर्तन वहीं होना चाहिए, अपरिवर्तनीय में नहीं। इसके लिए विवेकयुक्त चिंतन और निर्णय करना चाहिए। 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय' यह परिवर्तन का आदर्श वाक्य है। मैं परिष्कार को अधिक महत्त्व देता हूं। हर व्यक्ति चिंतन करे मैं जहाँ हूँ, क्या वहाँ परिष्कार की अपेक्षा है? परिष्कार करते-करते व्यक्ति ऊंचा उठ जाता है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा समाज की महनीय संस्था है। उसे समाज में परिवर्तन और परिष्कार पर ध्यान देना चाहिए। जो परिवर्तनीय है, उसमें साहस के साथ आगे बढ़ना पड़ता है। साहस का दीप झंझावातों में भी मार्ग प्रशस्त कर देता है।' आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'महासभा समाज की मां है। मां अपनी संतान का लाड़-प्यार भी करती है और जरूरत होने पर उसे दंडित भी करती है। जो सहिष्णु बनकर अपना परिष्कार कर लेता है, वह अपना विकास कर सकता है। स्थानीय सभाएं जिन समस्याओं का समाधान न कर सकें, उनको समाधान के लिए महासभा को सौंप दें।'

सभा प्रतिनिधियों को व्यसनमुक्त और चरित्रनिष्ठ बनने की अभिप्रेरणा देते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा 'तेरापंथ समाज की एक विशिष्ट पहचान है। वह पहचान अपने धर्मसंघ और शास्ता के प्रति पूर्ण समर्पण, अनुशासन और चरित्रनिष्ठा के कारण है। इसमें किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आनी चाहिए। सभा संस्थाओं के पदों पर आने वाले लोगों का नशामुक्त होना जरूरी है। नशामुक्त नहीं हैं तो समझें सभा के पदाधिकारी बनने की अर्हता भी नहीं है। धार्मिक संस्था का अधिकारी बनने के लिए नशामुक्त होना पहली शर्त है।' सम्मेलन में रात्रि भोज के परिहार की अभिप्रेरणा देते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा 'धर्मसंघ के किसी भी सम्मेलन में रात्रि भोज का सर्वथा वर्जन होना चाहिए। पूज्यप्रवर के इस आह्वान पर तत्काल प्रायः पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों ने रात्रि भोजन का परित्याग कर दिया। आचार्य महाश्रमण ने कहा 'सम्मेलन में जो प्रतिनिधि संभागी बने हैं, उन्हें जाते समय संतोष की अनुभूति हो, तभी सम्मेलन की सार्थकता है।'

कार्यक्रम में अहमदाबाद सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मदनलाल कोठारी ने आचार्य महाश्रमण से अहमदाबाद यात्रा का अनुरोध किया। कोठारी ने वहाँ चल रही धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों की अवगति भी दी।

प्रामाणिकता अधिक अपेक्षित है : आचार्य महाश्रमण

१५ अगस्त। सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का दूसरा दिन। कार्यक्रम का प्रारंभ समणी सत्यप्रज्ञाजी के मंगल संगान से हुआ। महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चंडालिया ने महासभा की गतिविधियों की जानकारी दी। समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने 'सफल नेतृत्व के घटक तत्त्व' विषय पर अपने विचार रखे। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने प्रेरक अभिभाषण में 'आराधक श्रावक, कार्यकर्ता श्रावक', प्रभावक श्रावक और विकासयोगी श्रावक' इन चार कसौटियों के आधार पर श्रावक की पहचान को विश्लेषित किया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने अभिभाषण में समाज की युवापीढ़ी को जोड़ने की अपेक्षा पर बल देते हुए कहा किशोर और युवावर्ग सक्रियता से जुड़ें तो बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है।'

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में स्वतंत्रता के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा 'आज स्वतंत्रता दिवस है। यह हर भारतवासी के लिए गौरव की अनुभूति का दिन है। आजादी के संदर्भ में एक बात हमेशा याद रहे कि स्वतंत्रता अच्छी है, किन्तु स्वच्छन्दता ठीक नहीं। लोकतांत्रिक प्रणाली को बहुत अच्छा माना गया है। लेकिन कर्त्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के अभाव में यह प्रणाली अपने वांछित परिणाम नहीं दे सकती। बहुत जरूरी है, आजाद मुल्क के हर नागरिक में संयम और अनुशासन की भावना जागे।'

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा अनुशासन का महत्त्व रहा है। संघ मर्यादा और अनुशासन में चलता है तो निर्बाध स्थिति बनी रहती है। हमारा श्रावक समाज काफी विनीत है। संघ और शास्ता के प्रति श्रावक समाज की अटूट निष्ठा और समर्पण है। उनकी श्रद्धा-भक्ति आत्मतोष की अनुभूति कराती है। श्रावक समाज गुणसंपन्न है। ऐसे सम्मेलनों से एक प्रेरणा मिलती है।'

आचार्य महाश्रमण ने कुछ प्रमुख करणीय कार्यों के लिए दिशा-निर्देश करते हुए कहा

- ***अणुव्रत आन्दोलन के प्रसार में सभाएं मनसा, वाचा, कर्मणा योगदान देती रहें।***
- ***ज्ञानशाला एक उपयोगी उपक्रम है। सभाएं इस गतिविधि को संचालित करती हैं। प्रशिक्षण में महिलाओं का भी पूरा योगदान रहता है।***
- ***उपासक श्रेणी के विकास पर और ज्यादा ध्यान दिया जाए।***
- ***साधु-साध्वियों के रास्ते की सेवा तथा चातुर्मास व्यवस्था की जिम्मेदारी सभा की है।***
- ***इस वर्ष चौबीसी सिखाने और बारहव्रती श्रावक बनाने का विशेष प्रयास किया जाए।***
- ***समाज के संदर्भ में प्रामाणिकता अधिक अपेक्षित है। अनुदान, दान आदि के कार्यों में पूरी प्रामाणिकता रहे। जिस विसर्जन की घोषणा कर दी, उस पर ममत्व न रहे।***

कार्यक्रम का संयोजन महासभा के महामंत्री भंवरलाल सिंघी ने किया।

१६ अगस्त। महासभा सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का तीसरा दिन। महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिंडालिया ने सम्मेलन की निष्पत्तियों की अवगति देते हुए प्रतिनिधि सम्मेलन में सहयोगी बने व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अणुव्रत आन्दोलन को व्यापक बनाने में सभाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा 'महासभा एक महाशक्ति है। इसके सामने एक मिशन है। इसके पास कार्यकर्ताओं की एक विशिष्ट फौज है। कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें कार्य में निपुण बनाया जा सकता है। कोई भी संस्था तभी आगे बढ़ सकती है, जब उसके कार्यकर्ताओं में कार्य के प्रति निष्ठा हो।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने विकास के सूत्रों की चर्चा करते हुए कहा 'परिवर्तन के इर्द-गिर्द परिष्कार एवं परिवर्द्धन दोनों जुड़े रहें तो विकास के सोपानों पर आरूढ़ हो सकते हैं।'

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में तीन प्रकार के कार्यकर्ताओं की चर्चा करते हुए कहा 'प्रथम कोटि के कार्यकर्ता वे होते हैं, जिनमें मात्र सेवा की भावना रहती है, नाम की नहीं। द्वितीय कोटि के कार्यकर्ताओं में काम के साथ नाम की भावना भी रहती है। तृतीय कोटि के कार्यकर्ता वे हैं, जिनमें काम से अधिक नाम की भावना रहती है। सभाओं के प्रतिनिधि प्रथम कोटि के कार्यकर्ता बनने का प्रयास करें। उच्च स्तर के कार्यकर्ता बनें। कर्त्तव्य भावना से कार्य करें। उनमें प्रौढ़ता और गंभीरता आए। उनमें नाम और ख्याति की भावना अत्यन्त अल्प अथवा नहीं के बराबर हो।'

भाण्डुप-मुलुण्ड (मुम्बई), भगवतगढ़-सवाईमाधोपुर, बगड़ी, मालवा आदि क्षेत्रों के लोगों ने ससंघ आचार्य महाश्रमण के दर्शन किए। दिवेर के जुगराज नाहर, हस्तीमल चिंडालिया इत्यादि ने दिवेर पधारने की प्रार्थना की। इन्द्रचन्द सेठिया ने बगड़ी के स्पर्श का अनुरोध किया। एडवोकेट सुरेन्द्रकुमार जैन ने हरियाणा संस्कृत अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका **हरिप्रभा** का नवीन अंक भेंट किया। इस पत्रिका में आचार्य महाप्रज्ञजी के संदर्भ में सामग्री प्रकाशित हुई है। आचार्य महाश्रमण ने मेवाड़ यात्रा के दौरान दिवेर एवं मारवाड़ यात्रा के समय बगड़ी के स्पर्श की स्वीकृति प्रदान की।

१७ अगस्त। प्रवचन से पूर्व साध्वी मुकुलयशा ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने सारगर्भित विचार रखे।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा 'धर्म आत्मशुद्धि का साधन है। जिन उपायों से हमारी आत्मा शुद्ध हो, वह धर्म है। धार्मिक व्यक्तित्व के लिए सम्यक्त्व की विशुद्धि जरूरी है।'

१८ अगस्त। आज प्रातःकालीन प्रवचन से पूर्व साध्वी दिव्ययशाजी ने गीत का संगान किया। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में आनंद की उपलब्धियों के सूत्रों की चर्चा करते हुए कहा 'अन्तर्मुखी व्यक्तित्व ही आनन्द की अनुभूति कर सकता है।'

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा 'अहिंसा अमृत है। जिसे अपने जीवन में अमृत का आस्वाद लेना है, उसे अपने जीवन में अहिंसा को महत्त्व देना होगा।' कषाय विलय की चर्चा करते हुए महाश्रमणीजी ने कहा 'कषाय विलय की साधना से जीवन में सुख और शान्ति का संचार हो सकता है।'

१९ अगस्त। आचार्य महाश्रमण ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा 'जैन आगम का सूक्त है **पुढ़वी समो मुणी हवेज्जा।** एक साधु को पृथ्वी के समान होना चाहिए। जैसे पृथ्वी सर्दी-गर्मी, धूप, वर्षा आदि सब कुछ सहन करती है, वैसे ही एक साधु को सब कुछ समभाव से

सुन्दर व उच्चकोटि की प्रकृति से ही महानता संभव : आचार्य महाश्रमण

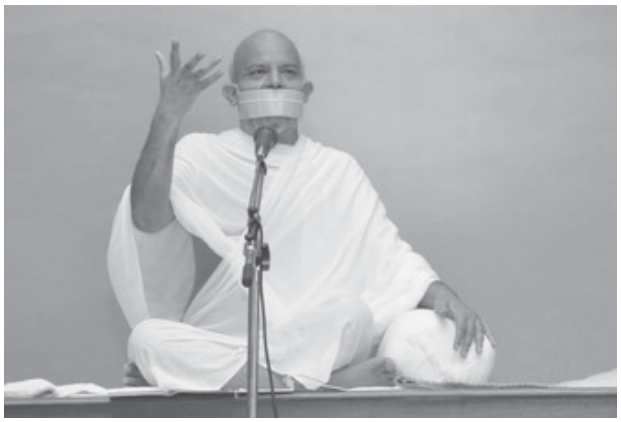

सहन करना चाहिए। जो साधु अनुकूल-प्रतिकूल स्थिति से विचलित नहीं होता, वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है।'

महानता के सूत्रों की चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा 'व्यक्ति केवल आकृति से सुन्दर और महान नहीं होता। जिसकी प्रकृति सुन्दर और उच्चकोटि की होती है, वही वास्तव में महान होता है। हम अपने स्वभाव को अच्छा बनाने का प्रयास करें तो महानता की दिशा में स्वतः चरण-न्यास हो सकेगा।'

राजसमंद क्षेत्र का संघ श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। डॉ. महेन्द्र कर्णावट एवं भिक्षु बोधि स्थल के अध्यक्ष गणपत धर्मावत ने राजनगर में पूज्यवर के दीर्घकालीन प्रवास की प्रार्थना की। राजनगर महिला मंडल ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

२० अगस्त। आचार्य महाश्रमण ने उपशम के सूत्रों का विश्लेषण करते हुए कहा 'जो साधक सम्यक ज्ञान के साथ उपशम की साधना करता है, उसका मन, वाणी और चेतना उपशान्त बन जाती है। जब कषाय उपशान्त होता है, तभी चित्त समाहित हो सकता है।'

२१ अगस्त। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में एवं महासभा के तत्त्वावधान में मेधावी छात्र सम्मान समारोह एवं द्विदिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। के. सी. जैन ने मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना के संदर्भ में जानकारी दी। इस अवसर पर विभिन्न श्रेणियों के मेधावी छात्र-छात्राओं को 'गणाधिपति तुलसी स्वर्णपदक', 'आचार्य महाप्रज्ञ स्वर्ण पदक', 'आचार्य महाश्रमण स्वर्ण पदक' एवं 'जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा रजत पदक' तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। उपाध्यक्ष रतन दूगड़ ने बताया इस परियोजना के अन्तर्गत अब तक १ करोड़, १९ लाख, ९८ हजार, ८ सौ पचहत्तर रुपये की राशि छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जा चुकी है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'मेधा उस शक्ति का नाम है, जो ज्ञान को धारण करने में समर्थ होती है। जिसकी बुद्धि स्थिर और तीक्ष्ण होती है, वह मेधावी होता है। बुद्धि के साथ अनुकंपा की चेतना जागृत हो जाती है तो मनुष्य स्वहित के साथ परहित की चिंता करता है। विद्यार्थी को प्रारंभ से ही स्व हित के साथ पर हित की चेतना जागृत करनी चाहिए।'

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'महान बनने के लिए श्रद्धा, अहिंसा, संयम और त्याग की भावना का विकास जरूरी है। मेधावी छात्र-छात्राएं त्याग और संयम को विशेष महत्त्व दें। उनमें दूसरों के कल्याण की भावना पुष्ट हो। महासभा के द्वारा मेधावी छात्र-छात्राओं को सहारा मिल रहा है।

कार्यक्रम का संयोजन मेधावी छात्रों की टीम ने किया। इस द्विदिवसीय कार्यशाला में १९४ मेधावी छात्र- छात्राओं ने भाग लिया। छात्रों को विविध विषयों का प्रशिक्षण दिया गया। छात्र-छात्राओं ने रात्रि में रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

बाडमेर का संघ अपनी प्रार्थना के साथ पूज्य चरणों में प्रस्तुत हुआ। बाड़मेरवासियों ने अपने क्षेत्र में पूज्यवर के पदार्पण एवं प्रवास का अनुरोध किया। सादुलपुर के श्रावक समाज ने भी अपनी भावनाएं प्रस्तुत की।

२२ अगस्त। आचार्य महाश्रमण ने कहा 'जिस भूमि पर अर्हतों का विहार होता है, वह भूमि रमणीय होती है। जैन सिद्धान्त के अनुसार वर्तमान समय में महाविदेह क्षेत्र को रमणीय भूमि कहा जा सकता है, क्योंकि वहाँ तीर्थंकर का प्रवास हो रहा है। अर्हत के प्रतिनिधि आचार्य और साधु जहाँ विहार करते हैं, उस भूमि को भी रमणीय भूमि कहा जा सकता है। जहाँ त्याग, तपस्या और संयम की भावना है, वह रमणीय भूमि होती है। जिस व्यक्ति के जीवन में अहिंसा, संयम और तप की चेतना जागृत है, उसका जीवन रमणीय होता है। साधक व्यक्ति ऐसा काम करे, जिससे जीवन में रमणीयता बनी रहे।'

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा 'मनुष्य का लक्ष्य वीतरागता होना चाहिए। उसमें देव, गुरु और धर्म के प्रति गहरी आस्था होनी चाहिए। मनुष्य का दृष्टिकोण सम्यक् होना चाहिए। सम्यक्त्व से बड़ा मनुष्य का कोई दूसरा मित्र नहीं है। जिसे सम्यक्त्व उपलब्ध हो जाता है, उसके लिए वीतरागता का पथ प्रशस्त हो जाता है।'

नेपाल स्तरीय बाल संस्कार निर्माण शिविर

विराटनगर। आचार्य महाप्रज्ञ के 91वें जन्म दिवस ''प्रज्ञा दिवस'' पर साध्वी निर्वाणश्री के सान्निध्य में नेपाल स्तरीय बाल संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन हुआ। इसमें नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों से समागत ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षिकाओं एवं अभिभावकों की भव्य उपस्थिति रही। साध्वीश्री ने कहा करुणा अवतार आचार्य महाप्रज्ञ का बच्चों के प्रति विशेष लगाव था। वे समय-समय पर अपने अमृतवचनों से बच्चों में प्रेरणा का संचार करते रहते थे। प्रज्ञा दिवस पर हम सभी यह संकल्प करें कि बुद्धि के स्तर से ऊपर उठकर प्रज्ञा का जागरण करना है।

साध्वी योगक्षेमप्रभा ने कहा बच्चों के सामने विकास का असीम आकाश है। यदि उचित समय पर उन्हें उचित दिशा दर्शन प्राप्त हो तो वे स्वयं को निखारते हुए समाज का भी बहुत बड़ा हित साध सकते हैं।

विराटनगर के अतिरिक्त फारबिसगंज, इनखा, धरान, दुहवी, हनुमाननगर इत्यादि क्षेत्रों से करीब 115 ज्ञानार्थियों एवं 31 प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में तत्वज्ञान, अनुशासन, ड्राइंग, महाप्रज्ञ प्रश्नोत्तरी, विविध भारती, खेल आदि प्रतियोगिताओं का क्रम रहा। इन प्रतियोगिताओं में विशेष स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को स्थानीय सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया। विराटनगर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका प्रभा मणोत, नलिनी सेठिया की कार्यक्रम की आयोजना में सराहनीय श्रम रहा। संयोजन सतीश दूगड़ ने किया।

www.terapanthinfo.com

राष्ट्रनेताओं से मुनि सुधाकर की विचार-चर्चा

नई दिल्ली। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के निर्देशन में मुनि सुधाकर की जाति आधारित जनगणना के संदर्भ में देश के कई प्रबुद्ध राजनेताओं से चर्चाएं हुई। प्रमुख रूप से भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी, केन्द्रीय कोयला मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल, केन्द्रीय ग्रामीण राज्य मंत्री एवं राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की नेता अगाथा संगमा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री व अकाली दल के वरिष्ठ नेता सुखदेव सिंह ढिंढसा, भाजपा के प्रवक्ता प्रकाश जावड़ेकर व लोकसभा सदस्यों से चर्चा हुई।

मुनि सुधाकर ने चर्चा करते हुए कहा आज की राजनीति ने लोगों के दिमाग में संकीर्णता और नफरत का जहर फैलाया है। यह भारत की एकता व संस्कृति के लिए खतरा है। जातिवाद भारतीय व्यवस्था पर कलंक है। आज भी इसका विषैला प्रभाव लोगों की हत्या व शोषण का कारण बन रहा है।

कई दशकों पूर्व आचार्य तुलसी ने जाति, रंग, संप्रदायवाद से विहीन अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया था। जिसका लक्ष्य था ''पहले इन्सान इन्सान फिर हिन्दू या मुसलमान।'' मुनिश्री ने अणुव्रत के इस सिद्धांत को जन-जन तक पहुँचाने की जरूरत बतायी।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी ने कहा मैं मुनिश्री के विचारों से सहमत हूँ। जाति आधारित जनगणना राष्ट्र के लिये उचित नहीं है। भारतीय संस्कृति ने तोड़ना नहीं जोड़ना सिखाया है। हमें वसुधैव कुटुम्बकम के उदार व विशाल विचार को अपनाना चाहिए। कार्यकर्ताओं ने गडकरी को तुलसी विचार दर्शन व अणुव्रत साहित्य भेंट किया। इस अवसर पर गडकरी ने भिक्षा दान का लाभ लिया।

केन्द्रीय कोयला मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने कहा जातिवाद से देश में टकराव व हिंसा का वातावरण बनता है! आज देश में आपसी सौहार्द्र व भाईचारे की जरूरत है। कार्यकर्ताओं ने आचार्य महाप्रज्ञ की कृति 'आओ जीना सीखें' भेंट की।

केन्द्रीय ग्रामीण राज्य मंत्री एवं लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष पी.ए. संगमा की सुपुत्री अगाथा संगमा ने मुनि सुधाकर से चर्चा के दौरान कहा हमें जातिवाद की अपेक्षा शिक्षा एवं विकास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उन्होंने मुनिश्री से हिन्दी में वार्ता करते हुए मुनियों के तप एवं त्याग को महान बताया। अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों पर केन्द्रीय मंत्री ने प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यकर्ताओं ने साहित्य भेंट किया।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुखदेव सिंह ढिंढसा ने कहा आज अणुव्रत के विचारों को जन-जन में प्रचारित-प्रसारित करना जरूरी है। हमें जाति, संप्रदाय, भेदभाव से ऊपर उठकर मानव जाति की समुचित व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए।

भाजपा के वरिष्ठ नेता प्रकाश जावड़ेकर ने कहा ''अणुव्रत'' मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। अणुव्रत के विचार व्यापक व उदार हैं। हमें जाति व संप्रदाय से ऊपर उठकर चिंतन करना चाहिये। अंग्रेजों द्वारा जाति आधारित जनगणना हिन्दुस्तान को बांटने की साजिश थी। जाति की अपेक्षा गरीबी व अशिक्षा पर ध्यान देना अपेक्षित है। उन्होंने मुनिश्री से सवा घंटे तक अनेकों समसामयिक विषयों पर चर्चा की।

अणुव्रत संसदीय मंच पुनः कैसे सक्रिय बने इस पर भी गहन चिंतन किया गया। उपर्युक्त चर्चाओं में मुनिश्री के अलावा शीतल बरड़िया, श्यामलाल जैन, कमल बैंगानी, बाबूलाल दूगड़, प्रकाश भंसाली, राजेश बैंगानी, गौतम डूंगरवाल, सुभाष जैन, दीपक सिंघी उपस्थित थे।

बेटी से बड़ा कोई धन नहीं

राजलदेसर, 18 अगस्त। अहिंसा प्रशिक्षण स्वरोजगार केन्द्र में 'बेटी बचाओ अभियान' के तहत गोष्ठी आयोजित हुई। मुख्य अतिथि महेन्द्र दधीच ने कहा बेटी से बड़ा कोई धन नहीं है, बशर्ते कि इस धन को तराश कर समाज बेटी को प्रमुखता से आगे बढ़ने का मौका दे।

अंतिमा गौड ने कहा रूढ़िवादी विचारों को छोड़कर बेटी को बेटा समझे और बेहतर शिक्षा दें। मोनिका डीडवानिया, सुनीता शर्मा, मनोज दधीच ने अपने विचार रखे।

धन्यवाद ज्ञापन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के निदेशक शैलेश कुमार ने किया। राजलदेसर के उद्योग पति प्रदीप कुंडलिया के सौजन्य से तीन वर्षों से यह प्रशिक्षण केन्द्र पर निरंतर चल रहा है। इसमें महिलाएं भी प्रशिक्षण ले रही हैं।

अणुव्रत प्रचेता अभियान का शुभारंभ

21 अगस्त, मुलुण्ड-मुंबई। साध्वी स्वर्णरेखा के सान्निध्य में आयोजित अणुव्रत कार्यक्रम में अणुव्रत प्रचेता प्रशिक्षण अभियान के शुभारंभ की घोषणा अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष अर्जुन बाफना ने की। साध्वीश्री ने कहा राष्ट्र की समृद्धि के लिए व्यक्ति का नैतिक व चारित्रिक विकास जरूरी है, इसके लिए गुरुदेव तुलसी द्वारा चलाए गए अणुव्रत आंदोलन की सख्त आवश्यकता है। आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के अंतिम क्षणों में भी अणुव्रत के विकास के लिए सुझाव दिए। इस वर्ष आचार्य महाश्रमण ने भी बारह व्रतों के संकल्प के आह्वान को दोहराते हुए साध्वीश्री ने स्वदार संतोष व्रत के संकल्प करवाये।

आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष पर विश्व-स्तर पर अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचेताओं की प्रशिक्षित टीम तैयार करने के उद्देश्य से अणुव्रत प्रचेता प्रशिक्षण अभियान शुरू किया गया। इसके अंतर्गत विविध प्रशिक्षकों द्वारा 6 माह तक 24 कक्षाओं का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति मुंबई के मंत्री विनोद कोठारी ने एवं संचालन कुमुद कच्छारा ने किया।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति मुंबई की कार्यसमिति की बैठक में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के आयोजन संबंधी चर्चा के पश्चात रमेश धोका को संयोजक नियुक्त किया गया। बैठक में सोहनलाल सिंघवी, मिश्रीमल चौधरी, बाबूलाल बाफना, सुधांशु जैन, सुनील मादरेचा, प्रेमलता सिसोदिया, रोशनलाल मेहता, अशोक इंटोदिया एवं सोहनलाल कोठारी उपस्थित थे। कार्यक्रम की आयोजना में सलिल लोढ़ा व मुलुण्ड के कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा।

www.terapanthinfo.com

संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अणुव्रत विश्व भारती

जयपुर। संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग एवं इसके द्वारा मान्यता प्राप्त गैर-सरकारी संगठनों का 63वां अधिवेशन इस बार 30 अगस्त से 1 सितम्बर 2010 को मेलबार्न में आयोजित होने जा रहा है। अधिवेशन में विचारार्थ विषय इस वर्ष वैश्विक स्वास्थ्य की प्रगति : तृतीय सहस्त्राब्दि में विकास लक्ष्यों को पूरा करना है। यह सर्वविदित है कि संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों ने तृतीय सहस्त्राब्दि के प्रारंभ में उनके द्वारा सर्व सम्मति से चयनित आठ लक्ष्यों को 2015 तक पूरा करने का संकल्प व्यक्त किया था। आठ लक्ष्य हैं गरीबी-भूख उन्मूलन, अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, महिला शक्तिकरण तथा लिंग समानता, बच्चों की मृत्यु दर में कमी, मातृ स्वास्थ्य में सुधार, एचआईवी, एड्स, मलेरिया आदि बीमारियों से युद्ध, पर्यावरणीय सुस्थिरता की सुरक्षा तथा विकास के लिए वैश्विक भागीदारी हैं। संयुक्त राष्ट्र के आग्रह से ही इन लक्ष्यों की पूर्ति में गैर-सरकारी संस्थाएं वैश्विक स्तर पर सहभागिता कर रही हैं।

मेलबार्न सम्मेलन में उपरोक्त लक्ष्यों की पूर्ति तथा वैश्विक स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों पर विचारों के आदान-प्रदान की दृष्टि से 24 कार्यशालाओं का चयन किया गया है जिसमें अणुविभा द्वारा प्रस्तावित कार्यशाला भी एक है। इसका विषय है 'शांति एवं सुस्थिरता के लिए स्वस्थ जीवनशैली का आदर्श नव उदाहरण' इसके अंतर्गत अणुविभा ने अणुव्रत, जीवन-विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान स्वस्थ जीवनशैली का कैसे विकल्प है, इस अवधारणा का सार संक्षेप प्रस्तुत कर कार्यशाला का प्रस्ताव भेजा था। उसका मूल भाव था अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे चिकित्सा के वैकल्पिक साधन भी हैं जिनके नियमित प्रयोग से वैश्विक स्वास्थ्य का विकास हो सकता है।

अणुविभा द्वारा प्रस्तुत विषय की महत्ता समझकर आयोजन समिति ने उन्हें प्राप्त सैंकड़ों प्रस्तावों की स्पर्धा में उसके प्रस्ताव को चुना। मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए गुरुदेव द्वारा प्रवृत्ति त्रि-आयामी सूत्र की गुणवत्ता के कारण ही हमें यह अवसर प्राप्त हुआ जिसे हम अपूर्व मानते हैं। आयोजन समिति ने अणुविभा के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी को इस कार्यशाला का मॉडरेटर (अध्यक्ष) नियुक्त किया है तथा अणुविभा के अध्यक्ष तेजकरण सुराणा, महामंत्री संचय जैन, दिल्ली के प्रबुद्ध श्रावक बुद्धसिंह सेठिया तथा अणुविभा ऑफ नार्थ अमेरिका के अध्यक्ष किरीट दफ्तरी वक्ता चुने गये हैं। तेजकरण सुराणा मानव जीवन को संयमित करने में अणुव्रत एवं जीवन-विज्ञान की भूमिका पर, बुद्धसिंह सेठिया पूर्ण वैश्विक स्वास्थ्य की अवधारणा पर तथा संचय जैन बालकों में स्वस्थ जीवनशैली के विकास के बालोदय में प्रयोग तथा किरीट दफ्तरी स्वस्थ जीवनशैली का आधार अहिंसा विषय पर पत्र वाचन करेंगे।

इस सम्मेलन में 192 देशों में कार्यरत संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त गैर-सरकारी संगठनों के तीन हजार से भी अधिक प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक जन-सम्पर्क का यह अच्छा अवसर है। इस कार्यशाला के मॉडरेटर डॉ. सोहनलाल गांधी ने बताया कि इस सम्मेलन का उद्घाटन संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून करेंगे तथा आस्ट्रेलिया सरकार सम्मेलन के आतिथ्य (होस्ट) की भूमिका निभा रही है। अणुविभा का पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल अनेक देशों के प्रतिनिधियों से अलग से मुलाकात कर विचारों का आदान-प्रदान करेगा तथा अणुव्रत, जीवन- विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान पर विशेष रूप से तैयार फोल्डर भी वितरित किये जायेंगे। आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण के कुछ चुने हुए विचारों के संप्रेषण का भरपूर प्रयत्न किया जा रहा है।

सेवा कार्यों में सहभागिता

जयपुर। शुद्ध पानी की अनिवार्य आवश्यकता को देखते हुए विद्यार्थियों की सुविधा हेतु अणुव्रत समिति, जयपुर के तत्वावधान में किए जा रहे सेवा कार्यों की श्रृंखला में जयपुर के प्रेम निकेतन विद्यालय में वाटर कूलर लगवाया गया। समय के साथ-साथ कम्प्यूटर के प्रयोग की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। इसी दृष्टि से विद्यार्थियों के लिए एक कम्प्यूटर भी विद्यालय को प्रदान किया गया। विद्यालय की आवश्यकता को देखते हुए एक अलमारी भी उपहार स्वरूप प्रदान की गई। इसके साथ ही विद्यालय के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को अणुव्रत के नियमों की जानकारी दी गई। विद्यालय की प्राचार्या ने समय-समय पर होने वाले अणुव्रत समिति के कार्यों में सहभागिता प्रकट करने की इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर जी.एल. नाहर, आशा नीलू टाक, पुष्पा बांठिया, सुमन बोरड़, निर्मला सुराणा उपस्थित थे।

अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता

नई दिल्ली, 1 सितंबर। अ.भा. अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली द्वारा राज्य स्तर पर आयोजित अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता 2010 हेतु दिल्ली को आठ क्षेत्रों में विभक्त किया गया था। इन क्षेत्रों के विजेताओं के मध्य फाइनल अणुव्रत नैतिक गीत गायन एकल प्रतियोगिता अणुव्रत भवन में आयोजित की गयी। इसमें न्यास के वरिष्ठ सहयोगी हरिसिंह तातेड़, एस. एच.ओ. ऋषिपाल राणा, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉ. सुधांशु की प्रमुख उपस्थिति रही।

अ.भा. अणुव्रत न्यास के संयुक्त प्रबंध न्यासी सुशील कुमार जैन, न्यासी कैलाश चंद जैन, न्यासी शांतिकुमार जैन, प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने बच्चों को संबोधित करते हुए अणुव्रत पर अपने विचार व्यक्त किए।

प्रतियोगिता में राजकीय कन्या उ.मा.वि. डिफेंस कॉलोनी, के.एस. के. अकादमी संगम विहार, राजधानी पब्लिक स्कूल, दर्शन अकादमी, लिटिल फैरी पब्लिक स्कूल, अहल्कान पब्लिक स्कूल, सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल, अर्वाचीन भारतीय भवन, बिरला सी. सेकेंडरी स्कूल, भाई परमानंद स्कूल, एवरग्रीन पब्लिक स्कूल, हैप्पी होम पब्लिक स्कूल, सिस्टर निवेदिता स्कूल, मान पब्लिक स्कूल, वैंकटेश्वर पब्लिक स्कूल, महावीर पब्लिक स्कूल के बच्चों ने भाग लिया। विजेता बच्चों को आगामी प्रतियोगिता में पुरस्कृत किया जाएगा। संयोजन महेन्द्र शर्मा एवं रमेश कांडपाल ने किया।

www.terapanthinfo.com

नैतिक मूल्यों का संदेश

नाथद्वारा। अ.भा. अणुव्रत न्यास नई दिल्ली द्वारा 'ग्यारहवीं अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता' साध्वी कानकुमारी ठाणा-5 के सान्निध्य में क्षेत्रीय स्तर पर सभा भवन नाथद्वारा में आयोजित की गयी। प्रतियोगिता में आसपास के गांवों कोठारिया, रेलमगरा व नाथद्वारा के विभिन्न विद्यालयों के 85 प्रतियोगियों ने अणुव्रत नैतिक गीतों के द्वारा नैतिक मूल्यों का संदेश दिया।

साध्वी कानकुमारी (सरदारशहर) ने कहा नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता बच्चों में सात्विक एवं नैतिक संस्कारों को पुष्ट बनाने का स्वस्थ सुंदर उपक्रम है। विद्यार्थी अणुव्रत द्वारा बच्चे अपने जीवन में सच्चे व संस्कारी बन सकते हैं। इस प्रकार की प्रतियोगिताएं सभी को जीवन विकास की प्रेरणा देती हैं।

इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट, प्रतियोगिता के जिला संयोजक मदन धोका, अणुव्रत बालोदय निदेशक बालमुकुन्द सनाढ्य, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष महेश शर्मा, अणुव्रत शिक्षक इन्द्र सिंह सुराणा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका श्रीनाथ साहित्य अकादमी के प्रवक्ता मानप्रकाश लोढ़ा, जैन जागृति मंच के संयोजक राजेन्द्र कोठारी व विमला वागरेचा ने निभाई।

कार्यक्रम में श्रीजी पब्लिक स्कूल नाथद्वारा व शहीद सरदार भगत सिंह हायर सेकेन्डरी विद्यालय नाथद्वारा को जिला स्तर पर चयन किया गया। प्रकाश कोठारी, सुरेश कोठारी, प्रकाश सामोता, विक्रम पोरवाल, रमेश सोनी, विनोद बोहरा, कुंदन हिरण, स्नेहलता तलेसरा, विमला बाफना एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। संयोजन कान्तिलाल धाकड़ व कमलेश कुमार धाकड़ ने किया।

जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा

गंगाशहर। विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ उनमें अनुशासन, विनम्रता, सहिष्णुता, कर्त्तव्य-निष्ठा तथा दायित्व का बोध हो। इन्हीं जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना हेतु जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत का प्रसार किया जा रहा है। आज विद्यालयों में पुस्तकीय ज्ञान तो कराया जा रहा है किन्तु सुसंस्कारों के अभाव में पुस्तकीय शिक्षा भार बन जाती है। नैतिक शिक्षा को स्थायित्व देने के लिए शिक्षक वर्ग छात्र-छात्राओं को संस्कारों का अवदान देते रहे जिससे विद्यार्थी में सच्चरित्रता का भाव पुष्ट होता रहे। ये विचार मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ने अर्हम् अंग्रेजी अकादमी में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

विद्यार्थियों को दीर्घ ध्वनि, अनुलोम-विलोम प्राणायाम एवं संकल्पों के प्रयोग करवाए गए। इस अवसर पर सभी उपस्थित छात्र-छात्राओं ने व्यसनमुक्ति का संकल्प किया। दोनों हाथ, दोनों पैर एवं मुंह से कलम पकड़कर लिखने में विश्वप्रसिद्ध शाला प्रबंधक सुरेन्द्र डागा ने मुनिवर का स्वागत करते हुए नियमित प्रार्थना सभा में करने हेतु संकल्प किया। प्रदीप लालाणी ने सुरेन्द्र डागा एवं प्रधानाचार्य का साहित्य द्वारा सम्मान किया। आभार व्यक्त मनीष बाफना ने किया।

मुनि महेन्द्रकुमार की डॉ. अब्दुल कलाम से वार्ता

नई दिल्ली, 20 अगस्त। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने मुनि महेन्द्रकुमार से चर्चा के दौरान कहा भारत में बहुत प्राचीन काल से विज्ञान एवं गणित के क्षेत्र में जो कार्य किया गया वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। दुःख की बात है कि उन उपलब्धियों को एक प्रकार से गोपनीय रखा गया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इन महत्वपूर्ण अवधारणाओं का विश्व-व्यापी प्रचार-प्रसार किया जाए। डॉ. कलाम ने प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार द्वारा लिखित कई पुस्तकों का अवलोकन किया जिनमें आधुनिक विज्ञान के साथ प्राचीन जैन दर्शन में प्राप्त गणित एवं वैज्ञानिक अवधारणाओं का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया। डॉ. कलाम ने उन पुस्तकों का भी अवलोकन किया जिनमें प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के वैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर यह सिद्ध किया है कि प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों का मनुष्य के भावों एवं व्यवहारों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस अवसर पर मुनिश्री ने डॉ. कलाम को आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चल रहे मानवीय मूल्यों के विभिन्न कार्यक्रमों से अवगत कराया। मुनि अभिजीतकुमार ने भी अपने विचार रखे। वार्ता में अजित-कुमार, अणुविभा के अध्यक्ष तेजकरण सुराणा एवं हीरालाल गेलड़ा उपस्थित थे।

सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की पद्धति

श्रीगंगानगर। साध्वी जयश्री के सान्निध्य में भिक्षु प्रतिष्ठान के प्रांगण में महिला मंडल के तत्वावधान में ''जीवन विज्ञान : शिक्षा की सर्वांगीण पद्धति'' विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में श्री आत्मावल्लभ जैन कन्या महाविद्यालय श्रीगंगानगर की बी. ए. प्रथम वर्ष की 55 छात्राओं ने भाग लिया। साध्वी जयश्री ने कहा आज का युग शिक्षा का युग है, शिक्षा के प्रत्येक विभाग में प्रतिस्पर्धाएं हो रही हैं और प्रतिस्पर्धाओं ने बौद्धिक बल को बढ़ावा दिया है। सफल एवं आनन्दमय जीवन के लिए बौद्धिक बल के साथ मनोबल एवं आत्मबल का भी प्रशिक्षण अति आवश्यक है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा शिक्षा जगत को प्रदत्त जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम एक महान देन है। जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास की सर्वांगीण पद्धति है।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद द्वारा जीवन विज्ञान गीत के संगान से हुआ। साध्वी उज्जवल प्रभा ने प्रेक्षाध्यान का प्रारंभिक परिचय देते हुए इसे स्वयं के परिष्कार की प्रक्रिया बताया।

साध्वी कमलप्रभा ने कहा जीवन विज्ञान केवल सैद्धांतिक पद्धति नहीं है, बल्कि प्रायोगिक सरस पद्धति है। मानवीय गुणों को व्यवहारिक धरातल पर प्रस्तुत करने वाली प्रायोगिक पद्धति है।

साध्वी अनुप्रेक्षा ने कहा दीर्घश्वास शक्ति जागरण का सशक्त आलम्बन है। योगाचार्यों ने, शरीरशास्त्रियों ने, जितना श्वास का महत्व दिया उतना ही वह आज उपेक्षित हो रहा है। परिणाम आज का वातावरण मनोभाव को उत्तेजित करने वाला है, मन को चंचल बनाने वाला हो रहा है।

इस अवसर पर वंदना जैन ने छात्राओं एवं शिक्षिकाओं का स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। सभाध्यक्ष राजेन्द्र आंचलिया और मनजीत ने यौगिक क्रियाएं करवाई। कार्यक्रम की आयोजना में पंकज जैन का सराहनीय श्रम रहा।

www.terapanthinfo.com

लेह लद्दाख के मृतकों को श्रद्धांजलि

उदयपुर, 12 अगस्त। अणुव्रत समिति उदयपुर, सेवा समिति, चेम्बर ऑफ कॉमर्स, महावीर इंटरनेशनल, मास नर्सिंग कॉलेज, विभिन्न संगठनों, सार्वजनिक संस्थाओं, कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा लेह-लद्दाख में बादल फटने से आई बाढ़ की चपेट में मरने वाले व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देने के लिए फतहसागर की पॉल पर स्थित मोती महल के बाहर मोमबत्ती जलाकर दो मिनट का मौन रखकर भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति एवं उदयपुर सेवा समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र सेन, महामंत्री डॉ. जयराज आचार्य, संगठन मंत्री अरविंद चित्तौड़ा, परामर्शक जमनालाल दशोरा एवं अणुव्रत समिति के महामंत्री अरुण कोठारी, डॉ. निर्मल कुणावत, रंगलाल धाकड़, आर.के. जैन, राधाकृष्ण व्यास, हीरालाल कुणावत उपस्थित थे। चेम्बर ऑफ कॉमर्स डिवीजन उदयपुर के अध्यक्ष पारस सिंघवी, पार्षद अजय पोरवाल, रोटरी क्लब के अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह कर्णावट, सुभाष सिंघवी, सुरेश सिसोदिया, एम.सी. सिंघवी, महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष मोती सिंह खमेसरा, सचिव जगत पोखरना, वीर एन.के. खमेसरा, वरिष्ठ नागरिक के.जी. गटानी, रूपकुमार खुराना, कमल भंडारी, सर्राफा एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष इंदर सिंह मेहता, एम.डी. अभय सिंघवी, मास नर्सिंग कॉलेज के सैकड़ों छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

मिलाप दूगड़ की स्मृति सभा

नई दिल्ली, 19 अगस्त। समाज की विभिन्न संस्थाओं द्वारा अ.भा. अणुव्रत न्यास के तत्वावधान में अणुव्रत भवन में जाने-माने समाज सेवी मिलाप दूगड़ की श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी। स्व. मिलाप दूगड़ जनशिक्षा के प्रति सर्वात्मना समर्पित, सामाजिक दायित्व के संवाहक, सृजनशील साहित्यचेता, प्रखर वक्ता, दूरदर्शी चिंतक, सलिल संगीतज्ञ, सक्रिय समाजसेवी, गांधी विद्या मंदिर सरदारशहर के आधार स्तंभ और आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय के कुलपति थे। 29 जुलाई 2010 को सीकर के समीप एक कार दुर्घटना में उनका निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गये हैं। उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए लोकसभा अध्यक्षा मीरा कुमार, ऑस्कर फर्नांडिस, केन्द्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय, केन्द्रीय राज्यमंत्री महादेव खंडेला, रामसिंह कास्वां-सांसद चुरू, आई.सी. जैन-सांसद, पूर्व सांसद महेश चन्द्र शर्मा, मोतीलाल वोरा-सांसद, अंसारी-भूतपूर्व सांसद ने उनकी तस्वीर पर माल्यार्पण किया एवं अपने विचार व्यक्त किये। इसके अलावा विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों, समाजसेवियों, साहित्यकारों - संपादकों एवं पत्रकारों के क्रम में कमला सिंघवी, अनिल जोशी, के.एल. बैद, पन्नालाल बैद, प्रकाश सेठिया, डॉ. आर.एस. त्रिपाठी, मांगीलाल सेठिया, के.सी. जैन, जितेन्द्र बांठिया, नरेन्द्र शर्मा, बनारसी दास गुप्ता, पी.सी. व्यास, सज्जन सिंह, भरत सिंह, नंदिता गोलिया, श्रेया कोठारी, भारती सेठिया, मुनि अमृतकुमार, उनके ज्येष्ठ भ्राता, कनकमल दूगड़, सम्पतमल नाहाटा ने अपनी भावांजलि दी। संयोजन प्रमोद घोड़ावत ने किया।

हृदय रोग परीक्षण एवं चिकित्सा शिविर

राजसमंद, 23 अगस्त। अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद के तत्वावधान में युवक परिषद् एवं साल अस्पताल अहमदाबाद के सहयोग से हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिल जैन के नेतृत्व में निःशुल्क हृदय रोग परीक्षण एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 423 रोगियों का पंजीकरण किया गया। साल अस्पताल के डॉक्टर्स की टीम द्वारा परीक्षण किया गया। इको, ईसीजी व अन्य जांच निःशुल्क उपलब्ध कराई गई। मेडीसिन टोरण्टो कम्पनी द्वारा निःशुल्क दवाइयां वितरित की गयी। श्रीनाथ नर्सिंग कॉलेज राजसमंद के स्टॉफ का पूर्ण सहयोग रहा।

राजसमंद जिला कलेक्टर औंकारसिंह द्वारा शिविर का अवलोकन किया गया। शिविर में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिल जैन, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. राजन मोदी, डॉ. अजय जैन, डॉ. भरत त्रिवेदी, डॉ. सतीश पटेल, डॉ. चिराग मेहता, डॉ. अनूप गुप्ता, डॉ. कल्पना जैन, डॉ. विनीता मेहता सम्मिलित हुए। संयोजन सुरेश कावड़िया ने किया।

शिविर समापन के पश्चात् ''हृदय रोग के कारण एवं निवारण'' विषयक गोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रारंभ राजनगर की महिलाओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ। नरेन्द्र निर्मल ने डॉ. अनिल जैन का परिचय दिया। अणुविभा के महामंत्री संचय जैन ने सभी का स्वागत करते हुए अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी एवं संस्था के संस्थापक मोहन भाई को नमन किया। डॉ. अनिल जैन ने हृदय रोग के कारण और निवारण की विस्तृत जानकारी दी।

गोष्ठी में प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. ए.एम.आर. एण्ड्रयू, डॉ. सी.एल. डूंगरवाल, डॉ. एचसी सोनी, डॉ. अनिल जैन, डॉ. जेएल सिसोदिया, डॉ. विजय खिलनानी, डॉ. पुष्पा खिलनानी, डॉ. जीएल हिंगड़, डॉ. गिरीराज राठी, डॉ. एस. एल जैन, डॉ. एस.के. जैन की सहभागिता रही। अणुविभा बालोदय के उपाध्यक्ष जगजीवन चोरड़िया, अर्थमंत्री गणेशलाल कच्छारा, अमृत सांसद अशोक डूंगरवाल, विमल कावड़िया, मनीष कावड़िया, संजय कावड़िया उपस्थित थे। शिविर की आयोजना में सुरेश कावड़िया का सराहनीय श्रम रहा।

अच्छे बच्चे तैयार हों

लोहसना बड़ा, 16 अगस्त। राजकीय माध्यमिक विद्यालय आर.एन. पब्लिक स्कूल लोहसना बड़ा में साध्वी पुण्यप्रज्ञा के सान्निध्य में कार्यक्रम रखा गया। समणी समताप्रज्ञा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा सकारात्मक चिंतन के साथ श्रमशील होते हुए हर कार्य को भावक्रिया से करने पर जीवन में सफलता लाने का सूत्र है। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद से परिवेक्षक प्रवीण कुमार ने अहिंसा प्रशिक्षण की गतिविधियों में निर्देश एवं परिवेक्षक रमेश कुमार ने महाप्राण ध्वनि के प्रयोग करवाए।

प्रधानाचार्य हरिसिंह ने समणीवृंद का भावभरा अभिनन्दन करते हुए इनके त्याग एवं तपस्या पूर्ण जीवन से प्रेरणा लेते हुए संयममय जीवन जीने का आह्वान किया। प्रधानाध्यापक मोहम्मद इकराज ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अहिंसा प्रशिक्षक के.जी. मूंदड़ा ने किया।

www.terapanthinfo.com

अमृत का आस्वादन : 'अमृत का झरना'

डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

जीवन सभी जीते हैं किन्तु जीना कितने लोग जानते हैं? हमारे जीने का ढंग ही हमारे जीवन को अमृत और विष का स्वाद कराता है। यदि हम सही ढंग से जीवन नहीं जीते, यदि संस्कार युक्त जीवन नहीं जीते तो जीवन के हर मोड़ पर विष का स्वाद चखना पड़ता है। किन्तु यदि हमारा जीवन सकारात्मक भावों से ओतप्रोत होता है। आपसी प्रेम, स्नेह एवं विश्वास के धागे से गुम्फित होता है तो जीवन का हर क्षण अमृत का स्वाद करवाता है। यदि किसी को अपने जीवन में अमृत का अक्षय स्रोत मिल जाये तो उसका कहना ही क्या? आचार्य महाश्रमण की शिष्या साध्वी अणिमाश्री ने ऐसे ही अमृत स्रोत को उकेरा है। अपनी सद्यः प्रकाशित कृति 'अमृत का झरना' में।

आलोच्य कृति 'अमृत का झरना' में 57 पाठ या निबन्ध हैं, जो जीवन जीने के प्रमुख सूत्रों पर प्रकाश डालते हैं या यों कहें कि ये ऐसे मूलमंत्र हैं जिससे हर कोई अपने जीवन को रौशनी से आलोकित कर सकता है। प्रथम पाठ 'गतिशीलता का नाम जीवन है' पाठकों को जीवन पथ पर सदैव गतिशील रहने की प्रेरणा देता है। लेखिका का मानना है कि जो हर परिस्थिति में कदम बढ़ाते रहते हैं, बड़ी से बड़ी बाधाओं के आने पर जिनके कदम नहीं रुकते तो मंजिल उनके कदमों में होती है। इसी दृश्य की रोचक एवं प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुति यहाँ हुई है। एक पहाड़ी उपत्यका के प्रश्न पर झरना कहता है ''भगिनी! मुझे जिस महासागर से मिलना है उसकी दूरी अनन्त हैं। अगर रुकूंगा तो मंजिल तक कब पहुँचूंगा? चलते रहने से ही दूरी कम होगी।'' झरने के इस स्वर के बहाने लेखिका ने सम्पूर्ण मानवजाति को यह संदेश दिया है कि जीवन को सार्थक करने के लिए झरने की तरह सदैव गतिशील रहना होता है।

'सुखी जीवन का राज' निबंध में लेखिका ने मानो सुखी जीवन का खजाना दे दिया है। सचमुच जीवन को सुखमय और दुःखमय हमारे विचार बनाते हैं। जैसे अग्नि से भोजन पकाया जा सकता है तो अग्नि से घर को जलाया भी जा सकता है वैसे ही हमारे सकारात्मक विचार जहाँ हमारे जीवन को सुखमय बना सकते हैं, वहीं हमारे निषेधात्मक विचार जीवन को नरक भी बना सकते हैं। लेखिका ने स्पष्ट कहा है कि व्यक्ति सकारात्मक सोच का निर्माण करके अपने सामान्य जीवन क्रम में सुख-शांति और आनंद की अनुभूति कर सकता है। इसी प्रकार तेजस्विता के सूत्र, दिशा बदलो - दशा बदल जायेगी, इन्सान का मार्ग प्रसन्नता, जीवन का घनिष्ठ साथी है पुरुषार्थ, जीवन का मधुमय संगीत : सकारात्मक सोच, पारिवारिक एकता के सूत्र : सेवा और सहयोग, हर स्थिति में संतुलित रहें, पूर्णता का मार्ग : दृढ़ इच्छाशक्ति, कैसे हो उज्जवल भविष्य का निर्माण? विलक्षण है प्रार्थना का प्रभाव आदि पाठ संसारिक मानवों के कल्याण के लिए मार्गदर्शन करते हैं। ये सभी पाठ मानव उत्थान के ऐसे मंत्र हैं, जिसका पारायण करने से त्राण निश्चित है।

'अमृत का झरना' कृति को व्यक्तित्व विकास की गाथा कहना असंगत नहीं होगा, क्योकि व्यक्तित्व विकास की सभी मणियों को एक धागे में यहाँ ऐसा पिरोया गया है जिसको आत्मसात करके हर कोई कृतकृत हो सकता है। लेखिका के अध्ययन का फलक काफी विस्तृत है। विभिन्न धर्मों की कथाओं, संस्मरणों एवं विभिन्न महापुरुषों के जीवंत चरित्र को उद्घाटित कर लेखिका ने अपने कथ्य को अधिक रोचक एवं प्रभावी बनाया है तभी तो पुस्तक की प्रस्तावना में डॉ. मधु धवन ने उल्लेख किया है कि लेखिका ने वैश्विक स्तर के नाना कथा प्रसंगों के माध्यम से भारतीय तथा पाश्चात्य चिंतकों के वक्तव्यों तथा घटनाओं द्वारा अत्यंत रोचक एवं सारगर्भित वस्तुनिष्ठ शैली द्वारा मनुष्य को संस्कार के सही रूप से परिचित कराया है।

सचमुच कथ्य के साथ पुस्तक की भाषा भी अत्यन्त प्रभावी एवं रोचकता से भरपूर है जो पाठकों की जिज्ञासा का वर्धन करती हुई पूरी कृति पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। कुल मिलाकर यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि अमृत का झरना पाठकों को सचमुच अमृत का आस्वादन कराती एक श्रेष्ठ कृति है।

उपनिदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्वभारती संस्थान,
जिला– नागौर, लाडनूं (राज.)

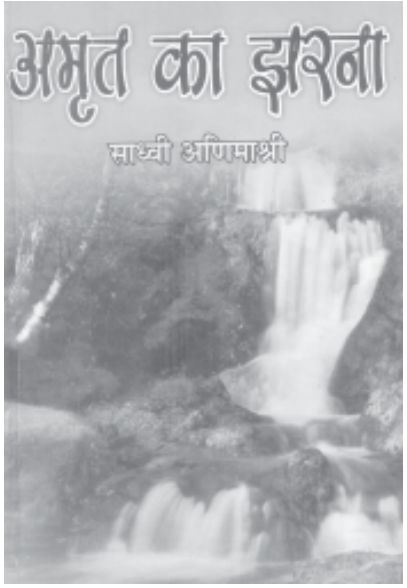

पुस्तक : अमृत का झरना
लेखिका : साधवी अणिमाश्री
पृष्ठ : 116 मूल्य : 60 रुपये
प्रकाशक : आदर्श साहित्य संघ
नई दिल्ली

www.terapanthinfo.com